प्रकाशकीय

असम में १।। वर्ष तक विचरण करने के बाद पूज्य विनोबाजी ने १६ दिन की पूर्व पाकिस्तान की पदयात्रा की। ५ सितम्बर '६२ को आपने असम से पाकिस्तान में प्रवेश किया और २१ सितम्बर '६२ को पश्चिमी बंगाल में। पाकिस्तान-सरकार ने अपने भूभाग में पदयात्रा की अनुमति प्रदान कर बाबा को पाकिस्तानवासियों के बीच प्रेमामृत की वर्षा करने का अवसर दिया। उन्होंने भूदान ग्रामदान के विचार के साथ साथ अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति, पड़ोसी देशों के मैत्री-सम्बन्ध विश्व की हार्दिक एकता धार्मिक समन्वय सहिष्णुता आदि उदात्त और पावन विचारों की गंगा बहायी।

बाबा की इस यात्रा में भारत से उनके साथ पाँच व्यक्ति गये थे : सर्वश्री आशादेवी आर्यनायकम्, महादेवी ताई, कालिन्दी सरवटे, कामदेव और बाल रैंभेकर। श्रीमती आशादेवी ने इस यात्रा-काल में बाबा के विचारों को जन-जन तक पहुँचाने में सेतु का काम किया।

प्रस्तुत पुस्तक के लेखक श्री चारु चौधरी पाकिस्तान में निष्ठापूर्वक सर्वोदय का कार्य कर रहे हैं। इन्होंने और इनके सहयोगियों ने—सर्वश्री मिथुनबिहारी गोस्वामी, विश्वरंजन सेन, मधुसूदन राय, झरना चौधरी, कल्पना, अखिलकुमार दे, रंजनकुमार दत्त, अखिलकुमार गुह आदि ने—यात्रा को सफल बनाने में पर्याप्त श्रम किया।

बाबा के जन्म-दिवस के अवसर पर उनकी पाकिस्तान-यात्रा की यह पुस्तक प्रकाशित करते हुए हमें प्रसन्नता हो रही है। हमारे पाठकों को इससे पाकिस्तान की जनता की भावना की झाँकी तो मिलेगी ही, प्रेरणा भी मिलेगी और पग-पग पर इस बात की अनुभूति होगी कि मनुष्य मनुष्य सब एक हैं उनके बीच की सारी सीमा-रेखाएँ गलत हैं और वे मिटनी चाहिए।

●

अनुक्रम

स्वागत : रस्ता सौंपकर पाकिस्तान में पधारो बाबा !

मुस्गामारी : सार्वजनिक सभा में विनोबा प्रवचन करते हुए

*पहला दिन १ द्वार खुल गया—इफ्तिताह

असम प्रान्त में विदाई-भाषण समाप्त हुआ। विनोबाजी मंच से उतर आये और उन्होंने सोनारहाट में पूर्व पाकिस्तान में प्रवेश किया। एक डोरी का बन्धन खोलकर रंगपुर के डिप्टी कमिश्नर मिस्टर मासूद अली खाँ ने विनोबाजी का स्वागत किया—उनकी प्रेम-यात्रा आरम्भ हुई।

बाबा ने चलते-चलते थोड़ा आगे बढ़कर दो बच्चों के हाथ थाम लिये और उनके हाथ पकड़े-पकड़े वे एक प्रकार से दौड़ चले। मैं बहुत पीछे रह गया था, दौड़कर उनके पास पहुँचा, बोला : "यहाँ सोनारहाट स्कूल के प्रांगण में थोड़ा जाना होगा।" बाबा जाकर वहाँ रुके। वहाँ स्कूल के छात्र और जनता की भीड़ उन्हें घेरकर खड़ी हो गयी। कुछ लोग बैठे भी थे। पूर्व पाकिस्तान में प्रवेश के बाद उन्हींके समक्ष बाबा ने प्रथम भाषण किया। पहले उन्होंने पाकिस्तान आने की अनुमति देने के लिए पाकिस्तान-सरकार का हार्दिक धन्यवाद किया और कहा : "पाकिस्तान-निवासियों के लिए प्रेम और शान्ति की वाणी लेकर ही मैं यहाँ आया हूँ। अभी थोड़ी देर पहले एक भाई ने मुझसे पूछा कि यहाँ मुझे कैसा लग रहा है। मुझे यहाँ आये अभी पाँच मिनट भी नहीं हुए। मैंने उनसे कहा कि इसमें तो कुछ भी पार्थक्य नहीं दीखता—वही हवा, वही मिट्टी, वही मनुष्य और वही हृदय—कुछ भी तो भिन्न नहीं है। भारत के छोटे-छोटे बच्चों और स्त्री-पुरुषों को देखकर मेरा हृदय जिस प्रकार प्रेम और प्रीति से विह्वल हो उठता है, उसी प्रकार यहाँ आप सबको देखकर मेरा हृदय प्रेम और प्रीति से सराबोर हो उठा है। मैं

---

* पहला दिन : सितम्बर—सोनारहाट से पुर्वभामाटी—८ मील।

तो सोचता हूँ कि सम्पूर्ण संसार मेरा है और मैं संसार का सेवक हूँ। मैं क्यों कहता हूँ 'जय जगत्' करता हूँ अर्थात् संसार एक है सब एक हैं।"

कालिन्दी बहन ने अपनी डायरी में लिखा है : "इस सभा में दो बच्चे बैठे थे—बारह-तेरह की अवस्था होगी शरीर पर फटे-पुराने वस्त्र हाथ में लाठी दो राजा की तरह आसन लगाये बैठे थे। कल रात ये दोनों बच्चे साधु बाबा को देखने आये थे। कल भारत के सीमान्त पर इन बच्चों को देखा था—आज देख रही हूँ पाकिस्तानी जनता के साथ बड़े शान्त भाव से साधु बाबा का भाषण सुन रहे हैं। आठ मील का रास्ता—कच्चे-कच्चे रास्ते में हल्की वर्षा हुई। बीच-बीच में बच्चों के हाथ पकड़कर बाबा दौड़ने लगे। एक बच्चा पहले बाबा ने कहा था : 'यही हवा है यही मिट्टी है। बाबा की भावना देखकर बच्चा, इसके साथ ये पद भी जुड़ गये हैं 'यही भला है यही भाषा है।' "

प्रातः साढ़े नौ बजे बाबा मुर्शगामारी पहुँचे—हाईस्कूल में पड़ाव था। उन्होंने स्नान किया। साथियों ने भी जलपान आदि किये। थोड़ा विश्राम करने के बाद ही बाबा ने स्कूल का पुस्तकालय विभिन्न कक्षाओं की पाठ्य पुस्तक आदि देखने की इच्छा प्रकट की। हेडमास्टर साहब ने सब कुछ दिखाया। बाबा कुछ पुस्तकें लाकर बिस्तर पर लेटे-लेटे पढ़ने लगे।

दोपहर साढ़े बारह के लगभग हम भोजन आदि की व्यवस्था कर रहे थे तभी भारत सरकार के ढाका स्थित डिप्टी हाई कमिश्नर श्री एस के चावरी और उनके प्रथम सचिव श्री एस सी घोष बाबा से मुलाकात करने आये। पाकिस्तान में प्रवेश के साथ-साथ बाबा के प्रति भारत सरकार की सद्भावना व्यक्त करना ही उनके आने का उद्देश्य था। उन्होंने साधारण परिचयात्मक एवं औपचारिक बातचीत की। मैंने उनसे भोजन करने का निवेदन किया। थोड़ा भोजन करके दो बजे से पहले ही वे चले गये। कह गये कि विनोबाजी की पूर्व पाकिस्तान-यात्रा के अन्तिम दिनों में वे फिर आयेंगे।

लोगों का जमघट लगा था—कितने लोग दर्शन करने आ रहे थे। बीच-बीच में उन्हें घर से बाहर आकर खड़ा रहना पड़ रहा था। एक दर्शन करके जाता था और दूसरा आ जाता था।

सन्ध्या चार बजे स्कूल के मैदान में प्रार्थना-सभा हुई। प्रायः चार पाँच हजार लोग सभा में इकट्ठे हुए—वह भी बिना किसी विशेष प्रचार के। मानो सम्पूर्ण वातावरण में बाबा के आने का सन्देश तैर रहा हो। सभा में मंच पर खड़े होते ही बाबा ने शामियाना खोल देने के लिए कहा—उन्होंने जनता के साथ उन्मुक्त आकाश के नीचे ही खड़ा होना चाहा। केवल एक माइक था। सभा में बाबा के भाषण से पहले स्थानीय लोगों ने बाबा को एक मान-पत्र दिया। स्कूल के हेडमास्टर साहब ने वह मान-पत्र पढ़ा। बाबा ने हिन्दी में भाषण किया—भाषादी ने साथ-साथ अनुवाद किया। विश्वभाई ने यथासम्भव उसे लिपिबद्ध किया। कालिन्दी बहन और विश्वभाई द्वारा लिये गये नोट से बाबा का भाषण यहाँ उद्धृत किया जा रहा है। सब लोगों ने खूब शान्त भाव से बाबा का भाषण सुना :

"शायद आप जानते हों, पिछले साढ़े ग्यारह साल से मैं पदयात्रा कर रहा हूँ। हवाई जहाज द्वारा यहाँ से करांची पाँच घण्टे में पहुँचा जाता है। तब इस विज्ञान के युग में मैं पदयात्रा क्यों कर रहा हूँ ? मेरा एक विचार चल रहा है। अनेक भाई छोटे-छोटे गाँवों में रहते हैं—वे दुनिया में कहीं नहीं आते-जाते। बाढ़ आने पर वे सभी स्थानों से सम्पर्क-विहीन हो जाते हैं। यदि मैं हवाई जहाज से चलूँ तो उनसे कैसे मिल पाऊँ ? इसलिए मैं पाँव-पाँव चलकर उनके पास पहुँचता हूँ।

"मैंने सम्पूर्ण भारत का भ्रमण किया है—सभी जिलों में नहीं तो सभी प्रदेशों में तो गया ही हूँ। असम से पश्चिम बंगाल जाने की बात उठी, तो मैंने सोचा कि पूर्व पाकिस्तान के दर्शन करता हुआ जाऊँ। इसलिए मैंने पाकिस्तान-सरकार से अनुमति माँगी। सरकार ने कृपा करके अनुमति दी। सरकार ने सोचा कि यह फकीर आदमी तो गरीबों का

सेवक है, गरीबों के दुःख दूर करने की बात करता है—इसलिए सरकार ने मुझे अनुमति दे दी।

आज आप लोगों को देखकर कितनी प्रसन्नता हुई, कह नहीं सकता। जब मैं आ रहा था, मार्ग में था, तब खासी वर्षा हुई थी—वर्षा के हाथ पकड़कर खेलता-खेलता आया। वर्षा से मुझे कोई कष्ट नहीं हुआ। वर्षा की बूँदें मुझे भगवान् का आशीर्वाद-जैसी लगीं और इस तरह वर्षा से मुझे आनन्द मिला। आप लोगों में मैंने भगवान् के दर्शन पाये हैं। बारह वर्षों से मैं इस दर्शन का आनन्द पा रहा हूँ। इस वृद्धावस्था में भी मैं पैदल चल रहा हूँ। मेरा उत्साह घटता नहीं, इसका क्या कारण है? कारण यह है कि मैं दुखियों का दुःख सुखियों के आगे रखता हूँ। सुखी लोगों से मैं कहता हूँ कि दुखियों का दुःख दूर करें। किसी भूखे को भोजन देकर हमें आनन्द मिलता है, किन्तु उसे भूख तो फिर लगेगी। तब उसे फिर भोजन देना होगा। इससे क्या उसकी समस्या का वास्तविक समाधान होगा? नहीं होगा। उसे भोजन पैदा करने का साधन देना होगा। इसलिए मैं सर्वत्र यह बात कह रहा हूँ कि जिन लोगों के पास जमीन है, वे उसका कुछ हिस्सा गरीबों को दे दें। इस तरह मुझे अब तक चालीस लाख एकड़ जमीन मिली है—इस जमीन को भूमिहीनों में बाँटा जा रहा है। इस तरह देकर ही तो आनन्द मिलता है। मैं अपने बचपन की एक बात बताऊँ। मेरे घर के कटहल के पेड़ में कटहल पके थे। माँ के कहने पर इन कटहलों को हमने पहले अपने पड़ोसियों में बाँटा था और फिर स्वयं खाया था। इस तरह खाने से हमें इतना आनन्द मिला था कि उसे याद कर आज भी मन खुशी से भर उठता है। स्वयं खाने से अधिक आनन्द दूसरों को खाना देने में है, वितरण करने में है—यह बात तो कमोबेश सब लोग अनुभव करते ही हैं।

यहाँ पूर्व-पाकिस्तान में जमीन कम है—यह बात कही जाती है। सन् १९ १ की जनगणना में एक वर्गमील में ७७७ लोग थे। अब यह

समस्या और बड़ी है—मान लीजिये, हो गयी है। किन्तु केरल प्रदेश में प्रति वर्गमील १४ लोग हैं। इसके बावजूद मुझे वहाँ बहुत सारी भूमि दान में मिली है।

अपनी कमाई का एक हिस्सा दुखियों का दें

मैं खाली हाथ इस देश में आया हूँ—खाली हाथ ही लौट जाऊँगा। किन्तु यदि पाकिस्तान में भूमि-दान का काम शुरू हो तो लाखों लोगों का कलेजा जुड़ा जाय। मैत्री, प्रेम करुणा दुखियों की सेवा—ये सभी धर्मों का सार है। कुरान में कहा गया है: 'मिम्मा रज़क़्ना हुम युन्फ़िक़ून' यानी अपनी रोज़ी में से थोड़ा दूसरों को दो। वेद में भी कहा गया है 'दानं संविभागः'। अपने सुख भोग का एक भाग दुखियों को दो—यह ईसाई धर्म में कहा गया है। दान की महिमा सभी धर्मों में है। यदि आप भूमि दान करेंगे, तो आपको दाता का पुण्य मिलेगा पानेवाले को सुख मिलेगा और मेरे जैसे फकीर को तृप्ति मिलेगी। भगवान् ने सबको समान बनाया है—कोई ऊँचा नहीं है कोई नीचा नहीं है। धनी-गरीब सब नंगे पैदा हुए हैं—मृत्यु भी नंगी अवस्था में ही होगी। मृत्यु के बाद सब की देह धूल या खाक में बदल जायगी—धनिकों की धूल सोना या चाँदी की नहीं होगी। ईश्वर ने सबको समान रूप में पैदा किया है—उसके लिए सब समान हैं। किन्तु हम भेदभाववश ऊँच-नीच का भाव लाते हैं—कोई धन के अहंकार से अपने को ऊँचा मानता है और कोई जाति के अहंकार से कहता है कि मैं अमुक की छुई हुई चीज नहीं खाऊँगा। ईश्वर को रहमान रहीम कहा जाता है जिसका अर्थ है—दयालु करुणामय। भगवान् यदि दयालु हैं, तो हम किस तरह निष्ठुर हों? हम यदि दूसरों के दुःख पर दया न कर ऊँच नीच का भेद करें तब भगवान् की दया किस तरह पायेंगे? सबको समभाव से प्यार करना सबकी सेवा करना ही वास्तविक धर्म है परम धर्म है—बाकी सब मिथ्या है। पशु ऐसी बात नहीं समझते। हम ऐसा समझते

हैं इसलिए केवल सच बोलेंगे, प्रेम की बात बोलेंगे, भगवान् का नाम बोलेंगे—और कुछ नहीं बोलेंगे।

अब पाँच मिनट आपके साथ भगवान् के नाम का स्मरण करूँगा। यहाँ भाई-बहन बाल-वृद्ध हिन्दू मुसलमान ईसाई, सभी हैं। किन्तु एक बात दुःख की है—भगवान् का नाम लेते समय हम अलग हो जाते हैं। हम अनेक काम एक साथ मिलकर करते हैं, पर भगवान् की प्रार्थना करते समय अलग हो जाते हैं। किन्तु भगवान् क्या ऐसा है कि उसका नाम लेते समय हम अलग हो जायेंगे? अब हम मौन रहकर उसके नाम को याद करेंगे। किस भाषा में उसका नाम लेंगे? भगवान् का नाम कोई संस्कृत में लेता है कोई अरबी में कोई अंग्रेजी में और कोई अन्य भाषा में—हम उसका नाम हृदय की भाषा में लेंगे। मौन होकर हम जो भी भाषा पसन्द हो उसमें उसका नाम लेंगे। उससे क्या माँगेंगे? माँगेंगे—सत्य दो प्रेम दो, करुणा दो। अब मौन प्रार्थना शुरू करें। ॐ शान्तिः! शान्तिः!! शान्तिः!!!"

समस्त जनता मन्त्रमुग्ध-सी शान्त बैठ गयी। सबने बीड़ी-सिगरेट फेंक दी। यह एक अपूर्व दृश्य था। मौन प्रार्थना के अन्त में विनोबाजी ने कहा: 'सबको प्रणाम। जय जगत्।"

शान्त जनता पुनः मुखर हो उठी। कुछ लोग चले गये। नये लोग दर्शनार्थ उपस्थित हुए। विनोबाजी एक बार मैदान के एक छोर से दूसरे छोर तक गये। जनता दर्शन पाकर चली गयी।

प्रार्थना के बाद विनोबाजी घर में आकर बैठे। गाँव के कई विशिष्ट व्यक्ति भी आकर बैठ गये। विनोबाजी ने उनसे कहा कि यदि कोई सज्जन कुरान का पाठ कर सकते हों तो सुनायें। एक सज्जन ने सुनाया—बाबा शान्त चित्त से सुनते रहे। इसके बाद उन्होंने कहा

आपने हमें खिलाया पिलाया हमारी देखभाल की। मैं तो एक दिन का अतिथि हूँ। अतिथि को तो सभी खिलाते हैं। मुझे इस तरह खिला कर आपको विशेष पुण्य नहीं होगा। जो लोग भूमिहीन गरीब हैं उन्हें

यदि आप अपनी भूमि का कुछ अंश दें तो आपको सच्चा पुण्य मिले। उनके लिए कुछ दान कीजिये। आप लोग आपस में सलाह कर लें। जो लोग भूमि-दान करेंगे वे भूमि किसे देंगे यह भी स्वयं ही निश्चित करेंगे। हाँ, पानेवाला अवश्य ही ऐसा हो, जिसके पास जमीन न हो और उसे वह जमीन उत्तराधिकार में प्राप्त न होनेवाली हो।'

पाकिस्तान में प्रथम भूदान

सभी लोग उठ गये। सन्ध्या काल गोधूलि-बेला में हिन्दू-परिवारों में गृहस्वामिनियाँ दीप धूप-सहित गृहदेवता की वन्दना करती हैं। अनेक लोगों का विश्वास है कि इस समय लक्ष्मी घर में आती है। धीरे धीरे सन्ध्या उतर रही थी, मानो लक्ष्मी घर में आ रही हो। बाबा की बात से एक सज्जन की अन्तरात्मा जाग उठी। उन्होंने आकर बताया कि उनके पास कुल चार एकड़ जमीन है घर में पोष्य लोग भी कम हैं फिर भी एक भूमिहीन को वे एक बीघा जमीन का दान करेंगे। इस दान का दानपत्र लिखे जाते समय उन्होंने कहा "नहीं एक बीघा नहीं, एक एकड़ ही लिखिये। एक एकड़ न होने से उसका काम नहीं चलेगा। उसके पास तो रहने को भी जमीन नहीं है।" एक एकड़ का ही दानपत्र लिखा गया। इस दानपत्र में ग्रामकर्ता का नाम लिखा गया—रजिस्ट्रेशन फी के बारह रुपये भी दाता ही देंगे, यह भी लिखा गया और दानपत्र बाबा को अर्पित कर दिया गया। बाबा ने दाता के कंधे पर हाथ रखकर कहा "मैं भगवान से प्रार्थना करूँगा कि वे आपको आशीर्वाद दें।" यह सुनकर दाता की आँखों से अश्रुधारा बह निकली। एक पवित्र दृश्य। एक बार इसका उल्लेख करके बाबा ने मुझसे कहा: "इफ्तिताह—द्वार खुल गया!" आशादी ने कहा। "यह दान भी पोचमपल्ली में प्राप्त प्रथम दान की ही भाँति है। सन् १९५१ के १८ अप्रैल को प्रथम भूदान मिला था—आज ५ सितम्बर को पूर्व पाकिस्तान में प्रथम भूदान मिला। बाबा अब तक भारत में ही भूदान की बात

करते थे। आज भारत की सीमा के बाहर भी भूदान का 'इफ्तिताह'—प्रारम्भ—हुआ।"

इस प्रथम दानपत्र का विशेष मूल्य है। गरीब के प्रति गरीब दाता की सहानुभूति के आँसू से यह पवित्र है। इसलिए इस दानपत्र को यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है :

दाता का नाम—	प्राप्तकर्ता का नाम—
अब्दुल खालिक मुन्शी	मनो घोष,
पिता स्वर्गीय राजमामूद घोष	पिता स्वर्गीय यदु घोष
ग्राम—कामारबाँगरिया	ग्राम—चरमुर्गामारी

मौजा चरमुर्गामारी, थाना मुर्गामारी ख नं १४७६ दक्षिणांश से १ (एक) एकड़ जमीन का निःस्वार्थ दान किया। इसकी रजिस्ट्री के लिए १२ (बारह) रुपये दूँगा।

(हस्ताक्षर) अब्दुल खालिक मुन्शी
१९ माघ १३५९ (बंगला)
८-२-१९५२ (ईस्वी)

•दूसरा दिन २

महिलाओं के प्रति आह्वान
दान में आनन्द

पहले दिन की यात्रा। रात को दो बजे ही उठकर हम सबने तैयारी शुरू कर दी। माल-असबाब बाँध-बूँधकर दो बैलगाड़ियों पर लाद दिया गया। गाँव से बाहर बस इन्तजार कर रही थी। वहाँ से सामान बस में जाना था। निर्मला ने यह भार उठाया। एक सरकारी कर्मचारी पर भी इसका भार था—वे भी थे। ठीक चार बजे बाबा बाहर निकले—दोनों ओर दो लालटेनें लिये हुए जिनके बाबा के दोनों हाथ पकड़कर चलने लगे। १५-२० हाथ आगे कस्म्ना एक लालटेन लेकर पायलट की भाँति रास्ता दिखाती चली। शेष रात के अन्धकार में लालटेन लेकर मार्ग दिखानेवाले पायलट का काम कस्म्ना को ही सौंपा गया था। यात्रा शुरू हुई।

मालिनी बहन ने अपनी डायरी में लिखा है:

"कल सन्ध्या समय बापदा ने बाबा से कहा था कि यात्रा रात साढ़े तीन की बजाय चार बजे आरम्भ की जाय। मैंने सोचा था कि बापदा की बात नहीं मानी जायगी किन्तु बाबा ने इसे सहज ही स्वीकार कर लिया। आज सात मील चलना होगा। छह-सात मील दूर से लोग आते और सारा दिन शिविर के आसपास बैठे रहते। आज एक सज्जन अपने चार वर्ष के बच्चे को लेकर आये थे। वह बच्चा तीन मील पैदल चलकर आया साधु बाबा के दर्शन करने के लिए। रावपेंढ के स्कूल भवन में शिविर लगा। चारों ओर दिन का धूप गरम रहा। स्नान के बाद बाबा विश्राम में पेड़ की छाया में ही बैठे रहे। जनता उन्हें घेरे रही।

दूसरा दिन १ सितम्बर—बुगनामपी से रावपेंड—७ मील।

स्कूल के शिक्षकगण और स्थानीय शिक्षित लोग भी बैठकर बातचीत करते रहे। अपने दल में हम लोग छह व्यक्ति हैं। बाबा, उनके सहकर्मी एवं बन्धुओं की संख्या है दस। वे सब पूर्व पाकिस्तान के गांधीवादी कार्यकर्ता हैं। किन्तु हम लोगों का पूरा दल काफी बड़ा है—सरकारी कर्मचारियों और उनके सिक्युरिटी कर्मचारियों को मिलाकर। प्रायः सभी युवक हैं। उनमें से कुछ ने आज बाबा से मुलाकात की। संवाददाताओं के दल में भी चार-पाँच व्यक्ति हैं। सब युवक हैं।

'एक संवाददाता ने प्रश्न किया : 'आपकी पदयात्रा का उद्देश्य क्या है ?' बाबा ने कहा : 'प्रेम की बात बोलना।' दूसरा प्रश्न हुआ : 'किससे प्रेम की बात बोलना ?' बाबा ने हँसते-हँसते जवाब दिया : 'सबके साथ। मैं तो इन सब पेड़ों के साथ भी प्रेम करता हूँ।' उस पेड़ के नीचे ही बैठकर 'विष्णुसहस्रनाम' का कीर्तन किया गया। फिर बाबा उठकर घर में आ गये।

'मेरी उत्सुकता थी, संध्याकालीन सभा के सम्बन्ध में। कल भूदान की बात हुई है और एक दान भी मिला है। अब उसकी स्थिति क्या है और बाबा क्या बोलते हैं यह जानने के लिए मैं उत्सुक थी। आखिर चार बजा। हम सब सभा-स्थल पर जाकर बैठ गये। देखा, माइक खराब हो गया है—काम नहीं दे रहा है। हजारों लोगों की सभा—माइक के बिना कैसे चलेगा काम ? दर्शनों के लिए आतुर जनता बाबा का सन्देश सुनने आयी थी किन्तु कुछ भी नहीं सुन पा रही थी। कोलाहल शुरू हुआ। कौन करेगा शान्त ?

'बाबा मंच पर से उतर आये। सभा के मध्य-स्थल में आकर खड़े हो गये। आशादी उनके पीछे-पीछे गयीं। सभा के बीच में बाबा—क्षीण ह्रस्व मूर्ति; एक हाथ ऊपर उठाकर, थोड़ी ऊँची आवाज में उन्होंने बोलना शुरू किया। सभा में पूर्णतः शान्ति छा गयी। छोटे बच्चे भी शान्त होकर बैठ गये। माइक का अभाव पूरा हो गया।"

सबेरे बाबा ने स्थानीय लोगों को साथ लेकर गाँव में भूदान का

सन्देश पहुँचाने के लिए कहा था। विस्मयकारी अत्यन्त व्यस्तता के बावजूद निकल पड़े। भूदान के स्रोत से धारा प्रवाहित होने लगी। आज पाँच दान मिले। एक दाता थे स्थानीय यूनियन कौंसिल के चेयरमैन और बाकी चार थे हिन्दू गृहस्थ। भूदान पानेवालों में से दो मुसलमान थे और तीन हिन्दू।

सवेरे से खूब गर्मी पड़ रही थी। लगभग ग्यारह बजे होंगे। मैं नहाने की व्यवस्था कर रहा था तभी अचानक देखा, बाबा अकेले घर से निकल पड़े। इधर उधर देखा—दूर, मैदान के बीच में सूरज की ओर पीठ किये वे चुपचाप आसन जमाये बैठे थे। धीरे-धीरे पास जाकर देखा, आँखें आधी मुँदी हैं—वे ध्यानस्थ हैं। धीरे धीरे जाकर उनके थोड़ा पीछे बैठ गया। लगभग पन्द्रह मिनट बाद वे उठे और मुझे देख कर बोले : आप क्यों आये ? मैंने कहा : "देखा आप अचानक उठकर अकेले जा रहे हैं। इसलिए चला आया।" मेरा हाथ पकड़कर वे धीरे धीरे आये और कुछ एक क्षण बाद ही बाहर जाकर एक पेड़ की छाया में बैठ गये।

शाम को भी एक बार वे मैदान में जाकर उसी प्रकार शान्त ध्यानस्थ बैठ गये। उस समय मैं पास जाकर नहीं बैठा।

सभा में लगभग चार हजार लोग थे। बाबा ने अपने भाषण में कहा :

'आज माइक की सहायता के बिना ही मुझे बोलना होगा। माइक खराब हो गया है। मैं साढ़े ग्यारह साल से भारत में पैदल घूम रहा हूँ। सब जिलों में नहीं तो सब प्रदेशों में तो घूमा ही हूँ। इस बार मैंने पाकिस्तान आना चाहा। सरकार ने कृपापूर्वक मुझे इसकी अनुमति दी। सरकार ने सोचा कि यह आदमी तो फकीर है गरीबों का सेवक है—यह तो प्रेम की ही बात बोलेगा। यही सोचकर उन्होंने अनुमति दी। यह गाँव हालाँकि छोटा है फिर भी बहुत-से लोग सभा में आये हैं। किन्तु दुःख की बात यह है कि महिलाएँ एकदम नहीं आयीं। यदि माँ-बहनें

भी आती, तो जनता दुगुनी होती। कुर्रमपारी में बहनों के कई लोग मेरे पास आकर बैठे थे। उनमें से एक ने मेरे अनुरोध पर कुरान की एक आयत गाकर सुनायी। उन्हीं सज्जन से पूछा : महिलाएँ क्या सभा में नहीं आ सकतीं?" उन्होंने कहा 'पहले से व्यवस्था करने पर आ सकती हैं।' मैं अपनी यह प्रेम की बात महिलाओं को भी सुनाना चाहता हूँ। भगवान् ने उन्हें भी दो कान दिये हैं। शान्ति की बातें, प्रेम की बातें, पुरुषों की भाँति महिलाओं को भी सुननी चाहिए। हमारे साथ भी एक बहन हैं। इनका नाम आशादेवी है—मेरे साथ घूम रही हैं। सारी दुनिया घूम आयी हैं ये। मेरी बातें अनुवाद करके आपको सुना रही हैं। इनकी तरह महिलाएँ भी सभा में आ सकती हैं।

(बाबा ने अपने भाषण में ठेकेदारदाता के प्रश्न और कुर्रमपारी के दान की बातें बतायीं—इस सम्बन्ध में पहले ही उल्लेख किया जा चुका है। कुर्रमपारी के दान का उल्लेख करके उन्होंने कहा :)

"मैंने दाता के कन्धे पर हाथ रखकर कहा : 'मैं अल्लाह से तुम्हारे लिए आशीर्वाद माँगूँगा।' सुनकर उसकी आँखें भर आयीं। मैंने बाद में कहा : 'इब्तिदाए!' यह एक उर्दू शब्द है जिसका अर्थ है—शुरुआत! पहले नदी की धारा बड़ी क्षीण रहती है आगे चलकर बढ़ती है। यह जो भूदान की नदी ने बहना शुरू किया है, वह भी आगे चलकर विशाल हो जा सकती है, बशर्ते कि आप लोग अपने हृदय के द्वार खोल दें।

आज ठाकुर भी एक यूनियन कौंसिल के चेयरमैन आये थे। उन्होंने पाँच बीघा जमीन दी। बाद में दो और सज्जनों ने आकर दान दिये।

मालिक तो ईश्वर है!

भगवान् ने हमें यह मनुष्य-जन्म दिया है। खाना, बीमार पड़ना, मरना यह सब तो पशु-पक्षियों में भी होता है। उन्हें यदि भोजन नहीं

मिलता, तो वे भाग्य होकर भूखे ही रह जाते हैं। वे अपनी इच्छा से कभी रोजा नहीं रखते। किन्तु मनुष्य स्वेच्छा से रोजा रखता है, रोजा रख कर आनन्द पाता है। वह दान करके भी आनन्द पाता है। यह दान-वृत्ति बढ़नी चाहिए। मैं अब और कितने दिन जीवित रहूँगा। जल्दी ही मेरे ६७ वर्ष पूरे हो जायेंगे। आश्चर्य नहीं कि आज रात ही मर जाऊँ। एक दिन तो सबको मरना होगा। तब मालिक कितने दिन तक मालिक रहेगा ? मरते समय यदि जमीन साथ ले जाना सम्भव होता, तो मैं कहता—जमीन भी कायम है और मालिक भी। लेकिन मालिक तो इक्कर है।

"यहाँ कहा जाता है कि जमीन कम है और लोग ज्यादा हैं। इस देश में प्रति वर्गमील ९   लोग रहते हैं। किन्तु केरल प्रदेश में प्रति वर्गमील १४   लोग रहते हैं। वहाँ भी मुझे हजारों दानपत्र मिले, क्योंकि लोगों के हृदय बड़े थे। यदि किसीके घर पाँच व्यक्ति हों और भोजन चार व्यक्तियों के लायक हो तो क्या चार व्यक्ति सब कुछ खा पीकर पाँचवें व्यक्ति से कहेंगे : 'तुम्हारे लिए भोजन नहीं है; जब अधिक भोजन की व्यवस्था होगी तब तुम्हें भोजन मिलेगा ?' ऐसा कभी नहीं कहा जायगा। सब लोग बाँटकर खायेंगे। इसे ही कहते हैं—दानधर्म; यही सच्चा मनुष्यत्व है असली धर्म है। अब अधिक नहीं बोलूँगा। हम अब पाँच मिनट एक काम करेंगे। सब लोग एक साथ भगवान् का नाम लेंगे। भगवान् का नाम लेते समय हम अलग-अलग हो जाते हैं। हम लोग बहुत-से काम एक साथ कर सकते हैं—बाजार में, ट्रेन में एक साथ बैठ सकते हैं, केवल भगवान् का नाम एक साथ नहीं ले सकते —उस भगवान् का नाम, जिसकी हम सब सन्तान हैं। 'हम सब प्रार्थना करेंगे हृदय की भाषा में इसमें सभी भाषाएँ एक हो जायेंगी—शिक्षित अशिक्षित, धनी-गरीब स्त्री पुरुष शिशु-वृद्ध, हिन्दू-मुसलमान सबकी एक भाषा हो जायगी। हम लोग भगवान् से क्या प्रार्थना करेंगे ? जमीन धन दौलत आदि नहीं माँगेंगे हम। हम कहेंगे : सब दो प्रेम दो करुणा दो

—सब प्रेम करना !” बोलकर हाथ उठा सस्वर फातिहा का पाठ करने के उपरान्त उन्होंने कहा : “शान्तिः ! शान्तिः !! शान्तिः !!!”

जनता स्तब्ध रह गयी शान्त हो गयी। कुछ देर मौन रहने के बाद विनोबाजी ने सबको प्रणाम करके 'जय जगत्' कहा और चले आये। सभा समाप्त होने के बाद पाँच बजे के बाद, भी लोग आते थे। उन्होंने कहा कि उन्होंने सुना था कि सभा सन्ध्या चार बजे से आरम्भ होकर रात दस बजे तक चलेगी। इसीलिए दिन का काम-काज समाप्त करने के बाद वे आराम से बाबा को देखने उनकी बातें सुनने आये थे। सभा के अन्त में बाबा मैदान के एक किनारे, एक पेड़ की छाया में चुपचाप बैठे थे—साथ में थे, [illegible]। कुछ देर बाद मैंने वहाँ जाकर कहा : “दो तीन हजार और लोग आये हैं। इन्हें दर्शन देकर इनसे कुछ कहना होगा।” बाबा हँस पड़े। इस बीच वे 'गीता-प्रवचन' पर बंगला में हस्ताक्षर कर रहे थे।

लगभग साढ़े पाँच बजे वे पुनः जनता के सामने जाकर खड़े हुए और उन्होंने पुनः एक छोटा-मोटा भाषण किया। उनके दूसरे भाषण का सारांश यह था :

“आज तीन दान मिले। मैं तो कुछ साथी लेकर प्रतिदिन गाँव गाँव घूम रहा हूँ—एक गाँव में सिर्फ एक दिन ठहरता हूँ। मैं तो आप सबको पहचानता नहीं जानता नहीं, आप लोगों की भाषा भी नहीं बोल पाता। यदि मैं आप लोगों की भाषा बोल पाता तो स्वयं ही आप लोगों के घर जा-जाकर प्रेम-सहित अपनी बातें आपको समझा देता। यदि स्थानीय लोग मेरी बात आप लोगों को समझाकर भूदान-संग्रह की कोशिश करते तो मुझे विश्वास है आज बीस दान मिलते।”

बाबा दूसरी बार भाषण करने के बाद घर में जाकर बैठ गये। उस समय दो और दान मिले। पहले ही उल्लेख किया जा चुका है कि आज पाँच दान मिले। बाबा ने 'गीता प्रवचन' की अनेक प्रतियों पर हस्ताक्षर किये।

●

*तीसरा दिन 3 ग्राम-निर्माण—शक्ति का उत्स

कालिन्दी बहन की डायरी में लिखा है "आज छह मील के रास्ते का वातावरण बड़ा सुन्दर था। दोनों ओर धान के खेत बीच-बीच में पाट के खेत। पेड़ों में से पक्षियों की मधुर चहचहाहट आ रही थी—बड़ा हृदयोल्लासक वातावरण था। 'राजवैद्य छिपे बैठे थे। 'राजवैद्य कौन ?—बाबा कहानी कह रहे थे 'बच्चा बीमार था। अनेक चिकित्सकों की दवाएँ खिलायी जा चुकी थीं लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ था। अन्त में बच्चे के पिता ने बच्चे से कहा : बेटे, आज राजवैद्य आयेंगे, वे तुम्हें देखेंगे तब तुम ठीक हो जाओगे।' राजवैद्य के स्वागत के लिए घर-द्वार साफ किया गया। बच्चे को भी साफ-सुथरा किया गया। घर के सब द्वार-खिड़कियाँ खोल दी गयीं। धीरे-धीरे सूर्यनारायण का उदय हुआ—घर में प्रकाश ने प्रवेश किया; चारों ओर उजाला फैल गया। बच्चे के पिता ने कहा : बेटे देख ये राजवैद्य तुम्हें देखने आये हैं। इसके बाद बच्चा चंगा होने लगा—चंगा हो गया। बाबा ने आकाश की ओर देखकर कहा : 'ये राजवैद्य आज ऊपर उठकर भी मेघों की छाया से बाहर नहीं आ रहे हैं।"

अध्यात्म क्या है ?

आशादेवी के साथ चर्चा चल रही थी—अध्यात्म क्या है ? बाबा ने कहा कि एक बार गौरा के साथ इस विषय में चर्चा हुई थी उसके प्रश्न के उत्तर में। अध्यात्म में ये पाँच बातें निहित होती हैं। वे हिन्दी

* तीसरा दिन, * मिलमार—रानीगंज से बासेकरा—९ मील।

अंग्रेजी मिलाकर बोल रहे थे—यहाँ अंग्रेजी शब्दों का ज्यों-का-त्यों उद्धृत कर रहा हूँ—

(१) Faith in absolute moral values
परिशुद्ध नीति पर विश्वास ।

(२) Sanctity and unity of life
जीवन की पवित्रता और एकता, अर्थात् सभी जीवन एक और पवित्र हैं ।

(३) Continuity of life after death
मृत्यु के बाद भी जीवन की अविच्छिन्नता अर्थात् मृत्यु के बाद भी जीवन रहता है ।

(४) Faith that there is an order in the world.
जगत् में एक नियम चल रहा है, इस बात में विश्वास ।

(५) कर्म का फल अटल है । (यह बात उन्होंने हिन्दी में ही कही ।)

पूर्णेन्दुदा ने चलते-चलते एक बार प्रश्न किया : "भगवान् के एक ही नाम का चिन्तन करना क्या अच्छा नहीं है ? भगवान् को विविध नामों से स्मरण करने से क्या एकाग्र चिन्तन में बाधा नहीं पड़ती ?" बाबा ने कहा : "भगवान् को विविध नामों से स्मरण करने का अर्थ है, उसके विविध गुणों का स्मरण । यदि स्मरणकर्ता में किसी गुण का विशेष अभाव हो तो इससे उस गुण के अर्जन और विकास में सहायता मिलती है—जैसे किसीके स्वभाव में निर्दयता प्रबल रहती है, भगवान् को दयामय नाम से याद करने पर उसका निर्दयता का भाव कम हो जायगा ।

मार्ग में स्वागत करनेवाले लोग बीच-बीच में नारे लगा रहे थे—पाकिस्तान जिन्दाबाद जय जगत् । पहले दिन ही रास्ते में आवाज सुनी है—जय जगत् । बाबा एकदम चकित रह गये, बोले "देखो, मैं जय जगत् की बात समझाता हूँ । यह सीखने की चीज है, सिखाने की नहीं । मैं मार्ग में ध्वनि पाता हूँ ।

पहले उल्लेख करना भूल गया हूँ कि बाबा चलते-चलते एक बार पाँच बजे जलपान करते हैं और छह-सवा छह बजे तक ही जाते हैं। उस समय वे रुक जाते हैं। प्रातःकालीन प्रार्थना भी यात्रा आरम्भ होने के कुछ देर बाद ही होती है। ईशोपनिषद् के श्लोकों का पदपाठ होता है अर्थात् सन्धि-भंग करके प्रत्येक शब्द का अलग-अलग एक सुर देकर उच्चारण किया जाता है। उसके बाद नाममाला और एकादश व्रत का सस्वर उच्चारण होता है। नाममाला और एकादश व्रत यहाँ दिये जा रहे हैं।

नाममाला

ॐ तत्सत् श्रीनारायण तू, पुरुषोत्तम गुरु तू।
सिद्ध-बुद्ध तू, स्कन्द विनायक, सविता पावक तू॥
ब्रह्म मज़्द तू, यह्व-शक्ति तू, ईसु-पिता प्रभु तू।
रुद्र-विष्णु तू, राम-कृष्ण तू, रहीम ताओ तू॥
वासुदेव गो विश्वरूप तू, चिदानन्द हरि तू।
अद्वितीय तू, अकाल निर्भय, आत्मलिंग शिव तू॥

एकादश व्रत

अहिंसा सत्य अस्तेय ब्रह्मचर्य असंग्रह।
शरीर-श्रम अस्वाद सर्वत्र भय-वर्जन॥
सर्वधर्मसमानत्व, स्वदेशी स्पर्श-भावना।
विनम्र व्रत-निष्ठा से, ये एकादश सेव्य हैं॥

सात बजे से कुछ पहले ही हम नागेश्वरी पहुँच गये। हाईस्कूल में शिविर था। पहुँचते ही बाबा ने उपस्थित जनता को सम्बोधित कर कुछ कहा। यहाँ जनता कुछ अधिक ही थी मानो पहले से एकत्रित होगी। प्रायः सात-आठ सौ लोग थे। बाबा ने पिछले दो दिनों में भूदान का विचार लोगों के सामने रखा था। आज उन्होंने एक नया विचार उपस्थित किया। बाबा ने जनता को लक्ष्य कर कहा

"आज पाकिस्तान में मेरा तीसरा दिन है। कोई-कोई सज्जन पूछते हैं कि मैं यहाँ क्यों आया हूँ। मैं कहता हूँ मैं प्रेम के लिए आया हूँ—

प्रेम लेने और प्रेम देने। इसी उद्देश्य से साढ़े ग्यारह वर्ष से मेरी यात्रा चल रही है—मृत्यु-पर्यन्त चलती रहेगी।

विज्ञान का युग : ग्राम-निर्माण

"वर्तमान युग विज्ञान का युग है। विज्ञान की सहायता से देश के लोग शक्तिशाली हो सकते हैं। किन्तु देश कब शक्तिशाली होता है? जब गाँव शक्तिशाली होता है। गाँव ही देश का आधार है। गाँव है पहली मंजिल; गाँव के बाद जिला है दूसरी मंजिल, जिला के ऊपर प्रदेश है तीसरी मंजिल उसके ऊपर देश है चौथी मंजिल। इन्हीं चार मंजिलों से देश बनता है। यह मायेस्वरी गाँव सबसे नीचे की मंजिल है; दूसरी मंजिल है रंगपुर; तीसरी मंजिल है ढाका और चौथी मंजिल है कराची। यदि किसी इमारत की नीचे की मंजिल मजबूत न होकर दुर्बल हो तो ऊपर की मंजिल टिकेगी किस तरह? इसलिए नीचे की मंजिल को—गाँव को—मजबूत बनाना होगा। ग्रामवासी यदि अच्छा भोजन न पायें बच्चों को खाने के लिए यदि दूध मक्खन न मिले, सब लोग यदि दुर्बल हों गाँव के गाय-बैल यदि ठीक भोजन न मिलने से दुर्बल हों तो फसल कम होगी—फिर रंगपुर, ढाका या कराची को भोजन कहाँ से मिलेगा? इसलिए नीचे की मंजिल को मजबूत बनाना होगा। मैं कहता हूँ कि वास्तविक गाँव नहीं है—सिर्फ कुछ घरों की समष्टि है। जब ग्रामवासी सामूहिक शक्ति और पूँजी का निर्माण करेंगे, तभी वास्तविक गाँव की सृष्टि होगी। ढाका राजधानी है तो इधर पूर्व पाकिस्तान है—उधर कराची है तो पश्चिम पाकिस्तान है; किन्तु इधर केवल घरों की समष्टि है गाँव कहीं नहीं है। आप कहेंगे कि पाकिस्तान में लगभग डेढ़ लाख गाँव हैं किन्तु मैं कहता हूँ कि मैं गाँव कहीं नहीं देख रहा हूँ—देख रहा हूँ केवल घर। गाँव में जब सबकी शक्ति एकत्र होगी तभी उसे वास्तविक गाँव कहा जायगा। अब भी उस तरह के किसी गाँव की सृष्टि नहीं की गयी है। यदि वास्तविक गाँव होते तो बेटे-बेटी के

विवाह के समय किसीको विपन्न होकर कर्ज न लेना पड़ता। मान लीजिये, एक छोटा-सा गाँव है जिसमें चार घरों में शादियाँ होनी हैं—निस्सन्देह अलग-अलग होंगी शादियाँ। किन्तु गाँव की सृष्टि हो जाने के बाद एक दिन में ही चार शादियाँ हो सकेंगी—इसमें खर्च कम होगा, कर्ज नहीं करना पड़ेगा और आनन्द अधिक मिलेगा। हिन्दू-घर की और मुसलमान घर की भी शादियाँ एक साथ हो सकती हैं, बशर्ते कि परस्पर प्रेम हो। इस तरह गाँव का निर्माण होने से समग्र गाँव एक परिवार हो जायगा—शक्तिशाली बन जायगा।

'भारत के डिप्टी हाई कमिश्नर मुझसे मिलने के लिए ढाका से आये थे। उन्हें आने में २४ घण्टे लगे थे। पहले वे हवाई जहाज पर चढ़े, फिर ट्रेन पर, फिर नाव पर, फिर मोटर पर और अन्त में कुछ दूर पैदल चलकर वे मेरे पास पहुँच सके। ऐसे कई गाँव हैं जहाँ तक पैदल चले बिना नहीं पहुँचा जा सकता। इसलिए पैदल चलकर मैं छोटे-से छोटे गाँव को भी देख पाता हूँ—बीच-बीच में बड़े गाँव और शहर भी देख लेता हूँ।

"कोई कहता है : 'बाबा बड़े विद्वान् हैं। उनकी बात क्या समझ में आती है ? किन्तु मेरा विश्वास है कि मेरी बात सब लोग आसानी से समझते—यहाँ तक कि यहाँ जो छोटे बच्चे बैठे हैं वे भी समझ रहे हैं।

'मुक्तागाछा में पहले दिन एक मुसलमान युवक ने अपनी चार एकड़ जमीन में से एक एकड़ का दान किया। वह जमीन मिलेगी किसे, यह भी उसने तय कर दिया। दूसरे दिन शायगंज में गाँव वालों ने भूमि का दान किया। भारत में अब तक ४ लाख एकड़ जमीन दान में मिली है। उसमें १ लाख एकड़ का वितरण किया जा चुका है और बाकी का किया जा रहा है। भारत की तरह यहाँ भी सुखी और दुःखी दोनों तरह के लोग हैं। मुझे विश्वास है कि यहाँ भी भूमिधारी का हृदय

शुरू आयगा। नदी अपने उद्गम-स्थल पर बड़ी पतली रहती है और धीरे धीरे बड़ा आकार प्राप्त करती है। उसी तरह प्रेम-नदी की जो धारा अब छोटे आकार में शुरू हुई है, उसे आप बड़ा रूप दे दें। मैं थोड़े दिनों के लिए यहाँ आया हूँ। जितने भी दिन यहाँ रहूँगा प्रेम की नदी बहाऊँगा। बाद में क्या होगा यह मैं नहीं सोचता। नदी जब बहती है तब क्या यह सोचती है कि किस तरह बड़ी होऊँगी—वह क्षीण धारा लिये अपनी गति से बहती रहती है। बाद में अलग-अलग दिशाओं से अलग-अलग धाराएँ आकर उसमें मिलती हैं। इस तरह विस्तृत होते-होते और गति बढ़ते बढ़ते वह विशाल आकार धारण कर लेती है। उसी प्रकार यह जो प्रेम की नदी शुरू हुई यह बड़ी हो सकती है यहाँ तक कि बाढ़ आ सकती है। बाढ़ आवे। कारण, इस बाढ़ से किसीको नुकसान नहीं पहुँचेगा सबको लाभ ही होगा।"
बच्चों को सम्बोधित करके विनोबाजी ने कहा :

"तुम लोगों ने तो मेरी सारी बात समझी है—क्यों? यह भूमि-दान की बात घर जाकर माँ से कहोगे न? कहना कि एक बाबा ने गरीबों के लिए भूमि माँगी है। तब माँ कहेगी : बेटे, तुम्हारे ही लिए तो जमीन रखी है। तब तुम माँ से कहना : 'गरीबों के घर भी तो हम लोगों की तरह बच्चे हैं। वे हमारे साथ खेलते हैं। उनका दुःख दूर करना होगा और उनके लिए इस बाबा को थोड़ी जमीन देनी होगी।' किन्तु मैं जमीन लेकर क्या करूँगा—खाली हाथ ही आया हूँ खाली हाथ ही जाऊँगा। मेरे हाथ में ४ लाख एकड़ जमीन आयी है, लेकिन देखो, मेरे हाथ में जरा भी मिट्टी नहीं है। तुम छोटे-छोटे बच्चे ही मेरे प्रचारक होगे। तुममें से जो-जो लोग अपनी माँ से मेरी बात कहोगे वे हाथ उठावें।" (सभी बच्चों ने हाथ उठाया—दो-तीन उत्साही बच्चों ने तो दोनों हाथ उठा दिये।)

उस दिन अच्छी हवा थी। एक बार देखा बाबा चुपचाप घर में गये हैं। हवा में ठंडक हो गया था—मैं जाकर पास बैठ गया। उस

दिन बड़ी देर तक वे जगते थे। लगभग ४५ मिनट उनके पास बैठकर मैंने अनेक विषयों पर उनसे बातचीत की।

उसी दिन उन्होंने हम कुछ कार्यकर्ताओं का जो साथ चल रहे थे, परिचय प्राप्त किया। दोपहर में विष्णुसहस्रनाम के पाठ के उपरान्त उन्होंने एक एक कर सबके बारे में पूछा। कौन कहाँ रहता है क्या करता है—यह सब उन्होंने पूछा। स्कूल के सामने सुन्दर तालाब था इसलिए हवा गर्म नहीं लग रही थी।

आज भी प्रार्थना-सभा के समय माइक में गड़बड़ी हुई—जो माइक साथ चल रहा था वह खराब हो गया। बाबा आकर भीड़ के बीच खड़े हो गये। जगह कम थी, फिर भी लोगों की भीड़ काफी थी—लगभग नौ-दस हजार लोग थे। बाबा ने भाषण शुरू किया पर स्थानाभाव और जनता का दबाव अधिक होने के कारण लोग शान्त नहीं हो पा रहे थे। अतः तुरन्त एक स्थानीय माइक की व्यवस्था हुई। माइक लग गया तो मैंने माइक पकड़कर ही बाबा से मंच पर चले आने का अनुरोध किया। वे आश्चर्य के साथ मंच पर आकर खड़े हो गये। फिर उन्होंने भाषण आरम्भ किया

"आज मेरी पूर्व पाकिस्तान-यात्रा का तीसरा दिन है। आज अनेक लोग आये हैं। सबमें खूब आनंद और उत्साह देख रहा हूँ। कारण, लोग जान गये हैं कि एक भूमिवाला बाबा आया है। बात सही है। पिछले साढ़े ग्यारह वर्षों से यह बाबा पैदल घूम घूमकर भिक्षा माँग रहा है। मैं भारत के सभी जिलों में तो नहीं गया पर सभी प्रदेशों में गया हूँ। इस बार पाकिस्तान में पहली बार प्रवेश किया। पाकिस्तान-सरकार ने कृपापूर्वक मुझे इसकी अनुमति दी है।

"छात्रों के साथ बातचीत कर रहा था। उनसे मैंने पूछा : 'तुम्हें कौन-कौनसे विषय पढ़ने में अच्छे लगते हैं? उन्होंने कहा : विज्ञान और गणित ये दो विषय हमें अच्छे नहीं लगते। किन्तु विज्ञान अच्छा न लगने से देश की प्रगति किस तरह होगी?

ईश्वर के आदेश से घूम रहा हूँ

"भारत में ४ लाख एकड़ भूमि दान में मिली है। बाबा जो यह घूम रहा है वह किसकी शक्ति से? भगवान् की शक्ति से। सबमें ईश्वर है—छोटे बच्चों में भी है। वे विराट हैं, किन्तु प्रकट होते हैं अत्यन्त छोटे स्थान में। यहाँ एक काजी साहब ने मेरे अनुरोध पर कुरान का पाठ किया। उसमें है—'अल्लाहु नूरुस समावाति वल् अर्द' यानी अल्लाह धरती-आकाश का प्रकाश है। छोटा-सा दीपक घर के एक कोने में रहता है किन्तु सारा घर आलोकित हो उठता है। उसी प्रकार ईश्वर छोटे से हृदय में रहते हैं किन्तु उनका प्रकाश सर्वत्र फैलता है। वे सर्वत्र प्रकाशित होते हैं। भगवान् पर इस तरह श्रद्धा रखकर मैं यहाँ आया हूँ। साढ़े ग्यारह वर्ष पहले हैदराबाद के तेलंगाना में गया था। वहाँ कम्युनिस्टों ने बड़ा जुल्म ढा रखा था—सरकार भी उन पर जुल्म कर रही थी। मैं वहाँ पैदल ही गया था। गरीबों के एक गाँव में एक सभा में मैंने पूछा कि उन्हें किस चीज की कमी है। उन्होंने कहा: 'हमें काम करने का अवसर नहीं मिलता। हमें जमीन की जरूरत है। जमीन मिलने पर हम उसमें कमा-खा सकते हैं।' मैंने सोचा कि मुझे जमीन कहाँ मिलेगी। सभा में तब तक गाँव के छोटे-बड़े अनेक लोग आ गये थे। मैंने सभा में ही जमीन की माँग पेश की। एक भाई उठकर खड़े हुए और लोगों को जितनी जमीन की जरूरत थी उससे भी अधिक जमीन उन्होंने दे दी। उस रात मुझे नींद नहीं आयी। मैंने भगवान् से पूछा: 'यह किस बात का इशारा है? मैं क्या जमीन माँगना जारी रखूँ?' भगवान् ने जवाब दिया: 'हाँ, तुम माँगते रहो। मिले या न मिले तुम माँगते रहो।' बस, मैं सब काम छोड़कर तब से जमीन माँगता फिर रहा हूँ। तेलंगाना में दो महीने के अन्दर मुझे १२ हजार एकड़ जमीन मिली। अब प्रश्न यह है कि पूर्व पाकिस्तान में तो जमीन कम है। पर मैं तो देखता हूँ चारों ओर जमीन है और ऊपर

श्रीकाकुल—समान एक ही दृश्य है। यहाँ प्रति वर्गमील अनुमानतः ९ लोग रहते हैं किन्तु बंगाल प्रदेश में १४ लोग रहते हैं। यहाँ भी मुझे बहुत जमीन मिली है। यहाँ पहले ही दिन एक मुसलमान युवक ने अपनी कुल चार एकड़ जमीन में से एक एकड़ दान में दे दी। मैंने उसके कन्धे पर हाथ रखकर कहा: 'ईश्वर से तुम्हारे लिए दुआ माँगूँगा।' तब उसकी आँखें भर आयीं। दूसरे दिन पाँच दान मिले। बड़ी नदी के भी उद्गम-स्थल पर धारा पतली रहती है—वह धीरे-धीरे ही बड़ा रूप ग्रहण करती है। एक सज्जन ने पूछा कि मैं तो सिर्फ १६ दिन यहाँ रहूँगा; उसके बाद क्या होगा? मैंने कहा: 'जितने दिन भी मैं यहाँ हूँ, प्रेम-विस्तार का काम करूँगा। एक एकड़ जमीन का क्या अर्थ है? एक व्यक्ति के सम्पूर्ण जीवन की जीविका का साधन। एक ६० वर्ष के व्यक्ति से मैंने पूछा कि उनके जीवन में सन्तोष तो है? उन्होंने कहा कि सारा जीवन अथक परिश्रम करके उन्होंने अपने बच्चों के लिए पाँच एकड़ जमीन खरीद ली है इसलिए उनके जीवन में सन्तोष आया है। ४ लाख एकड़ जमीन की बात जाने दीजिये। भारत में इस लाख एकड़ जमीन का वितरण हो चुका है उसका अर्थ है कि दस लाख व्यक्तियों के जीवनभर के लिए भरण-पोषण का प्रबन्ध हो गया। मैं कुछ दिनों के लिए पाकिस्तान में घूम रहा हूँ। यदि यहीं मेरी मृत्यु हो जाय तब भी मेरे मन को पूरी शान्ति मिलेगी। तीन दिन से मैं पाकिस्तान की धरती पर हूँ—उसके पानी, हवा और भोजन का सेवन कर रहा हूँ। अब यदि यहाँ देहान्त हो जाय तो मैं अपने को कृतार्थ समझूँगा। साथियों से मैंने कहा है कि मेरी अस्थियाँ यहीं की मिट्टी में मिल जायँ। मेरी यह कामना नहीं है कि मेरी अस्थियाँ भारत ले जायी जायँ। अब तक मुझे यहाँ का दानरस मिले हैं—अभी और यहाँ मेरे जीवन का अन्त हो जाने से मेरे मन में शान्ति ही रहेगी। कारण यहाँ इतनी विराट् जनता को अपनी सेवाएँ अर्पित करने का सुयोग मुझे मिला है। मैं भारत और इस देश के बीच कोई भेद अनुभव नहीं करता।

इस देश में जो पानी, मिट्टी, आकाश और मनुष्य हैं, वही भारत में भी हैं। सभी देशों में सभी व्यक्तियों भगवान् की सृष्टि हैं। जहाँ भगवान् की स्थान है वहीं प्रेम और करुणा है ऐसा मेरा विश्वास है।

दान की महिमा

"इस देश के जो मुसलमान हैं वे कुरान के प्रेमी हैं; जो हिन्दू हैं वे गीता के प्रेमी हैं और जो ईसाई हैं वे बाइबिल के प्रेमी हैं। सभी धर्मों में दान की महिमा बतायी गयी है। कुरान के शुरू में ही है : 'मिम्मा रजक्ना हुम युन्फिकून' यानी अल्लाह ने जो रोजी दी है उसमें से तुम गरीबों के लिए खर्च करो। हिन्दू-धर्म में है : 'दानं संविभागः' अर्थात् दान करके, ठीक हिस्सा बाँटकर खाओ। बाइबिल में है : 'पड़ोसी को अपनी तरह प्यार करो'। कुरान में मुसलमान का यह लक्षण बताया गया है कि वह अपने उपार्जन से गरीब को दान करेगा। भारत के केरल प्रदेश में ईसाइयों ने भूमि-दान किया है। उन्होंने कहा कि मैं ईसाई-धर्म की शिक्षा की ही बात कहता हूँ। काशी के पास सारनाथ गया था वहाँ बौद्धों ने कहा कि मैं गौतम बुद्ध की शिक्षा की ही बात कहता हूँ। पंजाब में सिक्खों ने कहा कि गुरु नानक की भी यही शिक्षा है। अतः हिन्दू मुसलमान ईसाई बौद्ध सिख सभी धर्मों की एक ही शिक्षा है और वह है—सबको प्यार करो और गरीबों को सहायता पहुँचाओ।

"मुझे विश्वास है कि इस देश में भी खूब भूदान होगा। किन्तु इसके लिए सबको उत्साही और उद्यमी होना होगा। सबके घर में यह वाणी पहुँचा देनी होगी। मैं तो आप सबको अलग-अलग नहीं पहचानता नहीं मेरे पास समय भी कम है; मैं आप लोगों की भाषा भी नहीं बोल सकता अन्यथा मैं स्वयं ही आप लोगों के घर जा-जाकर यह भूदान की वाणी, प्रेम की वाणी पहुँचा देता। आप लोग, यहाँ के रहनेवाले, ही यदि इसकी चेष्टा करें तो काम होगा।

सूद लेने का निषेध

'सभी लोग चाहते हैं कि हमारा देश बड़ा हो, शक्तिशाली हो, किन्तु देश शक्तिशाली तभी होगा, जब गाँव शक्तिशाली होगा। गाँववाले यदि दूध-मक्खन न खायें, गाय-बैल यदि उचित खुराक न पायें, तो जमीन में फसल किस तरह होगी? यदि फसल अच्छी न होगी, तो देश शक्तिशाली किस तरह होगा? इसलिए सभी गाँवों को एक होना होगा—एक मन, एक हृदय और एक परिवार होना होगा। सभी भेद विवाद दूर करने होंगे। जाति-भेद, धर्म-भेद, भाषा-भेद, ये सब झगड़े दूर करने होंगे। विभिन्न धर्मग्रन्थों के बीच कोई झगड़ा नहीं है—हम सबने ही झगड़ा बनाते हैं और धर्मग्रन्थों का नाम लेते हैं। कुरान में है: इन् कुन् तुम् वरैना राजेऊन अर्थात् तुम सब मेरे पास आओगे। गीता में है: 'मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः।'

'सभी धर्मों में, विशेषकर कुरान में सूद लेना निषिद्ध है। किन्तु यह निषेध कौन मानता है। आजकल तो सरकार भी सूद लेती है—यह सूद लेना गरीबों का शोषण करना है—सूद लेना उचित नहीं है। जमीन सबकी होनी चाहिए और घर-घर में चरखा आदि कुटीर उद्योगों का प्रचलन हो, गाँवों में विराट वस्त्र-उद्योग स्थापित हो—तभी गाँवों में विराट् सम्पत्ति की सृष्टि होगी। वर्षा का जल बूँद-बूँद करके गिरता है किन्तु सर्वत्र व्यापक रूप से गिरने के कारण विशाल जल-राशि की सृष्टि होती है; उसी तरह घर-घर में चरखा चलने से वस्त्र उद्योग की विराट सम्पत्ति घर-घर में फैल जायगी। रात साढ़े सात बजे मैं सो जाता हूँ—फिर रात १ बजे उठकर सुबह ४ बजे यहाँ से रवाना हो जाऊँगा। इसलिए मेरे सोने से पहले आप को कुछ दे रहा हूँ। आज केवल कुछ बातें कह रहा हूँ—बाद में धीरे धीरे और भी कहूँगा। आज की बात यह है कि सबकी ओर से दान मिलना चाहिए, सब भेद दूर होने चाहिए, सूद नहीं लिया जाना चाहिए, घर-घर में चरखा चलना चाहिए। तभी गाँव सुखी होंगे, मजबूत होंगे।"

इसके बाद मौन प्रार्थना करके सभा समाप्त हुई ।

राजघाट में जिस तरह बाबा ध्यानस्थ होकर मैदान के बीच में बैठे थे उसी तरह यहाँ भी एक बार स्कूल के तालाब के एक कोने में बड़ी देर तक ध्यानस्थ बैठे थे । लोग दूर से उस ध्यान-मूर्ति को देखते रहे । रात साढ़े सात बजे वे नियमानुसार सो गये । उससे पहले ही एक दानपत्र मिला । ●

*चौथा दिन ४ स्वामित्व-अधिकार ईश्वर की इच्छा के विरुद्ध

नियमानुसार चार बजे यात्रा आरम्भ हुई। सामान आदि उठाने के चक्कर में मैं थोड़ा पीछे रह गया—बाद में अन्धकार में जल्दी-जल्दी चलकर बाबा के पास पहुँचा। कालिन्दी बहन ने अपनी डायरी में लिखा है : "मार्ग के अन्धकार में कोई खड़ा था। बाबा को देखकर सामने आया। उसके हाथ में पानी से भरी एक बोतल थी। उसने बाबा का मार्ग रोककर कहा : 'मेरा बच्चा बीमार है, बहुत दवा की गयी, पर अच्छा नहीं हो रहा है। आप मन्त्र पढ़कर इस जल को पवित्र कर दें, तो मेरा बच्चा चंगा हो जाय।' बाबा ने उसका हाथ थामकर कहा : 'अल्लाह पर श्रद्धा है तो ! तब तुम्हारा बच्चा अवश्य अच्छा हो जायगा।' वह व्यक्ति सलाम करके चला गया। मेरे मन में ईसामसीह की बात आ रही है—रास्ते में रोगी लोग उनसे मिलते थे और उनका स्पर्श पाकर रोग-मुक्त हो जाते थे। भगवान् जाने वह व्यक्ति बाबा की प्रतीक्षा में कितनी देर से खड़ा था। उसने सुना होगा कि भारत से एक फकीर आये हैं और इस राह से होकर गुजरेंगे। इसीलिए वह मार्ग में आकर खड़ा हो गया होगा। हिन्दू हो या मुसलमान साधु-फकीर पर सबकी श्रद्धा है सबका विश्वास है। इसी खयाल में डूबकर चलते-चलते कब राह समाप्त हो गयी इसका खयाल ही न रहा।"

उस गाँव की हद में पहुँचते ही बालचर बच्चों और पुलिस कांस्टेबिलों ने सैनिक ढंग से बाबा का अभिनन्दन किया। प्रातः सात बजे हम पड़ाव पर पहुँचे। भीतरबन्द के पुराने जमींदार के घर के दालान में ग्राम-पंचायत भवन है। वहीं शिविर स्थापित हुआ। सामने विस्तृत

*चौथा दिन ८ सितम्बर—बागेरहाट से भीतरबन्द—९ मील।

मैदान था। चार सौ से भी अधिक लोग वहाँ जमा हुए। बाबा ने उन्हें सम्बोधित कर कहा :

प्रेम का प्रकाश फैले

"आज हम एक अन्तरवर्ती गाँव में आये हैं। अन्तरवर्ती गाँव में हृदय का प्रकाश होता है। बड़े गाँव में, जहाँ ट्रेनें और मोटरें पहुँचती हैं बुद्धि अधिक चलती है, हृदय का प्रकाश कम होता है। सभी देशों में यही बात है। इस गाँव का नाम ही है—भीतरकन्द अर्थात् भीतर का गाँव। इसलिए यहाँ हृदय का विशेष प्रकाश होना चाहिए। मैं साढ़े ग्यारह वर्षों से भारत में पैदल यात्रा कर रहा हूँ। अब पाकिस्तान-सरकार ने दया करके प्रेम-सहित मुझे पाकिस्तान होकर जाने की अनुमति दी है। पूर्व पाकिस्तान में आज मेरा चौथा दिन है। मैं यहाँ किसी विशेष काम से तो आया नहीं हूँ। मेरा एकमात्र काम है प्रेम की चाबी प्रचारित करना। यदि ईश्वर की इच्छा होगी, तो सब काम होगा। मेरा काम तो बस प्रेम की हवा बहा देना है। एक बार प्रेम की हवा के बह निकलने पर तरह-तरह के काम शुरू हो सकेंगे—कोई निःस्वार्थ भाव से लोगों को जमीन दे सकेगा, माँ-बहन घर-घर में चरखा चला सकेंगी, गाँव में तैयार हुई खादी ही गाँव के लोग पहनेंगे। ग्रामवासी यह भी निश्चय कर सकते हैं कि कोई सूद नहीं लेगा। सुबह सूर्यनारायण के उदित होने पर तरह-तरह के काम होते हैं—कोई हल लेकर खेत जोतने जाता है, बच्चे पुस्तकें पढ़ते हैं, स्त्रियाँ गृहस्थी के काम करती हैं। इसी प्रकार प्रेम का प्रकाश फैल जाने पर कई तरह के अच्छे-अच्छे काम हो सकेंगे—जैसे गरीब को जमीन दान करना, घर-घर में चरखा चलाना, सूद न लेना आदि।

"मैंने पाकिस्तान में प्रथम दिन से ही कहना शुरू किया है कि भूमिहीन लोगों को भूमि दीजिये। पहले दिन एक दान भी मिला। दूसरे दिन हम एक छोटे गाँव में थे, वहाँ पाँच दान मिले। कल हम

लोग एक बड़े गाँव में थे, वहाँ बहुत सारे लोग इकट्ठे हुए थ, पर दान एक ही मिला। यह गाँव तो छोटा है, इसलिए यहाँ अधिक दान मिल सकता है। लेकिन मैं इसके लिए बहुत आग्रह नहीं करूँगा। मैं तो प्रेम की वाणी का प्रचार करने आ रहा हूँ। अभी मैंने आपके सामने तीन कामों की बात कही है। बाद में धीरे धीरे और भी कहूँगा। आप लोग भी अपनी बात करें।"

आज एक पुराने जमींदार के घर के बाहरी दालान में पड़ाव डाला गया। कालिन्दी बहन ने अपनी डायरी में लिखा है 'आज खूब धूप उगी थी इसलिए सोचा कि कुछ अधिक कपड़े धो लूँ। बाल्टी में कपड़े भरकर कुएँ की ओर जा रही थी, तभी दो मुख्य अधिकारियों ने कहा : 'आप इतने कपड़े धोयेंगी? हमारे आदमी धो देंगे। मैंने कहा 'मुझे तो कपड़े धोने की आदत है। वे बोले : 'तब आइये, हम बाल्टी तालाब तक पहुँचा दें। मैंने कहा : तालाब? मैं तो कुएँ की ओर जा रही हूँ। यह बात उन दोनों को पसन्द न आयी, बोले अन्दर के तालाब में स्त्रियों के लिए घाट है। वहीं कपड़े धोइये। शायद वे यह नहीं चाहते थे कि कुएँ के पास खुली जगह में एक बहन कपड़े धोये। ये भाई लोग सहायता करने के लिए सदा तैयार रहते थे। जमींदार के घर की नौकरानी को बुलाया गया। उसके साथ मैं तालाब की ओर गयी। शरत् बाबू के उपन्यास पढ़कर बंगाली जमींदार के घर का एक नक्शा मेरे दिमाग में बना था आज उसका प्रत्यक्ष रूप देखा। नौकरानी से मैंने अर्धमिश्र भाषा के उपयोग से बंगला में बात की।"

बाबा स्वयम् मैदान के बीच में जाकर बैठ गये। उस समय यही कोई दस बजे होंगे। आज यहाँ पर गाँव के मुखियों के साथ बाबा की एक बैठक हुई। बाबा ने उन्हें समझाया कि यदि मजदूरों के पास अपनी जमीन होगी तो वे मालिकों के खेतों में प्रेम के साथ काम करेंगे—चोरी नहीं होगी। यहाँ तो भूदान का 'इज़हार' हो गया है—

द्वार खुल गया है—अब इसे विस्तृत करना उनका काम है। जो सरकारी कर्मचारी—सुरक्षा-अधिकारी आदि—इस यात्रा में बाबा के साथ थे बाबा ने आज उनका परिचय प्राप्त किया। बाबा ११ बजे उनके साथ बैठे। अधिकारीगण १०-१२ थे और संवाददाता ४-५। उनके साथ व्यक्तिगत परिचय प्राप्त करने के बाद बाबा ने उनसे कहा: "दान का आरम्भ तो आप लोगों से होना चाहिए।" सब चुपचाप हँसने लगे। एक अधिकारी ने कहा: "हम तो अपने ही देश में विस्थापित हो गये हैं हिन्दुस्तान छोड़कर आये हैं। जमीन तो नहीं ही है। किन्तु मैं विस्थापित हूँ, इस पर कोई विश्वास नहीं करता।"

"अरे भाई, यह तो ठीक है। लेकिन जमीन नहीं है, तो जमीन लेने के लिए तो तैयार होना पड़ेगा। कोई दावा है?" इसका कोई जवाब न था।

शाम को शिक्षक लोग बाबा के पास आकर बैठे। बाबा ने ही शिक्षकों से कुछ प्रश्न किये। अन्त में शिक्षकों ने बाबा से कहा: "आपके मुँह से कुरान सुनना चाहता हूँ।" बाबा हँसे, फिर पाँच मिनट तक उन्होंने सस्वर कुरान का पाठ किया। शिक्षक लोग तन्मय होकर सुनते रहे। उनकी दृष्टि बाबा के चेहरे पर टिकी थी। अन्त में उन्होंने कहा: "अपने धर्म की भाषा हम नहीं बोल सकते। उसे आपके मुँह से सुनकर हमें खूब आनन्द मिला।"

एक व्यक्ति ने प्रश्न किया: "आपका घर कहाँ है?"

"ब्रह्मपुत्र कहाँ की है—तिब्बत की या आसाम की या पूर्व पाकिस्तान की? इसी तरह मैं भी हूँ।"

"आप परिव्राजक हैं!"

शाम की प्रार्थना-सभा में पाँच हजार से भी अधिक लोग जमा हुए। नियमानुसार चार बजे सभा शुरू हुई। बाबा ने कहा

"आज मेरी पदयात्रा का चौथा दिन है। आप लोगों के दर्शन पाकर मुझे बहुत ही खुशी हुई। इस बार तो थोड़े दिनों के लिए आया हूँ—

मात्र १६ दिन के लिए। हम लोग यदि ठीक ढंग से काम करें, तो ईश्वर की कृपा से इन १६ दिनों में ही सर्वांगसुन्दर काम हो सकता है। इन चार दिनों में ही मैंने जनता में जो उत्साह और प्रेम देखा है, उससे मैं बहुत प्रभावित हुआ हूँ। मैं देखता हूँ कि इस देश की जनता और भारत की जनता में कोई अन्तर नहीं है।

"यहाँ कहा जाता है कि जमीन कम है। किन्तु भारत के केरल प्रदेश में जमीन और भी कम है। चीन जापान आदि देशों में जमीन बहुत ही कम है। इसलिए कृषि-कर्म के अलावा ग्राम-शिल्प का काम आरम्भ करने की आवश्यकता है। जमीन कितनी ही कम क्यों न हो ईश्वर ने सबके लिए दी है। जिस तरह हवा और पानी का कोई स्वामी नहीं है उसी तरह यदि कोई जमीन पर स्वामित्व का अधिकार जताता है तो ईश्वर की इच्छा के विरुद्ध काम करता है। यह बात सभी धर्मों में कही गयी है। जमीन सबकी होनी चाहिए।

मजदूर को खुश रखना होगा

"विज्ञान की सहायता से उत्पादन बढ़ाना चाहिए। इस देश में या भारत में एक एकड़ जमीन में जितनी फसल होती है जापान में उसकी चारगुनी फसल होती है। फसल का उत्पादन बढ़ाने के लिए मजदूर को खुश रखना होगा। आजकल मजदूर काम करते समय आलस्य करते हैं। मैंने देखा है कि मजदूर जब काम करने के लिए मैदान में जाता है तब उसके एक हाथ में होता है काम करने का यन्त्र और दूसरे हाथ में हुक्का। उसके दोनों ही हाथ फँसे रहते हैं। फिर वह काम कैसे करेगा! मालिक के न रहने पर वह काम कम करता है—मालिक भी उसे कम मजदूरी देने की कोशिश करता है। मजदूर चोरी देता है काम में और मालिक चोरी देता है दाम में। फलस्वरूप फसल कम होती है—देश का उत्पादन घट जाता है। गाड़ी के दो पैर हैं—एक है मालिक और दूसरा मजदूर। दोनों पैर यदि सम गति से न

चले तभी गाड़ी ठीक चलेगी। भूमिहीन मजदूर यदि दान में थोड़ी जमीन पा जाय, तो उस जमीन में उसके बच्चे प्रत्यक्ष श्रम से मेहनत करेंगे—उसकी पत्नी भी मेहनत करेगी। वह भी मालिक की जमीन में खुशी से मेहनत करेगा। इसलिए वह मजदूरी भी पायेगा और खुश रहेगा। मालिक भी सन्तुष्ट रहेगा। संसार में आज मालिक-मजदूर का झगड़ा है। यही झगड़ा कम्युनिज्म की बुनियाद है। हम यदि यह चीज नहीं चाहते तो मजदूर को प्रेमपूर्वक सन्तुष्ट रखना होगा। तलवार से कम्युनिज्म को नहीं रोका जा सकेगा।

'भारत में मुझे ४ लाख एकड़ जमीन दान में मिली है। उसमें से १ लाख एकड़ जमीन का वितरण हुआ है। यह प्रेम की चाबी लेकर मैं भारत के सभी जिलों में नहीं, सभी प्रदेशों में तो घूम रहा हूँ। मैंने सोचा कि इस देश में भी यह प्रेम की चाबी, यह विचार रख जाऊँ। इसका नतीजा क्या होगा यह मैंने नहीं सोचा। लोगों की संख्या बढ़ जाने पर भी जमीन तो उतनी ही रहेगी। इसलिए उत्पादन बढ़ाना होगा, ग्राम उद्योग चलाना होगा। सरकार तो चेष्टा कर रही है पर सरकारी चेष्टा की एक सीमा होती है। देश के बड़े उद्योगों में सबको काम नहीं मिल सकता। बड़े उद्योगों के सम्बन्ध में पूर्व पाकिस्तान की रिपोर्ट मैंने देखी है। देश के एक करोड़ मजदूरों में से मात्र २ लाख ९ हजार को बड़े उद्योगों में काम मिला है। किन्तु अपने गाँव में मजदूरी कम रहने पर भी अनेक लोगों को काम मिलेगा और इससे गाँव की शक्ति बढ़ेगी। वर्षा का जल बूँद-बूँद गिरकर सब जगह पानी-पानी कर देता है और तब उसमें खेती करना सम्भव होता है। किन्तु यदि कुछ घाटी में बड़े-बड़े नलों से जल बहा दी जाय, तो क्या उससे खेती करना सम्भव होगा? यदि कुटीर उद्योग चलें तो घर-घर में थोड़ा-थोड़ा करके सम्पत्ति की सृष्टि होगी और गाँव में जीवन का सञ्चार होगा।

'हम लोग देश का निर्माण करते हैं किन्तु यह होगा कैसे? जब गाँव शक्तिशाली होगा तब। गाँव के लड़के खाने के लिए शह-

मक्खन नहीं पाते, उचित भोजन नहीं पाते, सिर्फ मार ही खाते हैं—यह भी सब समय नहीं मिलता। इस तरह बच्चे कमजोर होते हैं। किसानों के बैल भी कम भोजन मिलने के कारण दुबले होते हैं। ऐसी हालत में फसल किस तरह बढ़ेगी? देश किस तरह शक्तिशाली होगा? शहर तो ऊपर की मंजिल है, नीचे की मंजिल है गाँव। सबसे नीचे की जो मंजिल है गाँव, उसे मजबूत बनाना होगा। केवल सरकार यह काम नहीं कर सकती। यदि गाँव के लोग मिल-जुलकर यह काम आरम्भ करें और उसके ऊपर से सरकारी सहायता मिले तभी यह काम हो सकता है। जनता का उद्यम है दूध और सरकारी सहायता है दही-जमावन। जल में दही-जमावन देने से दही कभी नहीं जमेगा—दूध में देने से ही जमेगा।

गाँव में पूँजी-निर्माण से ही ग्राम-निर्माण होगा

'अब तो स्वराज हो गया है। लोग सोचते हैं कि अब सरकार ही सब काम करेगी। आकाश से जिस तरह वर्षा की धारा गिरती है उसी तरह क्या ऊपर से चीनी की वर्षा होगी? ऊपर से तो केवल वर्षा की ही धारा गिरेगी—यही है ईश्वर की कृपा की वर्षा। उसके साथ हमारे परिश्रम के जुड़ने से ही फसल पैदा होगी—केला चाहिए, तो केला लगाना होगा और धान चाहिए, तो धान बोना होगा।

'गाँव में पूँजी नहीं है—पूँजी है शहर में। कराची में पूँजी है इसीलिए पाकिस्तान है। ढाका में पूँजी है, इसीलिए पूर्व पाकिस्तान है। कराची में सूर्योदय होने और हमारे घर में अन्धकार रहने से क्या लाभ होगा? गाँव में कोई पूँजी नहीं है—पूँजी है घर में; इसीलिए गाँव नहीं है—है सिर्फ घरों की समष्टि। हम यदि गाँव में पूँजी का निर्माण करें, ग्राम-सम्पद की स्थापना करें तभी तो ग्राम का निर्माण होगा। यह होगा कैसे? गाँव के भूमिवान् लोग गरीब भूमिहीनों को भूमिदान करेंगे। घर में प्रत्येक घर से फसल के एक अंश का दान करके पूँजी तैयार की जायगी और गाँव की उन्नति के काम होंगे तभी ग्राम-निर्माण होगा।

यही है भूदान का उद्देश्य। गाँव होगा एक परिवार। इसकी बुनियाद होगा प्रेम। हम सब एक हैं—जिस तरह अल्लाह एक है—इन्सान एक है। अनेक जाति अनेक धर्म, अनेक देश, मालिक-मजदूर—ये सब भेद मिटाकर यदि ग्राम एक परिवार नहीं होगा, तो ग्राम-निर्माण नहीं हो सकेगा उसकी उन्नति नहीं हो सकेगी। इसीलिए मैंने प्रथम दिन से ही भूदान माँगा है और उसी दिन से पाया भी है—प्रतिदिन कुछ-कुछ पा रहा हूँ। बूँद-बूँद करके वर्षा आरम्भ हो गयी है। मैं यहाँ कुछ ही दिन क्यों न रहूँ यह काम होगा ही। कारण मनुष्य में प्रेम और करुणा है। मेरा कोई प्रतिष्ठान नहीं है—यहाँ भी नहीं, वहाँ भी नहीं। अखबार वालों ने मुझसे पूछा था कि अपने चले जाने के बाद यहाँ भूदान का काम चलाने के लिए मैं कोई संस्था स्थापित कर जाऊँगा या नहीं। मैंने कहा: 'नहीं क्योंकि संस्था पर मेरा विश्वास नहीं है। मेरा विश्वास मनुष्य के हृदय पर है।' अब हम लोग पाँच मिनट मौन प्रार्थना करेंगे। आप लोग प्रार्थना करके ही चले नहीं जायेंगे—जाने से पहले भूदान दे जायेंगे।"

प्रार्थना आरम्भ होने से पहले सबको शान्त रहने के लिए कहकर विनोबाजी ने उच्चारण किया: "ॐ शान्ति! शान्ति!! शान्ति!!!" सब लोग शान्त हो गये। कुछ देर मौन रहने के बाद बाबा ने कहा: 'सबको प्रणाम! जय जगत्!' बाबा को थोड़ा रुकने के लिए कहकर मैंने एक दान मिलने की घोषणा की और कहा कि जो लोग दान देना चाहते हैं वे सात बजे से पहले दान दे जायें। तब बाबा ने मेरे हाथ से माइक लेकर पुनः कहा: 'जो लोग दान देना चाहते हैं' यहाँ जिन जिन लोगों के पास भूमि है उन सबका मैं दान देने के लिए आह्वान करता हूँ। वे सब दान दे जायें।' यह बात कहकर वे मंच से उतर गये। इसके बाद दो और दान मिले। [illegible] में कुल तीन दान मिले।

*पाँचवाँ दिन **५**

भूख और परमाणु-अस्त्र : यही दो समस्याएँ

एक सन्ध्याकालीन प्रार्थना से पहले अगले पड़ाव की बात बताते समय मैंने सूचित किया कि "एक चार मील पैदल चलना होगा और चार मील नाव से जाना होगा, तब कुरीग्राम आयेगा।" प्रतिदिन सन्ध्याकालीन प्रार्थना से पहले अगले पड़ाव के नाम, दूरी, सामान ले जाने की व्यवस्था आदि के सम्बन्ध में विनोबाजी को बताना होता है। तब वे बताते हैं कि यात्रा किस समय शुरू की जायगी। अगले पड़ाव की बात सुनकर उन्होंने कहा "तब कल रात साढ़े तीन बजे रवाना होना होगा।"

तदनुसार ही आज सवेरे साढ़े तीन बजे यात्रा शुरू हुई। कल से संवाददाता साथ ही थे। प्रायः सब-के-सब युवक ही थे या फिर उससे थोड़ा-बहुत ऊपर थे। नित्य ही वे साथ रहते हैं, लेकिन साधारणतः बस से चलते हैं। कभी कुछ लोग बस से चलते हैं और कुछ लोग पैदल। आज वे लोग यात्रा के आरम्भ से ही साथ थे।

चलते-चलते प्रार्थना हुई। प्रार्थना के बाद संवाददाता-बन्धुओं ने बाबा के साथ बातचीत आरम्भ की। चलते समय बाबा सदा विभिन्न विषयों पर विचार-विमर्श करते हैं—प्रश्नोत्तर भी चलता है। ज्ञान का प्रवाह बहता रहता है मानो चलता-फिरता विद्वान् हो।

'स्टेट्समैन' के प्रतिनिधि ने कहा : 'आपके इस भूदान का दर्शन मैं ठीक तरह से समझ नहीं पाया। मैं नहीं समझता कि भूदान-यज्ञ के द्वारा समस्या का समाधान होगा।

* पाँचवाँ दिन ९ सितम्बर—चिलमारी से कुरीग्राम—८ मील।

बाबा बोले : "भूदान-यज्ञ में दर्शन तो है नहीं—है सिर्फ प्रेम। प्रेम का संचार होने से ही सभी समस्याओं का समाधान होगा।" इस बात को लेकर बाबा के साथ कुछ देर और विचार-विमर्श चला। उन्हीं बन्धु ने कहा : "ब्रह्मपुत्र में बाढ़ आने से भारत और पाकिस्तान, दोनों ही देशों को नुकसान पहुँचता है। यदि दोनों देश मिलकर योजना बनायें इसके प्रतिकार का उपाय निकालें, तो क्या अच्छा नहीं होगा?"

"निश्चय ही अच्छा होगा। इसके लिए चाहिए दोनों देशों का फेडरेशन। मैं तो सर्वत्र इसी प्रेम का निर्माण करना चाहता हूँ। इसीलिए तो कहता हूँ World federation होना चाहिए—मैं कहता हूँ 'जय जगत्'।"

इस तरह बातचीत करते हुए पदयात्री-दल जब नौका-घाट पर पहुँचा तब लगभग छह बजे थे। मैं थोड़ा पीछे रह गया था। कालिन्दी बहन ने अपनी डायरी में लिखा है : "एक सुन्दर लम्बी-सम्बी नौका खड़ी थी। मल्लाहों ने बाबा के पैर धोकर उनका स्वागत किया। नौका के मालिक लोग बिहार के थे। नदी पार करते समय प्रायः बिहारी भाइयों से मुलाकात होती है—भारत के विभिन्न स्थानों में असम में भी यही देखा था। यहाँ भी यही बात देखी। नौका में काफी दूरी तय करनी थी—प्रायः डेढ़-दो घंटा समय लगा। असम में पानी में चलने का अच्छा अभ्यास हो गया था। पानी में झाँकते-झाँकते मेरे मन में यह बात आयी कि आज भी पानी के ऊपर से जा रही हूँ पर मेरे पाँव तो सूखे हैं। पाँवों पर थोड़ा हाथ फेरा—पानी है, किन्तु हम आराम पा रहे हैं। किन्तु बेचारे पाँवों के भाग्य में अधिक आराम नहीं था। एक जगह पानी कम था—नौका चलते-चलते अटक गयी। मांझी लोग नीचे उतरकर नौका को ठेलने लगे। अब बाबा भी नौका से उतरकर पैदल ही किनारे चलने लगे। मैं भी उतर गयी। 'स्टेट्समैन' के उक्त संवाददाता बन्धु भी जूता खोलकर उतर पड़े। किन्तु किनारे पर दलदल व दलदल में ट धार में फँस गये। अब उनके लिए उठना

मुश्किल हो गया। उनके उद्धार के लिए एक अन्य व्यक्ति गये और वे भी फँस गये। तब कप्तनावी ने उन्हें खींचकर बाहर निकाला। बाबा थोड़ा आगे जाकर फिर नौका में आ गये। अब बड़ी नदी पार करनी थी।

"नौका के तट पर पहुँचते समय वहाँ जो भीड़ देखी थी, ग्राम की प्रार्थना-सभा में बाबा के भाषण के समय भी मानो वही भीड़ थी—वही लोग सभा में उपस्थित हुए थे। भीड़ को देखकर रोज ही एक विचार मन में आता है—बाबा के आने की खबर इन्हें किसने दी? जिनके पास अखबार नहीं पहुँचते, हमारे कार्यकर्ता भी न पहुँचे, उनके पास यह समाचार किस तरह पहुँचा? वे एकत्र किस तरह हुए? कस्तूरी की गन्ध दूर से ही मिल जाती है—यह कहने की जरूरत नहीं पड़ती कि कस्तूरी-मृग आ रहा है। बाबा के आगमन की बात शायद वायु-देवता ने इसी तरह पहुँचा दी है। भारत से एक फकीर आया है वह विश्व-मानव है तुमसे प्रेम की बातें करने आया है। यह 'दुनिया का फकीर' आज लोगों की दुनिया के साथ प्रेम करने की बात करता फिर रहा है।"

कुड़ीग्राम के सरकारी बालिका-विद्यालय में पड़ाव की व्यवस्था की गयी थी। प्रायः साढ़े सात बजे यात्री-दल वहाँ पहुँचा। उस समय तक हजार से भी अधिक लोग विद्यालय के मैदान में जमा हो गये थे—स्त्रियाँ भी आयी थीं इसलिए माइक लाने की व्यवस्था की गयी। इस बीच बाबा स्नान कर आये।

कुड़ीग्राम के पड़ाव पर सवेरे उपस्थित जनता को सम्बोधित कर बाबा ने जो कुछ कहा था और ग्राम की प्रार्थना-सभा में उन्होंने जो बातें कही थीं वे मोटे तौर पर एक ही थीं। इसलिए दोनों भाषणों का सार-संक्षेप आगे एक ही स्थान पर दिया जा रहा है। वस्तुतः कुड़ी ग्राम के भाषणों में बाबा ने जनता के सामने एक नया विचार रखा। सवेरे उन्होंने उपस्थित लोगों से कहा था : 'आज कुड़ीग्राम में कुड़ी

(बीस) भूदान मिलने चाहिए।" दिनभर दर्शनार्थियों की भीड़ जमा होती रही। भीड़ का नियन्त्रण करना मुश्किल हो गया।

कुड़ीग्राम पहुँचकर ही देखा कि हमारे सहकर्मियों में चार और सज्जन आ गये हैं। नोआखाली के गांधी आश्रम के कार्यकर्ता श्री मदनमोहन चट्टोपाध्याय श्री ननीगोपाल नाहा (प्रचलित नाम 'साधु') और वहाँ के सहायक युवक बन्धु श्री वीरेन्द्र मौलिक तथा अभय-आश्रम के कार्यकर्ता श्री योगेशचन्द्र आढ्य आये थे। उनके आने से बड़ी सहूलियत हो गयी। काम का भार अधिक था—उन्होंने उसमें हिस्सा बँटाना शुरू किया। निर्मलभाई के विदा लेने के बाद साधु और वीरेन का अग्रगामी दल बनाया गया। सामान आदि ले जाने के मामले में योगेशभाई विश्वभाई के सहायक बने।

शाम को हाईस्कूल के मैदान में विराट् प्रार्थना-सभा हुई। कोई १४-१५ हजार लोग इकट्ठे हुए। बहुत सारी स्त्रियाँ भी आयीं। बाबा ने कहा :

"आज मेरी यात्रा का पाँचवाँ दिन है। आप सब लोग प्रेम के साथ यहाँ आये हैं यह बड़ी खुशी की बात है। आप लोगों का यह जो प्रेम मुझे मिल रहा है उसके साथ कुछ और भी मैं चाहता हूँ—मुझे भूमिहीनों के लिए भूमि चाहिए। गत चार दिनों में से प्रत्येक दिन मुझे गरीबों के लिए थोड़ी-थोड़ी जमीन मिली है। कुड़ीग्राम में आज कुड़ी (बीस) दानपत्र चाहिए।

"हम लोगों का काम होगा—सत्य बोलना सबको प्यार करना एक-दूसरे की सहायता करना और गरीबों का दुःख दूर करने के लिए गम्भीर प्रयत्न।

भूख की समस्या : भूदान में समाधान

"संसार में समस्याएँ क्रमशः बढ़ती जा रही हैं। समस्याओं के समाधान के लिए तीन-वर्षीय पाँच-वर्षीय, अनेक योजनाएँ बन रही हैं।

किन्तु गरीबों की भूख शान्त करने की कोई ठीक राह ही नहीं मिल रही है—उनका दुःख बढ़ता ही जा रहा है। भूदान के द्वारा इसे हल किया जा सकता है। हम लोग दोनों हाथों से काम करेंगे, सेवा करेंगे, इसीलिए तो भगवान् ने हमें लम्बे-लम्बे दो हाथ दिये हैं किन्तु मुँह एक ही दिया है—इसका महत्त्व है। यदि मुँह दो होते और हाथ एक होता तो उत्पादन कम होता और हम खाते अधिक। तब दुनिया की कितनी भीषण अवस्था होती। यदि हम दो व्यक्तियों के बीच प्रेम और सहयोग रहे तो चार (दो + दो = चार) हाथों से काम होगा और यदि दो व्यक्तियों के बीच विरोध-भाव हो, तो एक भी हाथ से काम नहीं होगा (दो − दो = शून्य)।

'आज की बड़ी समस्याएँ दो हैं—एक, विश्वव्यापी गरीबों की भूख और दूसरी, परमाणु अस्त्रों की संख्या में दिनानुदिन वृद्धि। आज संसार विनाशी बम बन रहे हैं। विज्ञान की शक्ति बड़े प्रबल रूप से मनुष्य के हाथ में आ रही है। इसके साथ-साथ मनुष्य की उपभोग्य वस्तुएँ और भोग की स्पृहा भी बढ़ रही है। इधर जन-संख्या बढ़ रही है और उसके साथ-साथ भूख भी बढ़ रही है। इस भूख को शान्त करने का एकमात्र उपाय यह है कि प्रेम के साथ बाँटकर खाया जाय। जब तक बाँटकर खाने की व्यवस्था नहीं होगी तब तक दुनिया में शान्ति स्थापित नहीं होगी। इसीलिए भूदान को मैंने इस भूख को शान्त करने का साधन मानकर ग्रहण किया है।

परमाणु-अस्त्र—भय—समाधान प्रेम में

'दूसरी समस्या है परमाणु-अस्त्रों की। आज छोटे-बड़े परमाणु-अस्त्र तैयार हो रहे हैं; साथ ही एक-दूसरे को डरवाया भी जा रहा है। रूस अस्त्र-शस्त्र उद्योग, वाणिज्य, कृषि में कितना आगे बढ़ गया है फिर भी अमेरिका से डरता है। उधर अमेरिका विज्ञान की शक्ति से काफी सम्पन्न होने के बावजूद रूस से डरता है। इस प्रकार परस्पर-सन्देह और

भय सम्पूर्ण संसार में बढ़ता जा रहा है और भयंकर संहारास्त्रों की तैयारी चल रही है—कब क्या होगा, नहीं कहा जा सकता। प्रायः १७ वर्ष पहले जापान के हिरोशिमा नामक स्थान में अमेरिका के परमाणु-बम गिरे थे। उससे लाखों लोग हताहत हुए थे, विकलांग हुए थे—उसकी प्रतिक्रिया अब भी चल रही है। जापान की देश-विजय सम्बन्धी प्रगति बम गिरने के साथ ही रुक गयी। किन्तु समस्या हल नहीं हुई। शस्त्रों के द्वारा, शारीरिक शक्ति के द्वारा कोई समस्या हल नहीं होगी।

"भगवान् ने सभी मनुष्यों को प्यार करना सिखाया है। उसकी व्यवस्था ऐसी है कि बचपन से ही मनुष्य प्रेम की शिक्षा पाता है—मां से ही प्रेम की शिक्षा मातृभाषा की शिक्षा धर्म की शिक्षा पाता है। मां-बाप ही बच्चों को सिखाते हैं—सत्य बोलो प्रेम करो शान्ति रखो। (उन्होंने कुरान की एक आयत बोलकर उसकी व्याख्या करते हुए कहा) सभी मनुष्य पाड़ पर रह जायेंगे—केवल वही पार उतरेगा जिसका ईश्वर पर विश्वास है जो ठीक काम करता है जो सत्य बोलता है और लोगों को सत्य सिखाता है। मनुष्य तो दूसरे प्राणियों का भी दुःख नहीं देख सकता—भगवान् ने उसे ऐसा ही हृदय दिया है। और, आज वही मनुष्य एक दूसरे से भय खा रहा है। इस भय से हमें मुक्ति पानी होगी। हमें आपसी भेद मिटाने होंगे—प्रेम के साथ रहना होगा।

भाषण के बाद मौन प्रार्थना हुई। आज सब कल के भी मुकाबले अधिक शान्ति रही। जनता ने प्रार्थना की शान्ति के साथ ही सारी दुनिया की शान्ति के लिए प्रार्थना की।

सम्पत्ति-दान

प्रार्थना के बाद घोषणा की गयी कि कुड़ीग्राम में चार दानपत्र मिले। उनमें से एक दान १५ बीघा जमीन का था। यह जमीन दस लोगों में बाँटी गयी।

सभा के कुछ देर बाद बाबा पंडाल में बैठकर कुछ लोगों के साथ बातचीत कर रहे थे, तभी एक चनाचूर बेचनेवाले ने आकर कहा कि उसके पास कोई जमीन आदि नहीं है किन्तु वह बाबा को कुछ देना चाहता है। तदुपरान्त उसने बाबा को पाँच रुपये मासिक देते रहने का दानपत्र लिखकर दिया।

सन्ध्या से पहले एक सज्जन बाबा से मिलने आये। उनकी विराट् काया थी। वे बाबा के चरणों में लोट गये। उन सज्जन के पूर्वज उत्तर प्रदेश के थे, पर उनका खानदान लगभग दो सौ साल से यहीं रह रहा था। उन्होंने बाबा से कहा : "आप हम लोगों के इस देश में कुछ दिन और रहते, तो अच्छा होता। यहाँ भक्ति है। यहाँ के लोग अच्छी बातें सुनना चाहते हैं। मेरी प्रार्थना है कि कुछ दिन और यहाँ रहें।"

बाबा के पाकिस्तान-आगमन के दिन भुरुंगमारी के मार्ग में वर्षा हुई थी। आज बाकी रात को खासी वर्षा हुई। आज बाबा ने पाकिस्तान के संगठन-तन्त्र का साधारण ज्ञान प्राप्त किया। मेरे साथ बैसिक डेमोक्रेसी के सम्बन्ध में बातचीत करके उन्होंने पाकिस्तान की यूनियन कौंसिल उसकी सदस्य-संख्या चेयरमैनों की संख्या आदि जान ली। ●

*छठा दिन ६ पैसिफ़िक डेमोक्रेसी के आधार : प्रेम और करुणा

कुशीग्राम से पोंगा की दूरी ९ मील है। इसलिए पहले दिन की ही तरह आज भी रात के पिछले पहर में साढ़े तीन बजे रवाना होना पड़ा। छः मील चलने के बाद काठमबाड़ी नामक स्थान पर आकर पोंगा के निवासियों ने बाबा का स्वागत किया। वे लोग थोड़े घुमावदार रास्ते से बाबा को ले चले। इससे रास्ते की दूरी तो कुछ बढ़ गयी, किन्तु ग्रामीण स्त्रियों को बाबा के दर्शन मिले। रास्ते में एक विशाल वट-वृक्ष था। वह मानो अचानक रास्ते में आकर बाधा फैलाकर खड़ा हो गया था। इस की अवस्थिति अत्यन्त रमणीय थी—बाबा उस वृक्ष के नीचे थोड़ी देर खड़े हुए। वट की अनेक जटाएँ नीचे की ओर झुकी थीं—उन्हें देखकर बाबा ने कहा : 'ऊर्ध्वमूलमधःशाखम्'। कुछ देर बाद उन्होंने पुनः चलना शुरू किया। साढ़े सात बजे हम पोंगा हाईस्कूल स्थित पड़ाव पर पहुँचे। बाबा के स्वागत में पोंगा हाईस्कूल के छात्रों और स्काउटों ने अपने शिक्षकों के साथ सुन्दर हिस्सा लिया। गाँव में प्रवेश करने के पथ पर उन्होंने एक द्वार बना रखा था जिस पर लिखा था—'जय जगत्'। स्कूल का मकान भी बड़ी खूबी से सजाया गया था। स्कूल के मैदान में उस समय सवेरे-सवेरे ही लगभग एक हजार लोग जमा थे। नित्य ही देखने में आ रहा है कि सवेरे-सवेरे इकट्ठा होने वाले लोगों की संख्या क्रमशः बढ़ती जा रही है। बाबा ने पड़ाव पर पहुँचकर वहाँ उपस्थित लोगों को सम्बोधित कर कहा :

---

* छठा दिन ? शनिवार—कुशीग्राम से पोंगा—९ मील।

यह सामूहिक युग है

"पूर्व पाकिस्तान में आज मेरा छठा दिन है। कल कुर्मीग्राम में अच्छा दान मिला—कुल ९ बीघा मिला यहाँ। जो लोग दान करेंगे, वही यह भी निश्चित कर देंगे कि यह जमीन किसे दी जायगी। आज आने में मुझे थोड़ा अधिक परिश्रम करना पड़ा है। इसलिए पारिश्रमिक भी कुछ अधिक मिलना चाहिए—अधिक भूमिदान होना चाहिए। गाँव में कितने लोग भूमिहीन हैं इसका हिसाब लगाकर सब लोग कुछ-न-कुछ जमीन दान में दी जाये। यह सामूहिक युग है। एक साथ मिलकर सामूहिक रूप से काम करना होगा। गाँव की समस्याओं का समाधान गाँव के लोगों को ही सामूहिक रूप से करना होगा। यहाँ बेसिक डेमोक्रेसी की स्थापना हुई है। यूनियन कौंसिल के ८ हजार सदस्य हैं—वही भूदान भी कर सकते हैं और भूदान-संग्रह भी। इस दान करने में जो मधुर स्वाद है वह मुझे मिला है और मैं चाहता हूँ कि आप भी उसे ग्रहण करें। अखबारवालों ने मुझसे पूछा था कि अपने चले जाने के बाद भूदान का काम चलाने के लिए मैं किसी संस्था का निर्माण करूँगा या नहीं। उत्तर में मैंने कहा कि नहीं, मैं किसी संस्था का निर्माण नहीं करूँगा। किन्तु अब मैंने इस बारे में सोच लिया है—बेसिक डेमोक्रेसी की यूनियन कौंसिल ही वह संस्था होगी जो इस काम को हाथ में ले सकेगी। जो लोग काम करेंगे उनकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी—उनके प्रति लोगों का आदर और श्रद्धा-भाव बढ़ेगा। आप देंगे थोड़ी-सी जमीन, पर पायेंगे हजार हजार लोगों का प्रेम और सहानुभूति।'

बाबा के स्नान विश्राम के बाद गाँव के प्रधान लोग गिरोहों में आये, स्कूल के शिक्षक लोग भी आये। बाबा ने एक नया विचार उनके सामने प्रस्तुत किया। बेसिक डेमोक्रेसी के सन्दर्भ में उन्होंने कहा :

बेसिक डेमोक्रेसी के आधार : प्रेम और करुणा

'पाकिस्तान का वर्तमान शासनात्मक स्वरूप मैंने थोड़ा पढ़ लिया

है। वैदिक डेमोक्रेसी एक अच्छी शुरुआत कही जा सकती है यदि इसे शक्ति की दृष्टि से न देखकर प्रेम और करुणा की दृष्टि से देखा जाय और इसके द्वारा काम किया जाय। छोटी डेमोक्रेसी होने पर भी ऊपर से शक्ति का अंश प्राप्त होता है—तब उसमें शक्ति के साथ-साथ ईर्ष्या भी आ जाती है। बड़े-बड़े क्षेत्रों में ईर्ष्या उतनी नहीं बढ़ती कारण वहाँ दृष्टिकोण या Outlook भी बड़ा रहता है। छोटे वातावरण में संकीर्णता आती है इसलिए ईर्ष्या-द्वेष बढ़ने की भी सम्भावना रहती है। इसलिए केवल सत्ता या शक्ति के विकेन्द्रीकरण से ही ग्राम स्वराज्य नहीं आ सकता। एक बड़े पत्थर को टुकड़े-टुकड़े करके कितना ही छोटा क्यों न कर दिया जाय, वह पत्थर ही रहेगा मक्खन नहीं बनेगा। उसी प्रकार शक्ति को टुकड़े-टुकड़े कर देने से ही काम नहीं चल जायगा। ग्राम स्वराज्य की बुनियाद होगी प्रेम और करुणा—प्रेम और करुणा पर ही उसकी दीवार खड़ी होगी। गाँव में ग्रामवासियों की एक सभा (समिति) रहेगी। वही ग्राम-सभा ग्रामवासियों से फसल का एक अंश दान के रूप में ग्रहण करेगी और उससे गाँव के कल्याण के लिए काम करेगी—कुटीर उद्योग चलायेगी शिक्षा की व्यवस्था करेगी गाँव के झगड़े कोर्ट में नहीं जाने देगी उन्हें गाँव में ही निबटा देगी। ऊपर से कुछ सहायता मिल गयी, तो अच्छा—नहीं मिली तो भी चिन्ता नहीं। इस तरह गाँव में समता आयेगी और तभी यूनियन कौंसिल कल्याणकारी होगी। जो भूमिहीन हैं उन्हें भूमि देगी और फिर समग्र गाँव को ही ग्रामदान कर देगी—ग्रामदान अर्थात् स्वामित्व का समर्पण।

बाबा ने आज प्रायः सारा दिन लोगों से मुलाकात की। सन्ध्या ४ बजे नियमानुसार प्रार्थना-सभा हुई। सभा में बहुत बड़ी भीड़ इकट्ठी हुई। इस छोटे-से गाँव में भी दस हजार से अधिक लोग जमा हुए, अनेक स्त्रियाँ भी आयीं। सभा के प्रारम्भ में पींगा हाईस्कूल के शिक्षकों तथा ग्रामवासियों की ओर से विनोबाजी को संस्कृत भाषा में एक मानपत्र दिया गया—एक शिक्षक ने उसका बंगला अनुवाद पढ़कर

सुनाया। तत्पश्चात् विनोबाजी ने उपस्थित लोगों को सम्बोधित कर कहा

जाति, देश—इसके ऊपर मानवता

'आज छठा दिन है। थोड़े दिनों की यात्रा है—दस दिन और रह गये हैं। यह परिचय थोड़े दिनों का है, किन्तु लगता है, बहुत दिनों का है। मैं सबके चेहरे पर जो प्रेम-भाव देख रहा हूँ, उससे कोई भी अपरिचित नहीं लग रहा है—आप लोगों का उत्साह और प्रेम बढ़ ही रहा है। सारे ग्यारह साल से मैं भारत के सब प्रदेशों में घूम रहा हूँ। इसके बाद पाकिस्तानी भाइयों से मिलने की इच्छा हुई, क्योंकि मेरा प्रेम किसी देश-विशेष की सीमा में आबद्ध नहीं था। पाकिस्तान और भारत दो शरीर एक हृदय हैं। यहाँ छात्रों की एक बँगला पाठ्य पुस्तक में एक सूफी कवि की कविता पढ़ी। उसमें कहा गया है—जाति, देश इसके ऊपर है मानवता। यह कविता पढ़कर मुझे आनन्द हुआ क्योंकि यह मेरे हृदय की बात है। इसीलिए मैं कहता हूँ : 'जय जगत्'। सब कहते हैं मेरे देश की जय हो, किन्तु मैं कहना चाहता हूँ, केवल मेरे देश की नहीं, सभी देशों की जय हो। गत युद्ध में कोटि-कोटि लोग मारे गये थे और कितने घायल हुए थे इसका कोई हिसाब नहीं है। दोनों ही पक्षों में एक ही धर्म, ईसाई धर्म, के लोग थे। दोनों ही पक्ष ईश्वर से प्रार्थना करते थे कि हे भगवन्, हमारी जय हो। किन्तु बेचारा ईश्वर क्या करे—यह ऐसी लड़ाई थी कि एक पक्ष की जय ही दूसरे पक्ष की पराजय होती। यह भक्तिपूर्ण प्रार्थना तो हो नहीं सकती। मनुष्य मनुष्य से लड़ाई करके क्या ईश्वर को प्रसन्न किया जा सकता है ? माँ की दस सन्तानों में से पाँच यदि एक पक्ष में हों और अन्य पाँच दूसरे पक्ष में, और दोनों पक्ष लड़ाई शुरू करके माँ से जय की याचना करें, तो माँ क्या कहेगी ? माँ कहेगी, मेरा नाम लेना हो, तो पहले अपनी लड़ाई रोको। गुरुदेव (रवीन्द्रनाथ) ने कहा था : 'हम कहते हैं वन्दे मातरम्—

मों को प्रणाम। किन्तु वन्दे मातरम् कोई नहीं कहता। भाई-भाई आपस में लड़ें और ईश्वर से प्रार्थना करें तो ईश्वर कहेगा कि तुम लोगों की भक्ति झूठी है।' कुरान में कहा गया है कि ईमान के रहने से ही काम नहीं चलेगा उस पर अमल करना होगा। 'अल्लजीन आमनु व अमेलुस् सालिहाति'। सत्य बोलने, दुःखियों की सहायता करने से ही ईश्वर कहेगा कि भक्ति सच्ची है। हजरत मुहम्मद ने कहा है कि जो लोग छोटे छोटे उपकार भी नहीं करते किन्तु लोगों को दिखाकर पाँच बार नमाज पढ़ते हैं अल्लाह उनसे कहेगा कि तुम लोग मेरे सच्चे भक्त नहीं हो। मुझसे पूछा गया था कि आप यहाँ क्यों आये हैं? क्या भारत में आपका काम पूरा हो गया है? मैंने कहा कि मेरा काम प्रेम का काम है, सब पर मेरा प्रेम-भाव है। यह प्रेम देश-विदेश, हिन्दू-मुसलमान का भेद नहीं मानता। पूर्व की ओर मुँह करके ईश्वर का नाम लिया जाय या पश्चिम की ओर मुँह करके—यह सब तो बाहरी भेद हैं जो अन्तर में है वही असली चीज है। हम लोग सबको ठग सकते हैं पर ईश्वर को नहीं ठग सकते। सत्य ही धर्म है—बाकी सब ऊपर की चीजें हैं। इसीलिए कुरान में कहा गया है: सबसे प्रेम करो; किसीसे भेदभाव न रखो यदि तुम अपने ही मार्ग को श्रेष्ठ मानकर बाकी सब मार्गों को हीन मानोगे, तो अपने को ही हीन बनाओगे। कोई दाढ़ी रखता है कोई नहीं रखता; कोई शव की दाह-क्रिया करता है कोई उसे दफनाता है—ये सब पार्थक्य तो ऊपरी हैं अन्तर का सत्य है एक, वह सत्य है प्रेम। मैं पाकिस्तान आया हूँ और भिन्न आदमी के दर्शन कर रहा हूँ। भारत में मैंने जो मनुष्य और प्रेम देखे वही मनुष्य और प्रेम यहाँ भी देख रहा हूँ। जिस तरह धनी घरों में बच्चे हैं उसी तरह गरीब घरों में भी बच्चे हैं। गरीब घर के बच्चे गरीबी से प्रताड़ित होकर आठ वर्ष की अवस्था में ही पिता के काम में सहायता करने आते हैं। भगवान् यदि यही चाहता कि गरीबों के बच्चों के पढ़ने लिखने की जरूरत नहीं है तब वह गरीबों के बच्चे भी अमीरों के बच्चों की ही तरह क्यों बनाता?

"इनके अन्दर प्रेम की ज्योति जल रही है। उन्हें अच्छी तरह समझाने से वे निश्चय ही भूमि-दान करेंगे। जो लोग जमीन का दान पायेंगे उन्हें उस जमीन में खेती करनी पड़ेगी। वे उसे बेच नहीं सकेंगे, न बन्धक ही रख सकेंगे। जो लोग जमीन का दान करेंगे वे और भी सहायता करेंगे—जिसे जमीन देंगे, उसकी बीज, धान और हल से भी सहायता करेंगे। कन्या-दान करते समय उसे और भी कुछ देना होता है। जो लोग भूमिहीनों के लिए जमीन माँगेंगे उनके मन में यह दृढ़ विश्वास रहना चाहिए कि जनता कल्पतरु है—वे उससे जो कुछ माँगेंगे, पायेंगे। यदि वे यह सोचेंगे कि लोग जमीन नहीं देंगे तो उन्हें जमीन नहीं मिलेगी। लोगों के हृदय में प्रेम और करुणा है—यह विश्वास लेकर माँगने से जमीन मिलेगी। मेरे बन्धुओं ने कहा था कि मेरी पदयात्रा की तैयारी के लिए दो-तीन व्यक्ति पहले से भेज दिये जायँ, किन्तु मैंने यह नहीं किया क्योंकि पाकिस्तान की जनता पर मुझे विश्वास था।"

इसके बाद मौन प्रार्थना हुई। प्रार्थना-सभा के बाद दो दान प्राप्त हुए। बाबा एक बार मैदान में घूमने निकल पड़े—इधर उधर जनता खड़ी रही और वे बीच में चक्कर लगाते रहे। सन्ध्याकालीन प्रार्थना में तय हुआ कि अगले दिन भी रात के अन्तिम प्रहर में साढ़े तीन बजे रवाना हुआ जायगा।

कल बाबा का ६८वाँ जन्म-दिवस पड़ रहा था। अतः निश्चय हुआ कि सबेरे यात्रा शुरू करने से पहले 'भुवनेश्वर दे' शीर्षक गीत गाया जायगा। तदुपरान्त दोपहर म विष्णुसहस्रनाम के पाठ से पहले विभिन्न भाषाओं में कुछ भजन गाये जायँगे।

*सातवाँ दिन

७ भूदान का काम
युनियन कौन्सिल का काम

विनोबाजी तो नित्य ही रात साढ़े सात बजे तक सो जाते हैं और रात के पिछले पहर में दो बजे उठ जाते हैं। आज भी वे उसी समय उठे। सब लोग उठे, माल-असबाब बाँधा जाने लगा। बाबा ने शौचादि के उपरान्त एक जगह बैठकर बाइबिल पढ़ी। तीन बजे के बाद पदयात्री-दल के सब लोगों ने उनके पास खड़े होकर आशादेवी के निर्देशन में 'मुक्तेश्वर हे' शीर्षक गीत गाया। इसके बाद हम सबने एक-एक कर उन्हें प्रणाम किया।

साढ़े तीन बजे यात्रा शुरू हुई। प्रातः साढ़े सात बजे हम अपने पड़ाव—सिरसा हाईस्कूल—पर पहुँचे। यह स्थान रेलवे स्टेशन के बहुत ही पास है। किन्तु पथ-प्रदर्शक लोग रेलवे स्टेशन से थोड़ा घूमकर पहुँचनेवाले रास्ते से गाँव के भीतर से होकर पड़ाव तक ले गये। गाँव के प्रवेश पथ पर एक मुसलमान सज्जन ने बाबा का स्वागत किया। प्रवेश-पथ के दोनों ओर कुछ हिन्दू और मुसलमान बालिकाएँ हाथ में मालाएँ लेकर खड़ी थीं। उन्होंने एक सम्मिलित स्वागत-गान गाया। उस समय बाबा रुक गये। उस छोटे-से गान का भावार्थ इस प्रकार था :

हे महामानव, आज तुम अत्यन्त पुनीत हृदय लेकर यहाँ आये हो।
हे महाप्राण, हम दीन दलित लोग क्या देकर तुम्हें सन्तुष्ट करें!
तुम्हारे आगमन से आज हमें नवजीवन प्राप्त हुआ है।
आज हमारे हृदय में केवल 'जय जगत्' का गीत गूँज रहा है।

---

*सातवाँ दिन ११ सितम्बर—चौका से सिरसा—९ मील।

कुडीग्राम बालिका विद्यालय में प्रवचन

शिमला की प्रार्थना सभा में भाषण करते हुए

हम अबोध लोग तुम्हें यह अर्घ्यदान कर रहे हैं।
हे श्रेष्ठ, हमारा यह पुष्प-अर्घ्य स्वीकार करो।

किस किस्मत में यह गान किया हुआ था उसे देखकर ऐसा लगता था जैसे किसी छोटी बच्ची ने उसे किया हो। सुकुमार मन से तैयार किये गये उस गान का भाव कितना मधुर था। बच्चियों ने गान समाप्त करने के उपरान्त बाबा के हाथ में पुष्प-मालाएँ दीं और उनका अभिवादन किया। इस प्रकार का गान गाकर बाबा का स्वागत करने का आज यह पहला अवसर था। इसके बाद ग्राम-पथ लाँघकर बाबा यात्री-दल के साथ हाईस्कूल में प्रविष्ट हुए। सबेरे-सबेरे ही वहाँ बहुत सारे लोग इकट्ठा हो चुके थे, उनकी संख्या हजार से ऊपर थी। बाबा ने कहा

मेरी पाकिस्तान-यात्रा का आज सातवाँ दिन है। यहाँ मेरी आनन्द पूर्ण यात्रा चल रही है। यहाँ कहा जाता है कि जमीन कम है। जमीन कम है तो कम जमीन ही दें। किन्तु सबको दान करना चाहिए। जिनके पास चार बीघा जमीन है वे आधा बीघा दगे और बाकी साढ़े तीन बीघा में, पहले चार बीघा में जितनी खाद देते और मेहनत करते थे, उतनी ही खाद देकर और मेहनत करके खेती करगे। इससे साढ़े तीन बीघा में ही चार बीघा के बराबर फसल होगी। उस आधा बीघा में भी जिसे वह जमीन मिलेगी, खूब मेहनत के साथ खेती करेगा। इससे कुछ और फसल होगी। इस प्रकार, कुल मिलाकर फसल अधिक होगी। एक बीघा में से कम-से-कम एक कट्ठा जमीन का दान कीजिये।

कुछ देर बाद बाबा स्नान करके बैठे। आज उनका ६८वाँ जन्म-दिवस था। रंगपुर के डिप्टी कमिश्नर मि. साहब अली खाँ पुलिस सुपरिटेण्डेण्ट मि. अब्दुल हई कुरैशाम के एस. डी. ओ. साहब तथा अन्य कुछ अफसरों ने आकर बाबा के जन्म दिवस के उपलक्ष्य में शुभेच्छा व्यक्त कर उनके दीर्घ जीवन की कामना की। गत वर्ष भारत के असम राज्य में बाबा का जन्म दिवस मनाया गया था। आज पाकिस्तान में

पदयात्रा-काल में जन्म-दिवस मनाया गया, यह एक शुभ सुयोग प्रतीत हुआ। पूर्व पाकिस्तान-सरकार का तार बाबा के पास, जिसमें उनके जन्म-दिवस के अवसर पर शुभेच्छा व्यक्त करने के साथ साथ उनके दीर्घायु होने की कामना की गयी थी।

यहाँ पुलिस-कर्मचारियों, स्कूल के शिक्षकों, छात्रों एवं डाक्टरों ने मिलकर स्वागत और आनुषंगिक कार्यक्रमों की अत्यन्त सुन्दर व्यवस्था की और विनय-भाव से जनता को निमन्त्रित किया। बाबा ने बीच-बीच में स्थानीय लोगों के साथ बातचीत की।

कुरान-सार

कालिन्दी बहन ने अपनी डायरी में लिखा है : 'चास्या के साथ एक सज्जन अन्दर आये—लम्बा कद, श्वेत दाढ़ी, शान्त चेहरा। चास्या ने परिचय करा दिया : 'आप यहाँ के डाक्टर साहब हैं।' डॉक्टर साहब की एक ही उत्सुकता थी : 'आपका कुरान-सार मैं कब देख सकूँगा?' डाक्टर साहब के साथ और भी कुछ लोग आकर बाबा के सामने बैठ गये थे।

'बाबा ने कहा : 'वह पुस्तक तो अभी छपी नहीं है। छपाई चल रही है।'

''जिन्दगी का यह आखिरी समय है। अभी अगर आपका अनुवाद देख पाता तो अच्छा होता। उसे देखने के लिए मैं बहुत बेचैन हूँ।'

" छपाई पूरी हो जाने पर आप उसे देख सकेंगे। जल्दी ही पुस्तक प्रकाशित हो जायगी।

'ठीक है, मैं अपना पता आपको दे जाता हूँ। मुझे उसकी एक कापी भेज देंगे। आपने कुरान शरीफ का अनुवाद ही किया है न?'

'नहीं, अनुवाद नहीं है। कुरान शरीफ में विभिन्न विषयों पर जो उक्तियाँ या सुभाषित हैं, उन्हें विषयवार संकलित किया गया है। जैसे, अल्लाह के सम्बन्ध में जो सब उक्तियाँ हैं, उन्हें एकत्र किया है; पैगम्बर के सम्बन्ध में जो सब उक्तियाँ हैं, उन्हें एकत्र किया है।'

"'यह किताब पढ़ने की मेरी बड़ी तमन्ना है। एक और अर्ज है—मेरे खानदान के लिए दुआएँ कीजिये।'

"आजकल यहाँ कुरान-सार के सम्बन्ध में अच्छी उत्सुकता दिखाई पड़ रही है। यात्रा के आरम्भ में ही अखबारवालों ने इस सम्बन्ध में सवाल किये थे। बाबा ने हँसकर कहा : 'मेरी पुस्तक का तो अच्छा प्रचार हो गया है। वह पुस्तक मैं अपने साथ नहीं लाया हूँ। अभी उसकी छपाई चल रही है। किन्तु अखबारों में पहले से ही उसके सम्बन्ध में टीका-टिप्पणी छप रही है। लेकिन वास्तव में तो—The proof of the pudding is in eating!'

"एक सज्जन ने कहा : 'उस पुस्तक के इस देश में आने पर क्या पाकिस्तान-सरकार ने रोक लगायी है?'

"बाबा ने कहा : 'यदि पुस्तक इस्लाम-विरोधी होगी, तब तो भारत सरकार भी उस पर रोक लगा देगी, क्योंकि भारत में भी पाँच करोड़ मुसलमान हैं। और, अगर पुस्तक इस्लाम-विरोधी न हो, तो दुनियाभर में जायेगी। कुरान-सार का तो खूब ही प्रचार हो गया है।'

जन्म-दिवस : दुनिया का कर्ज चुका रहा हूँ

ग्यारह बजे के कुछ बाद विद्यालय के प्रांगण में हम सब बाबा के साथ जमा हुए। उनके जन्म-दिवस के लिए पूर्व-निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार प्रार्थना की व्यवस्था हुई। इस अनुष्ठान में ग्रामवासियों, उपस्थित सरकारी कर्मचारियों और संवाददाताओं ने योगदान किया। पहले विद्यालय के एक शिक्षक ने कुरान के एक अंश का पाठ किया। तदुपरान्त सहयात्री कार्यकर्ताओं ने गीता के बारहवें अध्याय का पाठ किया। इसके बाद विभिन्न भाषाओं के कुछ भजन गाये गये—गांधीजी का प्रिय गुजराती भाषा का भजन 'वैष्णवजन तो तेने कहिये', मराठी-भाषा में संत तुकाराम का भजन 'जेथे जातो तेथे तू माझा सांगाती', कन्नड़-भाषा का एक भजन, फिर 'नामघोष' से असमिया-भाषा का एक भजन

'मुक्ति व निस्पृह चित्त' गाया गया। सबसे आखिर में रवीन्द्रनाथ का यह भजन गाया गया—'तोमार आशीर्वाद हे प्रभु तोमार आशीर्वाद'।

इस भजन की समाप्ति पर विनोबा कुछ देर चुपचाप बैठ रहे फिर उन्होंने कुरान के 'अल् फातिहा' का सस्वर पाठ आरम्भ किया। उसके बाद उन्होंने कदाचित् माधव के 'नामघोषा' से निम्नलिखित भजन गाया :

मित्र दास पुत्र सेवक तनिको ।
पत्नी रोग घोर आपदे मरिबो ॥
तुमिसि हे सुहृद आत्मा प्रियतम ।
तथापि तोमाक न भजो कि मइ अधम ॥

उस समय उनकी आँखों से भक्तिपूरित अश्रु-धारा प्रवाहित हो रही थी। गाना समाप्त होने पर भावविह्वल वाणी में उन्होंने कहना शुरू किया :

"भगवान् का नाम जिस किसी दिन याद किया जाय हर समय इसके लिए उत्तम है। आज उसका नाम याद करने के लिए हमें एक विशेष निमित्त प्राप्त हुआ है। दुनिया के इतिहास से पता चलता है कि जहाँ कहीं भी मनुष्य हैं वहाँ पुण्य कर्म भी हैं और बुरे कर्म भी। मनुष्य के जितने भी दोष हैं वे शरीर से सम्बद्ध हैं और जो-कुछ गुण हैं उनका सम्बन्ध आत्मा से है। देह नश्वर है और आत्मा अनश्वर। इसलिए मनुष्य के दोषों को भूल जाना चाहिए और गुणों को याद रखना चाहिए। संसार में जितने भी सत्कर्म हुए हैं वे हम लोगों के ही किये हुए हैं इसी तरह जो दुष्कर्म हुए हैं वे भी हमारी ही कृतियाँ हैं—ऐसा सोचना चाहिए। हममें से प्रत्येक मनुष्य का प्रतिनिधि है। हम जितने भेदों की सृष्टि करते हैं मानव समाज उतने ही टुकड़ों में बँट जाता है। हम मानव-आत्मा को दूषित करते हैं। इस संसार के समस्त मानव मेरे हैं मैं भी उनका हूँ। यह बड़े आनन्द की बात है कि यहाँ विभिन्न धर्मों के, विभिन्न भाषाओं के भजन गाये गये। सभी धर्म सभी भाषायें मेरी हैं। मुझसे जब कोई प्रश्न करता है कि मैं कहाँ का निवासी हूँ,

रहा मैं कहता हूं कि जिस तरह ब्रह्मपुत्र नदी सभी देशों की है उसी तरह मैं भी सभी देशों का हूं। तिब्बती लोग कहेंगे : ब्रह्मपुत्र नदी हमारी है आसामिया लोग कहेंगे : हमारी है पूर्व पाकिस्तान के लोग कहेंगे : हमारी है। इस प्रकार ब्रह्मपुत्र नदी सभी देशों की है मैं भी उसी प्रकार सभी देशों का मनुष्य हूं।

"मैं जो एक देश-विशेष में पैदा हुआ हूं और एक देश-विशेष में मरूंगा यह एक संयोग-मात्र है। मुझे इस बात की बड़ी खुशी है कि आज मैं पाकिस्तान में बैठा हूं। यह भी मेरा देश है। मैं तो सोचता हूं कि सारा संसार मेरा है मैं सारे संसार का हूं। मैं जहाँ जहाँ जाता हूं, देखता हूं कि सब लोग मेरे अपने हैं। मैं लोगों के लिए जितनी चिन्ता करता हूं लोग उससे अधिक मेरे लिए चिन्ता करते हैं। इसलिए मैं स्वयं को समाज का कर्जदार मानता हूं। भूदान का काम या अन्य कोई भी काम मैं करूँ मुझे ऐसा नहीं लगता कि मैं किसी पर उपकार कर रहा हूं। मैं सोचता हूं कि मैं समाज का कर्ज चुका रहा हूं।

"आज जिन्ना साहब का निधन दिवस है। इसलिए आप लोग आज अधिक भूमि-दान करें। केवल उनका गुणगान करने से काम नहीं चलेगा। उनके नाम पर भूदान जैसा काम करें।"

भाषण के बाद विष्णुसहस्रनाम का पाठ किया गया। इसके बाद बाबा ने विश्राम किया।

साधारणतः प्रार्थना-सभा सन्ध्या चार बजे होती थी। उद्देश्य यह था कि पाँच बजे से पहले ही अर्थात् नमाज का समय होने से पहले ही सभा समाप्त हो जाय। आज की सभा का स्थान हाइस्कूल और हाजीपाड़ मदरसा के बीच का बड़ा मैदान था। वहाँ एक बड़ी मस्जिद है। मस्जिद के बड़े इमाम ने सूचित किया कि मस्जिद में सवा चार बजे अजान दी जाती है और दस-पन्द्रह मिनट में ही नमाज समाप्त हो जाती है। इसलिए सभा का समय साढ़े चार बजे रखा जाय, तो अच्छा हो। विनोबाजी ने यह प्रस्ताव सहर्ष स्वीकार कर लिया।

अब तक जितनी सभायें हुई थीं, उनमें से कोई भी आज की तरह विराट् नहीं थी। सभा की सजावट भी आज विशेष आकर्षक थी। सभा में लगभग २५ हजार लोग आये थे। आज विनोबाजी ने थोड़ा लम्बा भाषण किया। उन्होंने कहा :

मजहब-धर्म का पालन करना होगा

"आप लोगों का प्रेम और उत्साह देखकर बड़ा आनन्द हो रहा है। आज मेरी पाकिस्तान-यात्रा का पाँचवाँ दिन है। नौ दिन और बाकी रह गये हैं। पहले दिन से ही जन-समुद्र बढ़ता चला रहा है। भारत में सारे ग्यारह वर्षों में मैंने १ हजार मील से भी अधिक पदयात्रा की है। जब तक जीवित रहूँगा, तब तक इसी प्रकार प्रभु का काम करता रहूँगा। भारत में मैंने जो प्रेम और उत्साह देखा है वही यहाँ भी देख रहा हूँ। भारत में जितनी बड़ी-बड़ी सभायें हुई हैं यह सभा उनसे छोटी नहीं है। मैं अपने प्रति आप लोगों के प्रबल प्रेम की तरंग देख रहा हूँ। किन्तु यह देखना एक बात है और काम में प्रकाश देखना दूसरी बात। केवल ईमान या विश्वास रहने से ही काम नहीं चलेगा। उस पर अमल होना चाहिए उसे आचरण में उतार लेना चाहिए।

"आज कुछ लोगों ने एक अच्छा सवाल किया है। उन्होंने कहा है कि देश की उन्नति के लिए Industrialisation अर्थात् बृहत् औद्योगीकरण की जरूरत है। मैंने किसीको ऐसा करने से तो मना नहीं किया। पन्द्रह वर्षों में जनसंख्या बहुत बढ़ गयी है पर उस अनुपात में उद्योग नहीं बढ़े हैं—भारत में भी नहीं, पाकिस्तान में भी नहीं। प्रश्न यह है कि जो लोग काम न रहने के कारण भूखे हैं उनके लिए आज हम क्या कर सकते हैं? Industrialisation में मान लीजिये दस वर्ष लगेंगे। तो क्या हम उन भूखे लोगों से कहेंगे कि अभी अपनी भूख बर्दाश्त करो दस वर्ष बाद तुम लोगों के लिए प्रबन्ध हो जायगा? धर्म में क्या उधार चलता है? हमें मजहब-धर्म का पालन करना होगा। आज

गुड़ खायें और मरने के बाद उसका स्वाद मिले, यह कहाँ तक ठीक है ? गुड़ खाते ही मीठा लगता है। यही बात धर्म के भी बारे में है। मैं स्वयं तो खाना खा रहा हूँ, इसलिए यह देखना होगा कि दूसरों के लिए खाना खाने की क्या व्यवस्था कर पाया हूँ। आपके पास एक भूखा व्यक्ति आया, आपने उसे खाने को दिया। कुछ देर बाद उसे फिर भूख लगेगी। तब उसे पुनः खाना देना होगा। इस तरह बार-बार खाना देने से आलस्य बढ़ेगा, मनुष्यत्व नष्ट होगा। इसलिए धर्म से ही उसे जीविका का साधन देना होगा। इसके लिए उसे जमीन देनी होगी जिस पर सपरिवार परिश्रम करके वह भोजन पा सके। भूदान किसी एक देश की चीज नहीं है, यह तो सभी देशों के लिए है—विशेषकर एशिया महाखण्ड के लिए जहाँ जमीन कम है उद्योग-धन्धे भी कम हैं और लोग अधिक हैं। इस भूख की समस्या के समाधान के लिए हिंसात्मक मार्ग अपनाने से सब कुछ विनष्ट हो जायगा। प्रेम का ही मार्ग अपनाकर इस समस्या को हल करना होगा। इस्लाम का अर्थ है शान्ति, किन्तु पेट में भूख रहते से शान्ति किस प्रकार आयेगी ? इसलिए पहले चाहिए, भूख की शान्ति। चित्त की शान्ति बाद में होगी। इस्लाम कहता है कि सबको खिलाने के बाद खाओ। सभी धर्म यही बात कहते हैं। कुरान के सम्बन्ध में मैंने लिखा है, सभी धर्मों का सार मैंने यही पाया है : 'दुःखी की सेवा करो और भगवान् का नाम लो।'

"वैसिक डेमोक्रेसी अच्छी है यदि अच्छे लोगों को चुना जाय, अन्यथा फल बुरा होगा। अच्छे लोग कौन हैं ? क्या वे, जिनके पास पैसा है, या वे, जिनके पास जमीन्दारी है या वे जो शिक्षित हैं ? नहीं, अच्छे लोग वे हैं जिनके हृदय में दया है उदारता है, दानशीलता है। आप उन्हीं लोगों को चुनें नहीं तो नतीजा खराब निकलगा।

चम्बल के डाकुओं की कहानी : प्रेम की ज्योति मद्धिम पड़ी थी

"आपको भारत के चम्बल इलाके के डाकुओं की बात बताता हूँ।

दो वर्ष पहले मैं उस इलाके में घूमा था। पचास वर्ष से वहाँ डकैतियाँ हो रही हैं और दिन दिन बढ़ती ही जा रही हैं। सरकार ने पुलिस भेजी थी। पुलिस के भी हाथ में बन्दूक, डाकुओं के भी हाथ में बन्दूक और वहाँ के होमगार्ड के भी हाथ में बन्दूक। तीन बन्दूकें मिलकर वहाँ शान्ति कैसे स्थापित करतीं! मैं भगवान् पर विश्वास रखकर वहाँ गया और डाकुओं से मुलाकात कर बोला : 'तुम लोग यह किस तरह अपने क्या कर रहे हो? मनुष्य की हत्या करके लूटमार करके क्या तुम शान्ति पा सकोगे? मरने के बाद भी क्या तुम्हें शान्ति मिल पायेगी?' इन बातों ने डाकुओं के हृदय को छू लिया। बीस डाकुओं ने, एक-एक कर, बन्दूक-सहित आत्म-समर्पण कर दिया। मैंने बन्दूक-सहित उन्हें सरकार के सुपुर्द कर दिया। उनके पास दूरबीन लगी हुई अनेक आधुनिक कीमती बन्दूकें थीं। सरकार ने घोषणा कर रखी थी कि यदि कोई डाकुओं को पकड़ देगा, तो वह डाकू-पीछे पाँच हजार रुपये का इनाम देगी। तब ऐसे दुर्धर्ष डाकुओं ने वैसा क्यों किया? उन लोगों के हृदय में प्रेम की ज्योति मद्धिम पड़ गयी थी, मेरे स्पर्श से वह प्रकाश-मान हो गयी। ये डाकू गणतन्त्र के निर्वाचन में अपनी ताकत का इस्तेमाल करते थे, अपना प्रभाव बढ़ाते थे। वहाँ डाकुओं की सहायता से लोगों ने हजार-हजार रुपये इकट्ठे किये हैं राजनीतिक लोगों ने उनकी सहायता ली है और पैसे लिये हैं। पुलिसवालों ने भी उनसे पैसे लिये हैं। इस तरह जिन लोगों ने रुपये इकट्ठे किये हैं वे क्या लेजिस्लेटिव के सदस्य होने योग्य हैं? पढ़े लिखे लोगों की आँखों पर किताब का पर्दा आ जाता है उनका हृदय ढँक जाता है। इसलिए दयालु, दानशील हृदयवान् लोगों को चुनना चाहिए, तभी डेमोक्रेसी उत्तम होगी।

"पैगम्बर हजरत मुहम्मद पढ़े लिखे नहीं थे। एक दिन वे ध्यान मग्न थे तब अल्लाह की वाणी एक कागज पर उद्भासित हो उठी। किन्तु हजरत मुहम्मद ने कहा। 'मैं पढ़ना नहीं जानता।' तब अल्लाह के दूत को स्वयं आना पड़ा और मुहम्मद को अपनी वाणी सुनानी पड़ी।

हजरत मुहम्मद ने बाद में कहा : 'यदि मैं लिखना-पढ़ना जानता तो उस देश को ही लेकर समुद्र हो जाना पड़ता, ईश्वर के दर्शन न पाता। इसलिए लिखने-पढ़ने का विशेष मूल्य नहीं है। यूनियन कौंसिल के सदस्य चुनते समय उम्मीदवार के रुपये पर नजर रखने से काम नहीं चलेगा उसकी उदारता स्वाधीनता और दानशीलता पर ध्यान देना होगा।

भूदान : बेसिक डेमोक्रेसी का काम

"जनता में है आलस्य। हमारे देश का यह स्वभाव है कि लोग स्वयं दान नहीं करते माँगने से दान करते हैं दया करते हैं। इसलिए माँगनेवाले लोग चाहिए। मुझसे लोग पूछते हैं कि मेरे चले जाने के बाद भूदान का काम कौन चलायेगा ? मुझे आशा है कि बेसिक डेमोक्रेसी के सदस्यगण यह काम करते रहेंगे। पाकिस्तान में यूनियन कौन्सिल के अस्सी हजार सदस्य हैं। ये सदस्यगण यदि य" काम हाथ में लें तो भूदान-यज्ञ सार्थक हो जायगा। "श्वर ने ही यह व्यवस्था कर रखी है कि मेरे इस भूदान का काम यूनियन कौन्सिल के सदस्य करेंगे—अस्सी हजार सदस्य यह काम करेंगे। वे स्वयं दान करेंगे। दान देने और दान-संग्रह करने की सदिच्छा यदि न हो तो बेसिक डेमोक्रेसी का सदस्य होने की योग्यता कैसे होगी ? यह काम प्रेम का है सेवा का है, करुणा का है। यह प्रेम की बात मैंने सारे भारत में सुनायी है यहाँ भी सुना रहा हूँ।"

इसके बाद यथानियम मौन प्रार्थना हु" और १७ बीघा का एक दान मिलने की घोषणा की गयी। बाबा ने बातचीत के प्रसंग में कई बार कहा है कि "एक एकड़ जमीन का भी दान मिलता है तो मैं समझता हूँ कि मेरा एक दिन सार्थक हुआ; क्योंकि एक एकड़ जमीन से एक व्यक्ति की जीविका की व्यवस्था हो जाती है।" इस दृष्टि से देखने पर आज तक के सातों दिन यहाँ सार्थक हुए।

सभा के अन्त में भीड़ के कम हो जाने के बावजूद लोग आते थे। बाबा बाहर आकर उन लोगों के बीच थोड़ी देर घूमे।

अगले दिन का पड़ाव मीरबाग नाम का एक छोटा गाँव था : दूरी थी आठ मील। वहाँ पहुँचने के लिए तिस्ता नदी पार करनी थी। सन्ध्याकालीन प्रार्थना में बाबा ने बताया कि यात्रा रात साढ़े तीन बजे शुरू होगी। मीरबाग में रेलवे स्टेशन है, इसलिए तिस्ता से सामान सुबह की ट्रेन से ले जाने का निश्चय हुआ। ●

देखा, सिर के ऊपर कापुरुष। नदी का चेहरा तो हम देख नहीं पा रहे थे। हाँ, एक छोटे भंवर में नाव एक-दो बार घूमी, पुल के सिवाय खम्भ में एक-दो बार टकरायी भी। सम्भवतः माँझी तत्पर न थे नाव उस पार ले गये।

नदी के उस पार कीर्तनिया दल पुष्प-दीप हाथ में लेकर उपस्थित था। उन लोगों के हाथ में थे मृदंग तथा हारमोनियम और मुँह में थी राम-नाम के उच्चारण की व्यग्रता। बाबा की आरती उतारने और उन्हें प्रणाम करने के बाद पूछा गया। "हम कीर्तन करें बाबा?" बाबा ने सम्मति दी। कीर्तन शुरू हुआ। इस पार भी कुछ देर रेल-लाइन की बगल से चलना पड़ा और तब हम एक बड़े रास्ते पर पहुँचे। बाबा कम बड़े रुककर बाबा ने कीर्तनिया दल से कहा। "अब शान्तिपूर्वक चलें।" वे अपने प्रातःकालीन दुग्ध-पान के बाद पुनः चलने लगे।

यहाँ बाबा के आहार के सम्बन्ध में थोड़ा उल्लेख कर दूँ। उनका दिन का आहार है दो सेर दूध। इसमें दूध से दही पनीर, पनीर का पानी आदि के रूप में चार-पाँच बार में लेते हैं। इसके अतिरिक्त, दोपहर के समय में खूब अच्छी तरह उबाली हुई लगभग दो छटांक सब्जी लाते हैं। यही उनका दैनिक आहार है।

सात बजे के कुछ देर बाद हम अपने पड़ाव पर, मीरबाग स्कूल में पहुँचे। चलने के रास्ते में और स्कूल के प्रांगण में अनेक लोग जमा थे। बाबा ने वहाँ पहुँचते ही उन्हें सम्बोधित कर कहा :

शान्ति : सभी धर्मों की घोषणा

"आज मेरी पाकिस्तान-यात्रा का आठवाँ दिन है। रास्ते में कई लोगों ने ईश्वर के नाम का कीर्तन किया। खूब आनन्द मिला। इस कीर्तन में तीन नाम हैं : राम कृष्ण और हरि। राम हमें आनन्द देते हैं कृष्ण हमारे मन को आकर्षित करते हैं और हरि अन्त में हमारे प्राण हरते हैं शान्ति देते हैं। किन्तु ये सब तो एक ही ईश्वर के भिन्न-भिन्न नाम

है। इस्लाम में भी एक अल्लाह की बात कही गयी है किन्तु उनके नाम अनेक हैं। मनुष्य अपनी पसन्द के अनुसार ईश्वर के विभिन्न नाम ले सकता है। किन्तु सब मिलकर यदि भगवान् का नाम लें, तो सबके हृदय मिल जायेंगे, इसे ही शान्ति कहते हैं। हिन्दू लोग नित्यप्रति शान्ति-मन्त्र का उच्चारण करते हैं। इस्लाम का अर्थ ही शान्ति है। किसीसे मुलाकात होने पर 'अस्सलाम आलेकुम' बोलकर अभिवादन किया जाता है अर्थात् आपके जीवन में शान्ति रहे; प्रत्यभिवादन में भी शान्ति-कामना ही होती है। ईसाई धर्म में कहा जाता है—Grace be unto you and peace from God अर्थात् ईश्वर की ओर से आप पर करुणा और शान्ति की वर्षा हो। शान्ति की घोषणा सभी धर्मों में है। आज केनेडी और ख्रुश्चेव शान्ति की बात कर रहे हैं किन्तु मन में सोचते हैं कि शस्त्र के बिना शान्ति नहीं होती। यह विश्व-शान्ति की समस्या एक बड़ी समस्या है। दूसरी बड़ी समस्या भूख की समस्या है। तो एक शान्ति चाहिए भूख की और दूसरी चित्त की। इन दो शान्तियों के रहने पर दुनिया में नास्तिकता नहीं रहती। गत महायुद्ध में भाग लेनेवाले सभी पक्ष एक ही धर्म के माननेवाले थे—ईसाई धर्म के माननेवाले। आस्तिक लोग यदि झगड़ा करें तो नास्तिकता की ही वृद्धि होगी। यदि वे लड़ाई न करके प्रेमपूर्वक रहें, दुखियों का दुःख दूर करने की कोशिश करें तो पृथ्वी पर से नास्तिकता मिट जायगी।

"गाँव के लोगों के दुःख यदि गाँववाले ही दूर नहीं करेंगे, तो कौन करेगा? फिर यदि सरकारी सहायता आये तो क्या सभी काम किया जायगा? मान लीजिये कि किसीका बच्चा बीमार हुआ। अब क्या वह स्वास्थ्य-मन्त्री को तार देगा कि जल्दी से सहायता भेजो और जब तक सहायता नहीं आयगी तब तक उसकी प्रतीक्षा में बैठा रहेगा? उसकी चिकित्सा की व्यवस्था उसी गाँव को ही करनी होगी।

"यहाँ की यूनियन कौंसिल के एक चेयरमैन भाई ने मेरा परिचय रखा है। पाकिस्तान में आठ हजार चेयरमैन हैं—वे लोगों की उन्नति

के काम करेंगे। उनसे, यूनियन कौंसिल के सदस्यों से, मेरा निवेदन है कि वे गरीबों के लिए भूदान का काम हाथ में ले लें। मुझे खिलाने के लिए आप लोगों ने अच्छी व्यवस्था की है। किन्तु वह खाना मुझे मीठा नहीं कड़वा ही लगेगा यदि गरीबों के लिए आप कुछ नहीं करेंगे। आप सब लोग बैठकर विचार-विमर्श करें और देखें कि कितनी जमीन दे सकते हैं।"

इसके बाद बाबा स्नान-विश्राम करने गये। आज पड़ाव में जगह की कमी थी। स्कूल-भर की दीवारें भी टिन की थीं और छतें भी। दोपहर के समय घर धूप से तप हो उठा। बाहर भी धूप बड़ी तेज थी। फिर भी लोगों की भीड़ कम नहीं थी। स्कूल के आंगन में शामियाना लगा था। लोगों को उसी शामियाने के नीचे बैठने को कहा गया। स्थानीय लोगों ने बीच-बीच में आकर मुलाकात की। बाबा ने उनसे भूदान के ही बारे में बातचीत की।

कालिन्दी बहन ने अपनी डायरी में लिखा है : "विमला पदयात्रा के समय साथ नहीं रह पाते। भोजन-प्रबन्ध की जिम्मेदारी उन पर होती है। बाबा के साथ उनकी खूब बातचीत होती है। आज उन्होंने बाबा से पूछा : 'मुक्ति तो सभी लोगों के लिए होनी चाहिए। अकेले कोई व्यक्ति क्या मुक्ति पा सकता है?'

"बाबा ने कहा : 'मुक्ति कहीं से पाने की चीज तो है नहीं। वह तो सामने है केवल उसे पहचानना है। मुक्ति यदि प्राप्त करने की चीज हो तो कभी पा ही नहीं सकती। मुक्ति बाहर में है क्या? अहंकार से मुक्ति, विकार से मुक्ति। जहाँ मुक्ति पाने की चिन्ता होती है वहाँ अहंकार रहता है वह तो मुक्ति नहीं हो है। वहाँ मुक्ति रह ही नहीं सकती। जहाँ अहंकार से विकार से मुक्ति मिल चुकी है वहीं मुक्ति है। अब यदि आप कहते हैं कि मुक्ति समग्र भाव से सबकी होनी चाहिए, तो ऐसा कैसे होगा? जो उससे परिचय कर सकेगा वही परिचय पायेगा। जो नहीं कर सकेगा वह परिचय नहीं पायेगा। सबको मौका आने पर

ही मुझे नींद आयेगी, ऐसा कोई नहीं कहेगा। नींद जिसे आयेगी, उसे ही आयेगी। मुक्ति के सम्बन्ध में भी यही बात है'।"

पड़ाव पर खाने-पीने की व्यवस्था स्थानीय हिन्दू मुसलमों द्वारा किये जाने पर भी स्कूल के प्रांगण में ही छावनी डालकर पकाने का प्रबन्ध किया गया था। यह देख मैंने अपने पदयात्री कार्यकर्ताओं तथा स्त्रियों से कहा कि वे स्वयं भोजन पकाने और परोसने का भार ग्रहण करें—सीधे-सादे ढंग से खिचड़ी बनायें। यही किया गया और आसानी से, थोड़े ही समय में, खाने-पीने का काम पूरा हो गया। रात में भी यही व्यवस्था चली।

नोआखाली के आमकी गाँव के एक कविराज मोहनगिरि मठ के भक्त और शिष्य श्री यशोदाकुमार दे को सवेरे पड़ाव पर पहुँचते ही देखा था। वे रामपुर होकर यहाँ आये थे। वे विनोबाजी के साथ कुछ दिन रहना चाहते थे। वे गांधीजी के अनुरागी और नोआखाली गांधी आश्रम के बन्धु थे।

अपराह्न-काल चार बजे नियमानुसार प्रार्थना-सभा हुई। यह स्थान एक छोटा-सा गाँव है फिर भी सभा में पाँच हजार से अधिक लोग जमा हुए। विनोबाजी ने अपने प्रार्थना-प्रवचन में कहा :

मनुष्य का दुःख दूर करें

"आज पाकिस्तान में मेरी पदयात्रा का आठवाँ दिन है। आज बहुत गर्मी है। आप लोग बड़ी देर से धूप में बैठे हैं इसलिए आपका विशेष समय नहीं लूँगा। मुझे अनेक धर्मों का अध्ययन करने का सुयोग मिला है। सभी धर्मों का सार मैंने यही पाया है कि मनुष्य का दुःख दूर करें। भगवान् ने जो मनुष्य का जीवन दिया है उसे सार्थक करना होगा—प्रेम और सेवा के सहारे। उसके लिए त्याग करना कठिन काम नहीं है बल्कि आनन्द का काम है। माँ पहले सन्तान को खिलाती है फिर स्वयं खाती है कभी कभी बिना खाये भी रह जाती है। माँ का यह

त्याग प्रेम के लिए होता है इसीलिए उसे कष्ट-बोध नहीं होता। किसी माँ को अपनी सेवा की रिपोर्ट देने के लिए कहा जाय तो क्या वह दे सकेगी? नहीं दे सकेगी कहेगी कि मैंने क्या किया है? किन्तु किसी सचिवालय के कर्मचारी को रिपोर्ट देने के लिए कहा जाय, तो वह ५०-६० पृष्ठों की एक लम्बी रिपोर्ट देगा। सम्भव है, उसका कोई फोटो भी साथ रहे जब कि हो सकता है वस्तुतः उसकी सेवा वर्ष में कुछ-एक दिनों की ही हो। किन्तु माँ अपनी सन्तान-सेवा की रिपोर्ट नहीं दे सकती क्योंकि उसकी सेवा का सम्बन्ध प्रेम से है। यह प्रेम की व्यवस्था भगवान् ने घर-घर में कर रखी है। मैं सबसे कहता हूँ। प्रेम आप सबके घर में है, उसे बाहर प्रसारित कर दें। सन्तान की सेवा करके, स्वयं कष्ट भोग कर, उसे प्यार करके माँ आनन्द ही पाती है। जो लोग सबको प्यार करके, उनके लिए त्याग करेंगे उनके त्याग में कितना आनन्द होगा इसका तनिक अनुमान लगाइये, हिसाब कीजिये।

"मैंने एक युवक से पूछा था: 'तुमने डेढ़ महीने की छुट्टी में क्या क्या किया?' उसने कहा: 'कुछ भी नहीं।' मैंने कहा: 'तुमने रोज तीन बार खाया है आठ घण्टे सोये हो फिर भी कहते हो कुछ नहीं किया?' अर्थात् उसने दूसरों के लिए, समाज के लिए, कुछ भी नहीं किया; इसीलिए उसने कहा कि कुछ नहीं किया। मनुष्य यदि दूसरों के दुःख से दुःखी और दूसरों के सुख से सुखी न हो तो पशु और उसमें अन्तर ही क्या है? मनुष्य का लक्षण ही यह है कि वह अपने ही सुख-दुःख में खोया नहीं रहता। दूसरों का दुःख दूर करता है दूसरों के सुख से सुखी होता है। इसीलिए मनुष्य महात्मा फकीर-औलिया ऋषि-मुनि के प्रति श्रद्धा-भाव रखता है। सब लोग उनके प्रति श्रद्धा रखते हैं। यहाँ तक कि जो लोग चोरी-डकैती करते हैं, वे भी अपनी चोरी डकैती को तो नीची नजर से देखते हैं और इन महान् लोगों के प्रति श्रद्धाभाव रखते हैं।

"मैं इसी मानव-धर्म की प्रेम की थाली बाँटता फिर रहा हूँ और

इसी कारण सबसे कह रहा हूँ कि आप लोगों में से जिन-जिनके पास जमीन है, वे गरीबों के लिए कुछ जमीन दें। विगत सारे ग्यारह वर्षों में इसी प्रकार ४ लाख एकड़ से अधिक जमीन प्राप्त हुई है, और जिन लोगों ने जमीन दी है वे हमारी-आपकी तरह ही साधारण मनुष्य हैं। पाकिस्तान में यूनियन कौंसिल के ८ हजार सदस्य हैं और उनमें से भी ८ हजार चेयरमैन हैं। यदि वे भूदान का काम अपना लें, तो बड़ा अच्छा हो। वे स्वयं जमीन का दान करें और दूसरों से दान करायें। मैं जो दान मुझे मिल रहे हैं उनमें से अनेक दाता हिन्दू हैं और प्राप्तकर्ता मुसलमान। फिर, मुसलमान दाता हैं और हरिजन प्राप्त कर्ता। इस तरह दान से सबके हृदय जुड़ जायेंगे—जाति-भेद, साम्प्रदायिक भेद धनी-गरीब के भेद सारे भेद मिट जायेंगे। जो हृदय से हृदय मिलाने का काम करते हैं वे सबके प्रिय होते हैं। यदि मैं सबके बीच भेद-भाव बढ़ाकर झगड़ा कराता, तो क्या पाकिस्तान सरकार मुझे इस देश में आने की अनुमति देती ? सरकार ने सोचा—यह आदमी झगड़ा नहीं कराता आग नहीं लगाता बल्कि आग बुझाने परस्पर प्रेम बढ़ाने का काम करता है। इसीलिए उसने मुझे इस देश में आने की अनुमति दी। जो व्यक्ति यह काम करता है सभी देश उसके स्वदेश हैं। कुरान में कहा है 'मिम्मा रजक्ना हुम युन् फिकुन'—अर्थात् अल्लाह ने तुम्हें जो कमाई दी है उसमें से गरीबों के लिए खर्च करो। यह बात सभी लोगों के लिए कही गयी है केवल धनिकों के लिए नहीं। जो आदमी आपसे अधिक दुःखी है उसकी ओर देखें और उसे सहायता पहुँचायें। पानी से शिक्षा ग्रहण कीजिये—पानी ऊपर की ओर नहीं जाता उसका स्वभाव नीचे की ओर आने का है। कुएँ से एक बाल्टी पानी निकालिये—उसी क्षण चारों ओर से पानी आकर उस शून्य स्थान की पूर्ति कर देगा—शून्य स्थान को मैं ही नहीं छोड़ देगा। किन्तु चावल के ढेर से अगर कुछ चावल उठा लें तो उस स्थान पर एक गड्ढा बन जायगा। दो-चार चावल ही उस गड्ढे को भरने के लिए

त्याग प्रेम के लिए होता है, इसीलिए उसे कष्ट-बोध नहीं होता। किसी माँ को अपनी सेवा की रिपोर्ट देने के लिए कहा जाय, तो क्या वह दे सकेगी? नहीं दे सकेगी। कहेगी कि मैंने क्या किया है! किन्तु किसी प्रतिष्ठान के कर्मचारी को रिपोर्ट देने के लिए कहा जाय, तो वह ५०-६० पृष्ठ की एक लम्बी रिपोर्ट देगा। सम्भव है, उसका कोई फोटो भी साथ दे, जब कि हो सकता है वस्तुतः उसकी सेवा कर्म में कुछ-एक दिनों की ही हो। किन्तु माँ अपनी सन्तान-सेवा की रिपोर्ट नहीं दे सकती, क्योंकि उसकी सेवा का सम्बन्ध प्रेम से है। यह प्रेम की व्यवस्था भगवान् ने घर-घर में कर रखी है। मैं सबसे कहता हूँ। प्रेम आप सबके घर में है, उसे बाहर प्रसारित कर दें। सन्तान की सेवा करके, स्वयं कष्ट भोग कर, उसे प्यार करके माँ आनन्द ही पाती है। जो लोग सबको प्यार करके, उनके लिए त्याग करेंगे उनके त्याग में कितना आनन्द होगा इसका तनिक अनुमान लगाइये हिसाब कीजिये।

"मैंने एक युवक से पूछा था : तुमने डेढ़ महीने की छुट्टी में क्या क्या किया? उसने कहा : 'कुछ भी नहीं।' मैंने कहा : 'तुमने रोज तीन बार खाया है आठ घण्टे सोये हो फिर भी कहते हो कुछ नहीं किया? अर्थात् उसने दूसरों के लिए, समाज के लिए, कुछ भी नहीं किया; इसीलिए उसने कहा कि कुछ नहीं किया। मनुष्य यदि दूसरों के दुःख से दुःखी और दूसरों के सुख से सुखी न हो तो एक पशु और उसमें अन्तर ही क्या है? मनुष्य का लक्षण ही यह है कि वह अपने ही सुख-दुःख में खोया नहीं रहता। दूसरों का दुःख दूर करता है दूसरों के सुख से सुखी होता है। इसीलिए मनुष्य महात्मा, फकीर-औलिया ऋषि-मुनि के प्रति श्रद्धा-भाव रखता है। सब लोग उनके प्रति श्रद्धा रखते हैं। यहाँ तक कि जो लोग चोरी-डकैती करते हैं, वे भी अपनी चोरी-डकैती को तो नीची नजर से देखते हैं और इन महान् लोगों के प्रति श्रद्धाभाव रखते हैं।

"मैं इसी मानव-धर्म की प्रेम की वाणी बोलता फिर रहा हूँ और

इसी कारण सवाल कर रहा हूँ कि आप लोगों में से जिन-जिनके पास जमीन है, वे गरीबों के लिए कुछ जमीन दें। पिछले साढ़े ग्यारह वर्षों में इसी प्रकार ४ लाख एकड़ से अधिक जमीन प्राप्त हुई है, और जिन लोगों ने जमीन दी है वे हमारी-आपकी तरह ही साधारण मनुष्य हैं। पाकिस्तान में यूनियन कौंसिल के ८ हजार सदस्य हैं और उनमें से भी ८ हजार चेयरमैन हैं। यदि वे भूदान का काम अपना लें तो बड़ा अच्छा हो। वे स्वयं जमीन का दान करें और दूसरों से दान करायें। ये जो दान मुझे मिल रहे हैं, उनमें से अनेक दाता हिन्दू हैं और प्राप्तकर्ता मुसलमान। फिर, मुसलमान दाता हैं और हरिजन प्राप्तकर्ता। इस तरह दान से सबके हृदय जुड़ जायेंगे—जाति-भेद साम्प्रदायिक भेद धनी-गरीब के भेद सारे भेद मिट जायेंगे। जो हृदय से हृदय मिलाने का काम करते हैं वे सबके प्रिय होते हैं। यदि मैं सबके बीच भेद-भाव बनाकर झगड़ा कराता तो क्या पाकिस्तान सरकार मुझे इस देश में आने की अनुमति देती? सरकार ने सोचा—यह आदमी झगड़ा नहीं कराता आग नहीं लगाता बल्कि आग बुझाने, परस्पर प्रेम बढ़ाने का काम करता है। इसीलिए उसने मुझे इस देश में आने की अनुमति दी। जो व्यक्ति यह काम करता है सभी देश उसके स्वदेश हैं। कुरान में कहा है : 'मिम्मा रज़क्ना हुम युन्फ़िकून'—अर्थात् भगवान ने तुम्हें जो कमाई दी है उसमें से गरीबों के लिए खर्च करो। यह बात सभी लोगों के लिए कही गयी है केवल धनिकों के लिए नहीं। जो आदमी आपसे अधिक दुःखी है उसकी ओर देखें और उसे सहायता पहुँचायें। पानी से शिक्षा ग्रहण कीजिये—पानी ऊपर की ओर नहीं जाता उसका स्वभाव नीचे की ओर आने का है। कुएँ से एक बाल्टी पानी निकालिये—उसी क्षण चारों ओर से पानी आकर उस शून्य स्थान की पूर्ति कर देगा—शून्य स्थान को वैसे ही नहीं छोड़ देगा। किन्तु चावल के ढेर से अगर कुछ चावल उठा लें, तो उस स्थान पर एक गड्ढा बन जायगा। दो-चार चावल ही उस गड्ढे को भरने के लिए

जाते हैं बाकी अपनी जगह पर बने रह जाते हैं इसलिए गड्ढा रह जाता है पानी की तरह भरता नहीं—भेद रह जाता है। इस भेद को दूर करने के लिए, हृदय जोड़ने के लिए, पानी की ही तरह बह जाना होगा।

"मैं कहता हूँ : जय जगत्। मैं सोचता हूँ कि कहीं के भी लिए मैं विदेशी नहीं हूँ—मैं दुनिया का निवासी हूँ, सबका प्रेम मैं पा रहा हूँ, सबको प्रेम के साथ हृदय जोड़ने के लिए कह रहा हूँ। मैं कहता हूँ कि सब लोग गरीबों के लिए भूमिदान करें।"

प्रवचन के बाद मौन प्रार्थना हुई। सभा का स्थान—स्कूल का मैदान थोड़ा नीचा था और पिछले दिन वर्षा होने के कारण वहाँ पानी जमा हो गया था—कीचड़ था फिर भी अनेक लोग वहीं बैठ गये और शान्तिपूर्वक मौन बैठे रहे। इस छोटे से गाँव में पाँच दान-पत्र मिले। कुछ देर बाद नये दर्शनार्थियों के आ जाने के कारण बाबा मैदान के एक भाग में थोड़ा घूमते रहे। दर्शनार्थी लोग बाबा को देखकर प्रसन्न-मन धीरे धीरे जाते रहे फिर भी शाम तक अनेक लोगों की भीड़ बच गयी। उस समय तक ठंडी-ठंडी हवा चलने लगी थी। बाबा बाहर आकर एक चौकी पर बैठ गये—लोग उन्हें चारों ओर से घेरकर खड़े रहे। बाबा ने 'गीता-प्रवचन' की कई प्रतियों पर हस्ताक्षर किये।

अगले दिन जिले के सदर मुकाम रंगपुर में पड़ाव पड़नेवाला था और रास्ते में खूब भीड़ होनेवाली थी इसलिए आशादेवी और सरला अग्रगामी दल के साथ शाम को ही ट्रेन से रंगपुर चली गयीं।

सन्ध्या से पहले सदर के S D O साहब आये। उनके साथ उनके छोटे बच्चे थे—बाबा के साथ उनका परिचय करा दिया। हम लोग अब उनके इलाके में पहुँच गये थे। इसलिए उन्होंने सरकार की ओर से बाबा की यात्रा की व्यवस्था की।

●

९ नवाँ दिन[*] माता-पिता, शिक्षक, साहित्यकार : समाज के संचालक

रात के अन्तिम पहर में साढ़े तीन बजे, बाबा पदयात्री-दल के साथ रवाना हुए। आज से माल-असबाब के आने की व्यवस्था में पहले की अपेक्षा सुधार हुआ। इसलिए विश्वभाई को सामान के साथ नहीं जाना पड़ा, योगेशभाई अकेले ही गये। इन कुछ दिनों की पदयात्रा में विश्वभाई को विनोबाजी के साथ चलने का अवसर नहीं मिला था—आज पहली बार उन्हें इसका अवसर मिला। चलते-चलते भीड़ क्रमशः बढ़ती गयी। रंगपुर शहर के प्रवेश-द्वार (यानी जहाँ से शहर का आरम्भ माना जा सकता है) माहीगंज (पीरगंज से पाँच मील की दूरी पर) में रंगपुर के विशिष्ट लोगों ने आकर बाबा को मालाएँ अर्पित कीं और उनका स्वागत किया। पाकिस्तान की राष्ट्रीय सभा के सदस्य जनाब मतीउर्रहमान साहब के घर पर रंगपुर का पड़ाव निश्चित किया गया था। वे भी वहाँ आये। वहाँ से पड़ाव तीन मील दूर था।

सिलहट के समाज-सेवक सर्वश्री प्रमथनाथ दास और यतीन्द्रचन्द्र भद्र कल से रंगपुर आकर प्रतीक्षा कर रहे थे—वे भी इस अग्रिम स्वागतकारी दल के साथ आये। सुहासिनीजी ने भी वापस आकर रंगपुर में पदयात्री-दल का साथ दिया। विनोबाजी पदयात्री-दल के साथ शहर की ओर बढ़े। लोगों की भीड़ बढ़ती गयी, कार्यकर्ताओं की संख्या भी बढ़ती गयी। बाबा ने छह बजे एक स्थान पर रुककर दूध लिया। एक जगह उन्होंने देखा कि भीड़ की रोकथाम की कोशिश हो रही है; तुरन्त बोले : "मुझे भीड़ से कोई तकलीफ नहीं होती। सबको आने दो।" किन्तु पीछे से लोगों के रेले के धक्के उनके पाँवों में लोगों के पाँवों की

[*] नवाँ दिन ११ सितम्बर—पीरगंज से रंगपुर—८ मील।

वर्षा की सम्भावना देख मैंने कुछ लोगों को पंक्तिबद्ध हो, हाथ पकड़कर चलने को कहा। इससे चलने में सुविधा हुई। इस प्रकार चलते-चलते जब हम पड़ाव से लगभग आधा मील दूर रह गये, तब जोरों की वर्षा शुरू हो गयी। लोग इधर-उधर भागने लगे। बाबा मस्तीपूर्वक पानी में भीगते-भीगते चलते रहे। उस समय उनके साथ तेज चाल से चलना कठिन हो गया। प्रायः साढ़े सात बजे भीगे कपड़ों में हम पड़ाव पर पहुँचे। मालदा की व्यवस्था थी। इस वर्षा में भी बहुत-से लोग पड़ाव के प्रांगण में जमा हुए। लोगों ने एक रवीन्द्र-संगीत गाकर पड़ाव पर बाबा का स्वागत किया। संगीत के अन्त में बाबा ने जो भाषण किया, उसका सार यह था :

जल-वृष्टि : ईश्वर की आशीष-वृष्टि

"अभी तो अधिक कुछ कहने का समय नहीं है। ऊपर से जब भी वर्षा होती है तो मैं उसे भगवान की आशीष-वर्षा मानता हूँ। वर्तमान युग विज्ञान का युग है—अब सब देशों को मिलकर एक होना पड़ेगा। विज्ञान ने संसार के देशों की बाहरी दूरी तो कम कर दी है पर अन्तर की दूरी बढ़ा दी है। अब अवस्था यह है कि हम या तो मिल-जुलकर प्रेमपूर्वक रहें या एक साथ नष्ट हो जायँ। इस समय सबसे बड़ी समस्या विश्व-प्रेम और विश्व-शान्ति की है। इसीलिए मैं कहता हूँ 'जय जगत्'!"

कालिन्दी बहन ने अपनी डायरी में लिखा है : 'आज यहाँ आकर नौ दिन पूरे हुए। आज रात बीतने पर पूरी नवरात्रि होगी।* इन नौ दिनों में क्या हुआ है? कोई चमत्कार तो हुआ नहीं। किन्तु क्या सचमुच कुछ भी नहीं हुआ? यहाँ के लोगों को निश्चय ही एक नवीन विचार मिला है। प्रेम की बातें करनेवाला यात्री आता है और प्रेम के साथ-साथ ज्ञान भी दे जाता है। लोगों के हृदय खुलने के साथ-साथ बुद्धि भी प्रकाश का भाग पाती है।

---

*नवरात्रि गुजरात और महाराष्ट्र का एक धार्मिक त्योहार या अनुष्ठान है। यह अनुष्ठान आश्विन शुक्ल नवमी को होता है।

आवश्यकता है। मैं जय जगत्' कह रहा हूँ—इसका परिणाम ही World Federation होगा।

प्रश्न : साम्प्रदायिकता की समस्या क्या केवल हमारे और आपके देश में ही है?

'उत्तर : मैं ऐसा अनुभव नहीं करता। जन-गण में ऐसा कोई भाव है—यह मैं नहीं मानता। ऐसा भाव न तो मैंने यहाँ देखा, न भारत में। किन्तु समय-समय पर कोई राजनीतिक प्रश्न उठते ही देखता हूँ कि साम्प्रदायिकता की समस्या उठाकर अनुकूल अवसर प्राप्त किया जाता है।

"प्रश्न : आप प्रेम का प्रचार करते हैं। इस जबलपुर, अलीगढ़, आसाम में जो दंगे हुए हैं ये क्या प्रेम के विरुद्ध नहीं हैं?

"उत्तर : मेरे जीवन दर्शन के विरुद्ध हैं। झगड़ा दुनिया में खूब चल रहा है। इसके लिए प्रचार की जरूरत है। इसीलिए मैं पैदल घूम रहा हूँ। दुनिया में क्या हो रहा है—प्रश्न इसका नहीं है। प्रश्न यह है, समस्या यह है कि दुनिया बनेगी कैसे। भारत में शान्ति-सेना संगठित की गयी है। जहाँ कहीं अशान्ति दिखायी पड़ती है, वहाँ शान्ति-सेना पहुँच जाती है।"

थोड़ी देर बाद ही रंगपुर के साहित्यकार लोग आये। उनसे बातचीत के क्रम में विनोबाजी ने कहा :

साहित्यकार की भूमिका : संसाराभिमुखी विश्वाभिमुखी, आत्मिक

'आप सब लोग तो साहित्यकार हैं। भविष्य में संसार में साहित्यकारों का गौरव और भी बढ़ेगा। प्राचीन काल से ही साहित्यकारों का गौरव चला आ रहा है। संसार में कितने बड़े-बड़े महाकवि हो गये हैं—होमर ने ग्रीक भाषा में, मिल्टन ने अंग्रेजी भाषा में, गेटे ने जर्मन भाषा में, टॉलस्टाय ने रूसी भाषा में, विक्टर ह्यूगो ने फ्रेंच भाषा में, रवीन्द्रनाथ ने बंगला भाषा में काव्य और साहित्य की रचना की है। इस प्रकार

सबने अपनी-अपनी भाषा में लिखा है। वे उसी भाषा में लिख सकते हैं जिसमें उनका पालन पोषण होता है। बचपन से मा-बाप और पड़ोसियों से जो भाषा वे पाते हैं उसी भाषा में वे लिखते हैं—यह साधारण नियम है। विशेष अवस्थाओं में इस नियम का उल्लंघन हो सकता है। अरविन्द बचपन में ही विलायत भेजे गये थे अतः बंगला भूल गये थे। उन्होंने अंग्रेजी, फ्रेंच लैटिन और ग्रीक भाषाओं में प्रवीणता प्राप्त की थी। स्वदेश लौटने पर उन्हें बंगला भाषा नये सिरे से सीखनी पड़ी। उन्होंने गुजराती मराठी तमिल और संस्कृत भी सीखी। संस्कृत का उन्होंने खूब अच्छी तरह अध्ययन किया था फिर भी बाद में जब उन्होंने वेद उपनिषद् और योगसूत्र के सम्बन्ध में लिखा और 'सावित्री' नामक काव्य-रचना की, तब सब अंग्रेजी में ही लिखा। यह एक विशेष घटना है। साधारणतः अपनी ही भाषा में साहित्य-रचना की जाती है—किन्तु साहित्यकार की विशेषता इसमें है कि वह अपने आसपास के वातावरण से ऊपर उठे।

"संस्कृत भाषा में 'कवि' का अर्थ क्रान्तद्रष्टा है जो बहुत दूर तक देख सके, अर्थात् दूरदर्शी। रवीन्द्रनाथ ने जो-कुछ लिखा है वह सब भाषा बंगाल की पृष्ठभूमि में। उनके साहित्य पर पूर्व का प्रभाव बहुत है। साहित्य और प्रकृति का बड़ा घनिष्ठ सम्बन्ध है। रवीन्द्रनाथ का पूर्व बंगाल की प्रकृति से अन्तरंग सम्पर्क था। इसीलिए उनके काव्य पर पूर्व का इतना प्रभाव है। फिर भी रवीन्द्रनाथ का Approach (अभि-व्यक्ति) विश्वव्यापी है। इसी कारण उनका साहित्य समग्र संसार में लोक-प्रिय है। आज जितने लोग उनका साहित्य पढ़ रहे हैं उनसे कहीं अधिक लोग भविष्य में उसे पढ़ेंगे और आनन्द पायेंगे। कारण उनका साहित्य काल की सीमाओं से घिरा नहीं है। जिनका चित्त स्थान और काल के बन्धन में नहीं बँधा है वही साहित्यकार हो सकते हैं। जिनका चित्त स्थान और काल की सीमाओं में बँधा है वे अपने युग को कुछ प्रेरणा भले दे दें किन्तु वह प्रेरणा टिकेगी नहीं। साहित्यकार का मन स्थान एवं काल से ऊपर होना चाहिए—परन्तु इसका मतलब यह नहीं

है कि वे स्थान और काल को पहचानते नहीं या स्थान एवं काल के लिए उन्हें कुछ करना नहीं है। अपने स्थान और काल की दृष्टि उनमें निश्चय ही रहती है। किन्तु उनकी अन्तर्दृष्टि स्थान-कालातीत होगी। जो लोग श्रेष्ठ साहित्यकार हैं वे प्रत्येक मनुष्य का सूक्ष्मातिसूक्ष्म दर्शन पाते हैं और दूसरों के चित्त विकार को मापने में सक्षम होते हैं। ऐसा कैसे होता है? इस तरह कि उनका अपना चित्त विकारमुक्त रहता है। यदि उनके अपने मन में कोई विकार रहा, तो वे दूसरों के चित्त-विकार को ठीक-ठीक नहीं माप सकेंगे। जो लोग दूसरों के चित्त-विकार के साक्षी होंगे, उन्हें स्वयं पहले विकारमुक्त होना पड़ेगा। यदि वे अपनी ही राग रागिनी अलापते रहें तो उन्हें विश्व-दर्शन किस तरह प्राप्त होगा! आप समुद्र-तट पर खड़े हों अथवा नाव-जहाज के द्वारा समुद्र-यात्रा करें तभी समुद्र के दर्शन कर सकेंगे। किन्तु यदि आप स्वयं समुद्र के जल में इबे उतरायें तो आप समुद्र के दर्शन क्या करेंगे और काम का क्या कैसे होगा! जब आप समुद्र से अलग रहते हैं तभी आपको समुद्र के दर्शन होते हैं इसलिए साहित्यकार में निर्लिप्तता होनी ही चाहिए। किन्तु यदि वे केवल निर्लिप्त हों तो सन्यासी हो सकते हैं जीवन-मुक्त हो सकते हैं साहित्यकार नहीं हो सकते। फिर यदि वे विकारयुक्त हों, तो भी साहित्यकार नहीं हो सकते। यदि वे विकार-मुक्त और संसार-विमुख हों तो भी साहित्यकार नहीं हो सकते। साहित्यकार वही होंगे जो संसाराभिमुखी विश्वाभिमुखी होते हुए भी निर्लिप्त होंगे। यदि वे अभिमुख हों किन्तु अलिप्त न हों तो वे संसारी जीव हो जायेंगे साहित्यकार नहीं। यदि वे निर्लिप्त हों किन्तु अभिमुख न हों तो मुक्त हो सकते हैं साहित्यकार नहीं। साहित्यकार की भूमिका मैंने इसी रूप में समझी है।

जिस भाषा में विश्व मानव प्रकट हो वही भाषा श्रेष्ठ है

"मेरे विचार में बंगला भाषा संसार की एक श्रेष्ठ भाषा है—कम-से-कम आठ करोड़ लोगों की मातृभाषा। संसार में ऐसी बड़ी भाषाओं की

संख्या अधिक नहीं है। चीनी जापानी अरबी जर्मन फ्रेंच रूसी, अंग्रेजी हिन्दी उर्दू आदि कुछ भाषाएँ हैं जिन्हें ५-७ करोड़ से अधिक लोग बोलते हैं। संसार की ११ १२ महान् भाषाओं में बंगला का स्थान है। यों संसार में हजार से भी अधिक भाषाएँ हैं। बाइबिल का अनुवाद लगभग एक हजार भाषाओं में हुआ है। इस तरह भाषाएँ तो अनेक हैं पर ५ ७ करोड़ से अधिक लोग बोलें ऐसी भाषाएँ मात्र १०-१२ हैं। किन्तु जिस भाषा में सबसे अधिक लोग बातचीत कर वही समुन्नत है, ऐसी बात नहीं है। जिस भाषा में विश्व-मानव प्रकट हो वही समुन्नत है। बंगला भाषा में विश्व-मानव प्रकट हुए हैं इसीलिए उसे संसार की श्रेष्ठ भाषाओं में स्थान मिला है। यह सही है कि अपनी भाषा जैसा साहित्य बंगला भाषा में नहीं मिलता—यह काम धीरे-धीरे होगा। किन्तु मानवता के साथ जिसका सम्बन्ध हो वह साहित्य बंगला भाषा में है। इसीसे भाषा की गरिमा का पता चलता है।

"मुझसे पूछा जाता है : संसार की कौन-सी भाषा अधिक लोग पढ़ेंगे और बोलेंगे ? मैं जवाब देता हूँ वह भाषा जो विश्व-शान्ति स्थापित करेगी। यह योग्यता किस भाषा को प्राप्त होगी यह मैं नहीं कह सकता। इंग्लैण्ड से होरस अलेक्जेण्डर मिलने आये थे। उन्होंने मुझसे पूछा विश्व शान्ति की स्थापना किस देश से हो सकती है ? मैंने उनसे कहा : हमारे इस देश से हो सकती है इंग्लैण्ड से भी हो सकती है। इंग्लैण्ड का नाम सुनकर वे बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने पूछा : आपने इंग्लैण्ड का नाम क्यों लिया ? मैंने कहा : इंग्लैण्ड ने भारत और पाकिस्तान पर से अपना शासन उठा लिया इसीलिए। यदि इंग्लैण्ड चाहता तो कुछ समय और अपना शासन कायम रख सकता था। उससे और भी झगड़े होते विवाद उठते अन्याय होता। किन्तु अंग्रेज बुद्धिमान् थे। उन्होंने देखा कि यहाँ प्रयत्न करते रहने से कोई लाभ नहीं होने को है अतः वे राजपाट छोड़कर चले गये। वे यदि अस्त्र-त्याग कर, तो यह शक्तिशाली का अस्त्र-त्याग होगा। इंग्लैण्ड यह काम कर सकता है।

हमारा देश यह काम इसलिए कर सकता है कि यहाँ गौतम बुद्ध के ही समय से शान्ति और अहिंसा की परम्परा चली आ रही है। मैंने उनसे कहा कि सम्भव है इन दोनों देशों से यह काम हो। किन्तु जर्मन लोग यह काम नहीं कर सकते, ऐसा मैंने नहीं कहा—दो विश्व-युद्धों में उन्हें बहुत क्षति उठानी पड़ी है—इसलिए वे भी यह काम कर सकते हैं। किन्तु यह काम सचमुच कौन करेगा यह मैं नहीं कह सकता। किन्तु इतना मुझे विश्वास है कि जिस भाषा के लोग विश्व-शान्ति की स्थापना करेंगे वही भाषा सारे संसार का प्रेम पायेगी। आजकल अनेक लोग जो अंग्रेजी फ्रेंच जर्मन आदि भाषाएँ पढ़ते हैं वह विज्ञान के लिए। किन्तु जो भाषा विश्व-शान्ति स्थापित करेगी, उसे लोग प्रेमवश सीखेंगे।

विज्ञान की शक्ति के पथ-प्रदर्शक : साहित्यकार

'एक और बात मुझे कहनी है। साहित्यकारों की भाषा चाहे जो हो धर्म चाहे जो हो उन सबके बीच एक भ्रातृभाव होता है। वे रूसी हों या अमरीकी, जापानी हों या जर्मन उनके बीच चाहे कितना ही युद्ध चले साहित्यकार लोग जहाँ इकट्ठे होते हैं वहाँ यही अनुभव करते हैं कि 'हम एक भ्रातृमण्डल हैं। इस भ्रातृत्व का दायित्व आज सबसे अधिक साहित्यकारों पर है। कारण आधुनिक शस्त्रों के द्वारा आज मनुष्य के हाथ में जो संहार शक्ति आयी है उसका यदि वह प्रयोग करे तो वह विनष्ट हो जायगा—साहित्य भी विनष्ट हो जायगा और मनुष्य भी। इस विज्ञान की शक्ति का पथ प्रदर्शन कौन करेगा? साहित्यकार। इसलिए भविष्य में साहित्यकार का दायित्व बहुत बढ़ेगा। विज्ञान की शक्ति तो मूढ़ शक्ति है। अग्नि का प्रयोग जिस तरह भोजन बनाने के लिए होता है उसी तरह घर जलाने के लिए भी हो सकता है—अग्नि तो मूढ़ है उसे जैसा चलाइयेगा वह वैसे चलेगी। विज्ञान की शक्ति को भी जिस तरह चलाया जायगा वह उसी तरह चलेगी। मतलब यह कि यदि संसार को रक्षा करनी है तो शान्ति-पथ के अलावा दूसरा कोई पथ नहीं

है। किन्तु आज उसका विषय करण हो गया है। कौन लायेगा यह शान्ति ! जिनमें विवेक है वे लोग—वही प्रकाश-स्तम्भ की भाँति संसार को मार्ग दिखा सकेंगे। आप साहित्यकार लोग यदि निष्पक्ष भाव से चिन्तन करें, तभी यह सौभाग्य पा सकेंगे।"

साहित्यकारों से बातचीत करने के बाद बाबा ने कुछ देर विश्राम किया। आज की प्रार्थना सभा का समय स्थानीय लोगों की इच्छा के अनुसार सन्ध्या पाँच बजे निश्चित किया गया था। रंगपुर में सभा के योग्य बड़े-बड़े मैदानों के रहते हुए भी सभा-स्थल पड़ाव के प्रांगण को ही बनाया गया था। उस प्रांगण में पाँच-छह हजार से अधिक लोग नहीं आ सकते थे, इसलिए भीड़ के कारण बड़ी असुविधा हुई—व्यवस्था समाप्त हो गयी। गाँवों की प्रार्थना-सभाओं में बहुत लोग आते थे पर सभा का स्थान विस्तृत रहने के कारण सभाएँ व्यवस्थित ढंग से हुई थीं। यह तो जिले का बड़ा शहर था इसलिए लोगों की अधिक भीड़ होना स्वाभाविक ही था। इसके अतिरिक्त सवेरे वर्षा हो चुकी थी, इसलिए मैदान गीला था और लोगों को बैठने में दिक्कत हो रही थी। हो-हल्ला शुरू हो गया। शोरगुल की वजह से बाबा के भाषण पर जैसे रंग चढ़ा ही नहीं। वे हृदय खोलकर न बोल सके—ऐसा प्रतीत हुआ। अपने संक्षिप्त भाषण में उन्होंने कहा

'आज की सभा का स्थान बड़ा छोटा है। छोटे-छोटे गाँवों में इससे दुगुनी तिगुनी बड़ी सभाएं हुई हैं। यहाँ भीड़ बहुत है—स्थानाभाव के कारण बहुत-से लोग पीछे खड़े हैं। कारण बैठने से जगह अधिक लगती है और खड़े होने से कम। ऐसी अवस्था में मैं विशेष समय नहीं लूँगा।

हिंसा को रोक सकते हैं : माता-पिता शिक्षक, साहित्यकार

"आठ दिन से मेरी यह प्रेम-यात्रा चल रही है—आज नवाँ दिन है। इस यात्रा की समाप्ति में सात दिन और शेष हैं। भारत में मैंने जो

कुछ किया है, वहाँ कुछ मित्रों के निर्माण-काम में भी मदद कर रहा हूँ। मेरा यह काम है सबका हृदय जोड़ना —प्रेम-विस्तार का काम। भूदान इसका एक अति आवश्यक साधन है। संसार में इस समय दो बड़ी समस्याएँ हैं : एक भूख की समस्या और दूसरी विश्व-शान्ति एवं अभय स्थापन की समस्या। एक ओर है भूख, अर्थात् शरीर की अशान्ति और दूसरी ओर है विद्वेष तथा भय अर्थात् चित्त की अशान्ति। इन दो अशान्तियों से संसार को मुक्त होना होगा। सबसे बड़ा काम है मनुष्य के मन को भय से मुक्त करना। आज एक देश दूसरे देश से भयभीत है। आधुनिक संसार के दो बड़े राष्ट्र—अमेरिका और रूस—इस समय परस्पर भय और सन्देह से सर्वाधिक पीड़ित हैं। वे इस सम्बन्ध में चरम पर पहुँच गये हैं। एक देश के अखबारों में जो कुछ प्रकाशित होता है, उसे उस देश के लोग पढ़ते हैं और सोचते हैं कि यह पूरा-का-पूरा सच है। इस प्रकार संसार में परस्पर भय विद्वेष और सन्देह पैदा करने के लिए एक बड़ा उद्योग चल रहा है। सब काम यह दलबन्दी है—और दलबन्दी का काम चल रहा है। सबका दिमाग एक साँचे में ढालने की चेष्टा की जा रही है। अखबारों के प्रचार के फलस्वरूप एक देश के बच्चे-बच्चियाँ दूसरे देश के लोगों को राक्षस मानकर बैठ जाते हैं। वे भूल जाते हैं कि दूसरे देश के लोग भी हमारी ही तरह मनुष्य हैं और उनके हृदय में भी हमारे देश के मनुष्यों के हृदय की भाँति प्रेम और करुणा है। हिंस्र बाघ से बचने के लिए मनुष्य बन्दूक का प्रयोग करता है। किन्तु मनुष्य मनुष्य से इतना डरता है कि उससे बचने के लिए उसे आणविक अस्त्रों की आवश्यकता पड़ती है। अब सोचिये कि हम मनुष्य क्या एक-दूसरे के लिए इतने भयंकर प्राणी हो गये हैं! हिंसा विद्वेष और भय की यह कैसी धारा बह रही है! इस धारा को कौन रोक सकेगा! घर में माँ-बाप रोक सकते हैं विद्यालय में शिक्षक और रोक सकेंगे साहित्यकार। यही तीन शक्तियाँ मनुष्य को बचा सकती हैं। पिता पुत्र से पूछता है—ठीक समय पर स्कूल तो जाते हो? क्या पढ़ सोचना

है क्योंकि वह ठीक समय पर स्कूल नहीं आता और सच बोलने पर पिटाई होगी। इसका मतलब यह हुआ कि पिता ने पुत्र को नियम-पालन की शिक्षा देने के साथ-साथ भय की भी शिक्षा दी। अब हिसाब करके देखिये—बच्चे ने नियम-पालन की शिक्षा पाने के लिए निर्भयता खो दी। एक पैसा उसने पाया और एक रुपया खो दिया। बच्चे ने पिता से भय की शिक्षा पायी—बाद में वह पुलिस से डरेगा, सरकारी कर्मचारी से डरेगा। निर्भयता के बिना यथार्थ प्रेम नहीं होता। अतः विश्व-शान्ति स्थापित करने का काम घर से शुरू होगा, स्कूल से शुरू होगा। बच्चे को बुद्धि की स्वतन्त्रता देनी होगी। मैं सदा कहता हूँ कि मेरी बात यदि ठीक न लगे तो मत मानिये। यही शिक्षा बच्चों को देनी होगी। किन्तु सभी राष्ट्रों में इसके विपरीत शिक्षा दी जाती है और विद्यालय के बच्चों की बुद्धि को एक साँचे में ढालने की चेष्टा की जाती है। बुद्धि की स्वाधीनता किसी देश में नहीं है। यह स्वाधीनता लानी होगी। इसीलिए मूल बात यह है कि प्रत्येक गाँव को हर दृष्टि से आत्मनिर्भर होना होगा। जब गाँवों में आत्मनिर्भरता की शक्ति आयेगी तब संसार के सभी देश परस्पर प्रेम और सहायता करेंगे। संसार की भावी शान्ति माता पिता शिक्षक और साहित्यकार पर निर्भर करती है।

हम सब मौन प्रार्थना क्यों करते हैं ?

"अब हम पाँच मिनट मौन प्रार्थना करेंगे। मैंने इस सम्बन्ध में कहा है कि भगवान् का नाम लेते समय हम अलग हो जाते हैं। हम सदा एक साथ बैठकर प्रार्थना नहीं कर सकते। अखबारों में इस सन्दर्भ में कहा गया है कि मैं व्यक्तिगत उपासना बन्द करना चाहता हूँ—अपनी ही एक रीति का प्रवर्तन करना चाहता हूँ। लेकिन मैंने तो यह बात कही नहीं। यदि मैं कहता हूँ कि हम लोग क्या एक साथ बैठकर खा नहीं सकते और इस पर यदि कोई अपनी जाति का मत करके कहता है कि सब लोग साथ बैठकर नहीं खा सकते, तो मैं कहूँगा कि वह

गलती पर है। मनुष्य के साथ बैठकर खाने पर किसी मनुष्य की आपत्ति उचित नहीं है—सामूहिक भोजन का महत्व है। किन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि लोग अपने घर पर खायेंगे ही नहीं। सभी लोग अपने घर खायेंगे। इसी प्रकार जिसकी जैसी रुचि हो, घर में या समाज में प्रार्थना तो करेगा ही। लेकिन तब क्या किसी समय हम साथ बैठकर भी प्रार्थना नहीं कर सकते? अवश्य कर सकते हैं। भेद करना गलत है। अब सब लोग शान्त होकर मौन प्रार्थना करें।"

इसके बाद मौन प्रार्थना हुई।

सभा के बाद भी दर्शनार्थियों की भीड़ कम होती नहीं। निवासों में आकर स्त्री-पुरुष दर्शन कर जाते। मसीहुर्रहमान साहब ने आकर बाबा से मुलाकात की और एक बीघा जमीन का दानपत्र लिखकर बाबा के हाथ में दे दिया। एक गुजराती महिला ने गुजराती भाषा में विनोबाजी से बातचीत की। उन्होंने आशीर्वाद के रूप में बाबा से एक माला माँगी। बाबा ने उनके हाथ पर अपना हाथ रखकर कहा: "ईश्वर के प्रति भक्ति-भाव रखकर प्रतिज्ञा करो कि असत्य नहीं बोलोगी।" उन्होंने वैसा ही किया। बाबा ने उनके हाथ पर एक थप्पड़ मारकर उन्हें माला पहना दी। महिला ने प्रसन्नतापूर्वक प्रणाम करके विदा ली।

इसके बाद दिन समाप्त होने को आया। सन्ध्याकालीन प्रार्थना में अभी थोड़ी देर थी। बाबा के घर में लोगों का मजमा इकट्ठा था। प्रार्थना से पहले एक बहन ने वाद्ययन्त्र-सहित रवीन्द्रनाथ का भजन गाया। एक मनोहर बालक (श्री जगदीश दासगुप्त) ने मीरा का एक भजन गाया। भक्तिमिश्रित सुरों से घर भर गया—प्रार्थना शुरू हुई।

मैं पहले उल्लेख करना भूल गया—सन्ध्याकालीन प्रार्थना में गीता से लिये गये स्थितप्रज्ञ के लक्षण, नामस्मरण और एकादश व्रत का सस्वर पाठ किया गया।

प्रार्थना के उपरान्त स्थानीय स्वागतकर्ता सज्जन बाबा से विदा लेने आये। इन लोगों ने आज पदयात्री दल के आहारादि की व्यवस्था

मोहन-परिचया इत्यादि की थी। सभी वयोवृद्ध थे। बाबा से उन सबका परिचय कराकर मैंने कहा : "आज यहाँ के सभी स्वयंसेवक वयोवृद्ध थे। सब-के-सब पचास-साठ साल से ऊपर की अवस्था के थे। आज वृद्धों ने सेवा की है। युवकों ने अलग रहकर तमाशा देखा है।" बाबा ने उन सबसे हँसकर कहा "सबको निर्भय होना होगा।"

आशादेवी रात को यहाँ की महिला परिषद् में गयी थीं। वहाँ सौ से भी अधिक लोगों ने उनसे बातचीत की। उन्होंने अनेक प्रश्न किये और आशादेवी ने विनोबाजी के विचार उनके सामने रखकर उनकी शंकाओं का समाधान किया।

छोटी-बड़ी अनेक बातें मैं यहाँ लिख रहा हूँ। अतः रंगपुर के स्वागतकर्ता बन्धुओं के प्रेम को प्रकट करनेवाली एक घटना का उल्लेख नहीं करने से यह अध्याय अपूर्ण रह जायगा। आशादेवी की एक हाथ-घड़ी इस यात्रा-काल में किसी गाँव की सामान्य असावधानी से खो गयी थी। रंगपुर के स्वागतकर्ता बन्धुओं ने उन्हें एक हाथ-घड़ी प्रेमपूर्वक उपहार-स्वरूप दी।

रात अधिक हो गयी थी। शायद ग्यारह भी बज रहे थे। मैं सोने का उपक्रम कर रहा था। तभी मन्टू (श्री मणीन्द्रनाथ चौधरी—सरना कम्पनी के बड़े मालिक) वहाँ उपस्थित हुए। उन्हें काम के लिए पहले ही कहा गया था। अतः उन्हें उनके संरक्षण में दे दिया गया। ●

दसवाँ दिन १० निर्भयता, प्रेम : इस्लामी राष्ट्र की भूमिका

शेष रात्रि में सामान आदि सँभालकर एक मोटर वैगन में लादा जा रहा था और मैं सोच रहा था कि ऊपर जाकर बाबा से तैयार होने के लिए कहूँ। तभी देखा, वे उतरकर नीचे आ रहे हैं। जल्दी-जल्दी तभी प्रस्थान किया गया—साढ़े तीन बजने में अभी दो-तीन मिनट बाकी थे। थोड़ी देर बाद ही हम सीमेण्ट किये हुए एक पक्के रास्ते पर आ गये। कुछ दूर चलने पर रंगपुर-जेल के कर्मचारियों ने मार्ग में आकर विनोबाजी का अभिवादन किया और आशीर्वाद माँगा। जेल उस मार्ग की बगल में ही है। एक छोटे बच्चे को साथ लेकर आगे एक जेल-कर्मचारी बाबा से बातचीत करते हुए बड़ी देर तक चलते रहे।

पगलापीर स्थान के मार्ग में कविराज मथोरा बाबू के साथ विनोबाजी की बातचीत होती रही।

मथोरा बाबू ने प्रश्न किया : "भारत-सरकार ने सन्तति-नियमन की योजना बनायी है, पाकिस्तान-सरकार भी वही कर रही है। किन्तु इस तरह योजना न बनाकर, प्राचीन भारत के ऋषियों ने जिस ब्रह्मचर्य आदि चतुराश्रम की व्यवस्था की थी, उसे ही अपनाना क्या अच्छा नहीं होगा? उससे सन्तति-नियमन तो होता ही, देश में भद्र लोगों की वृद्धि भी होती।"

विनोबाजी ने कहा : "निश्चय ही अच्छा होगा। पुरुष जब पचास वर्ष का हो जाय और स्त्री चालीस-पैंतालीस वर्ष की हो जाय, तब पति-पत्नी को एक साथ में न रहकर भाई-बहन की ही तरह रहना उचित है।"

थोड़ी देर बाद मथोरा बाबू ने पुनः प्रश्न किया : "भारत तो अब

रंगपुर के रास्ते में

पगलापीर : प्रार्थना-सभा

गोरखपुर : प्रार्थना-सभा में भाषण करते हुए

स्वाधीन देश है। रामचन्द्र की सभा में पण्डित और मन्त्री थे—ज्ञानी वशिष्ठ, राजा जनक की सभा में थे—याज्ञवल्क्य, युधिष्ठिर की सभा में आये—वेदव्यास विक्रमादित्य की सभा में थे—कालिदास आदि नवरत्न। बीजापुर के राजा हरिहर राय की सभा में थे माधवाचार्य, बाद में जिनका नाम विद्यारण्य स्वामी पड़ा। अब भारत जैसे स्वाधीन देश में इसी तरह पण्डित-मण्डली का संगठन करके उनके परामर्श से राज-काज चलाना क्या उचित नहीं है?"

विनोबाजी ने कहा : 'उस समय राजा लोग राज करते थे। राज-भण्डार के धन से इन सब पण्डितों और मन्त्रियों का निर्वाह होता था। अब देश पर राजा का शासन नहीं है गणतन्त्र का युग चल रहा है—पार्लमेण्ट के द्वारा देश का शासन चलता है। इसीलिए अब पण्डित-मण्डली देश पर शासन नहीं करती।"

प्रश्न : "भारत के विश्वविद्यालयों में वेद उपनिषद्, गीता भागवत या हिन्दू ग्रन्थादि की अनिवार्य पढ़ाई के सम्बन्ध में आपकी क्या राय है?'

उत्तर : "किसी-किसी विश्वविद्यालय में गीता पढ़ायी जाती है उप-निषद् भी पढ़ाये जाते हैं किन्तु किसी स्थान पर किसी धर्म-विशेष के शास्त्रों की अनिवार्य रूप से पढ़ाई उचित नहीं है। सभी धर्मों के शास्त्र पढ़ाये जाने की व्यवस्था रहनी चाहिए।"

सवेरे छह बजकर पैंतीस मिनट पर हम फतहपीर डाक-बँगले में पहुँचे। प्रवेश-द्वार पर स्कूली बालकों ने हमारी अभ्यर्थना की। डाक-बँगला छोटा था इसलिए स्कूल के ही घर में रहने की व्यवस्था की गयी—पदयात्री-दल के अनेक लोग वहीं ठहरे। डाक-बँगले के मैदान में अनेक लोग जमा हो गये थे। विनोबाजी ने उन्हें सम्बोधित कर कहा :

"अभी छोटे-छोटे बालकों ने मेरी जो अभ्यर्थना की वह मुझे बहुत अच्छी लगी। स्काउटिंग बच्चों में एकता लाती है उनमें प्रेम का प्रकाश

फैलता है। यह प्रेम का प्रकाश गाँव-गाँव में सर्वत्र होना चाहिए। पाकिस्तान आकर और आपका प्रेम पाकर मुझे बड़ी खुशी हुई है। यहाँ आकर आप लोगों के अन्न, जल, लस्सी आदि का मैंने उपभोग किया, इसलिए मैंने सोचा कि मुझे भी आप लोगों की कुछ सेवा करनी चाहिए। अतः मैं गरीबों के लिए भूमिदान चाहता हूँ। यह गाँव छोटा है, पर छोटे गाँव में हृदय बड़ा होता है। शहर में शिक्षित और धनी लोग रहते हैं किन्तु उनके हृदय बड़े नहीं होते। इन कुछ दिनों में मुझे ऐसे ही थोड़ी बहुत भूमि मिली है। किन्तु मैं चाहता हूँ कि प्रत्येक भू-स्वामी कुछ जमीन का दान करे। आप लोग मेरे साथियों को लेकर गाँव में घर-घर जायें और गाँव के गरीब लोगों के लिए भूमि-दान एकत्र करें। (उन्होंने सस्वर कहा) 'हमारे गाँव में भूमिहीन कोई न रहेगा, कोई न रहेगा, कोई न रहेगा।' यह गीत बच्चों को सिखा दीजिये और कम या ज्यादा दान दीजिये। यदि आप ऐसा कर सकें तो इस गाँव का गौरव बढ़ेगा—यह गाँव सबका नेतृत्व कर सकेगा। मान लीजिये कि आपके परिवार में पाँच व्यक्ति हैं अब यदि आपके यहाँ एक और बच्चे का जन्म हो जाय तो उसे भी तो आप पालें-पोसेंगे, सम्पत्ति का एक हिस्सा देंगे। बाबा है गरीबों का प्रतिनिधि और आपके परिवार का छठा व्यक्ति, अतः अपनी सम्पत्ति का छठा हिस्सा आपको बाबा को अर्थात् गरीबों को, देना होगा। आप लोग यदि भूमिहीन लोगों को थोड़ी-थोड़ी जमीन दे दें, तो ग्राम के बच्चों को यह गीत सिखाइये—(सस्वर) 'हमारे गाँव भूमिहीन कोई न रहा, अब कोई न रहा, अब कोई न रहा।'

इस भाषण के बाद ही थोड़ी वर्षा हुई। एस श्री खो साहब हमारे पहुँचने के थोड़ी देर बाद ही आ पहुँचे। वे अपने बारह-तेरह साल के बच्चे को लाये थे। वे लोग बराबर कराची में थे इसीलिए मातृभाषा बंगला होते हुए भी बच्चे को बंगला सीखने का अवसर नहीं मिल पाया था—वह उर्दू अच्छी बोल लेता था। एस श्री खो साहब ने कहा कि बच्चे ने उनसे पूछा कि साधु किसे कहते हैं और वे उसे यथासम्भव

इसका अर्थ समझाकर यहाँ ले आये। बच्चे को मैंने विनोबाजी के पास बैठा दिया।

लगभग दस बजे बाबा थोड़ा गाँव घूमने निकल पड़े। उस बच्चे का उन्होंने हाथ पकड़ रखा था—साथ में थीं महादेवी और मैं। वे थोड़ी देर घूमते रहे। अब तक गाँव के अनेक लोग साथ हो गये थे। बाबा ने कहा : "किसीके घर मुझे ले चलोगे—कोई जमीन देगा?" एक सज्जन एक सम्पन्न मुसलमान परिवार में उन्हें ले गये। किन्तु घर के मालिक दिखाई नहीं पड़े—थोड़ी खोज-ढूँढ़ के बाद वे आये। बाबा ने पूछा : "कुछ जमीन की भीख देंगे?" मालिक ने जवाब दिया "खुद ही जमीन ज्यादा नहीं है। कहाँ से दूँगा?" महादेवी अन्दर जाकर परिवार की स्त्रियों से मिल आयीं। आधे घण्टे तक घूमने-फिरने के बाद बाबा लौट आये बोले : "इस पगलापीर गाँव में शायद पहले कोई एक पागल था। अब एक पागल मैं आया हूँ। देख रहा था कि यहाँ कोई और पागल है या नहीं; लेकिन देखता हूँ कि कोई पागल नहीं है सब के-सब बुद्धिमान् हैं।" लौट आने के बाद आशादेवी ने पूछा : "यह क्या आपकी निष्काम यात्रा थी?" बाबा ने हँसकर उत्तर दिया : "कोई पागल है या नहीं यही देख रहा था। देखा सब बुद्धिमान् हैं।"

यहाँ डाक-बँगले की चहारदीवारी के अन्दर ही एक छोटे कमरे में रसोई की व्यवस्था की गयी थी। हमारे सहयात्री कार्यकर्ताओं ने ही रसोई का मुख्य भार लिया। ग्रामवासियों ने सहायता की—इस काम में कुछ स्त्रियों ने भी आकर सहायता की थी।

रंगपुर शहर के एस. डी. ओ. साहब ने—जिनका उल्लेख पहले किया जा चुका है—हमारे आगा-नाड़ में साथ रखने के लिए एक ट्रांजिस्टर की व्यवस्था की थी। सरकारी वायरलेस सेट लेकर जो लोग घूम रहे थे, उनके ही प्रबन्ध में इसका दायित्व ग्रहण किया था। इसे प्रति दिन सबेरे वे दे जायेंगे और शाम को ले जायेंगे—एस. डी. ओ.

साहब ने यह व्यवस्था की थी। उन सज्जन ने बड़ी निष्ठापूर्वक इस दायित्व का पालन किया। इससे विनोबाजी और यात्री-दल को दैनिक समाचार सुनने में बड़ी सुविधा हो गयी।

पास ही एक छोटी-सी मस्जिद थी, इसलिए निश्चय हुआ कि अपराह्नकालीन नमाज के बाद पौने पाँच बजे प्रार्थना सभा होगी। अपराह्न-वेला में रंगपुर से हमारे नये साहित्यकार बन्धु मैनुल हक, श्री कमल पटेल सहित कुछ सेवापरायण विद्यार्थी, उपदेशकार और रंगपुर कॉलेज के अध्यापक जनाब अबुसैना मुहम्मद मुसलिम साहब के साथ कुछ विषयों पर विचार-विमर्श करने के लिए आये। वे कई दिनों से विनोबाजी के भाषण, विचार आदि सुन रहे थे, फिर भी उनके मन में कुछ बातों के बारे में जिज्ञासा थी, इसीलिए वे १०-१२ व्यक्ति का एक दल बनाकर आये थे। वे सब-के-सब प्रायः युवक ही थे। उनके प्रश्नोत्तर को यहाँ संक्षेप में प्रस्तुत किया जा रहा है।

प्रश्न : आपने यहाँ बेसिक डेमोक्रेसी की प्रशंसा की है, इसलिए भारत में भी इसे लागू करना क्या आप पसन्द करेंगे?

उत्तर : आप लोगों ने जिस रूप में सोचा है, उस रूप में मैंने इसकी प्रशंसा नहीं की। मैंने यह कहना चाहा है कि यह एक अच्छी शुरुआत है—यूनियन कौंसिलें यदि प्रेम और करुणा के आधार पर ग्राम-निर्माण का काम करें, तो वे यथार्थ डेमोक्रेसी को जन्म देने में सहायक होंगी। आप लोगों ने देखा है कि देश में संकट उपस्थित होने पर Democracy does not believe in itself (डेमोक्रेसी अपने-आपमें विश्वास नहीं रख पाती)। इसका प्रमुख कारण यही है कि देश की शासन शक्ति सैन्य शक्ति पर निर्भर करती है। जब तक डेमोक्रेसी अहिंसा पर आधृत नहीं होती, तब तक यह वास्तविक डेमोक्रेसी नहीं हो सकती। इसीलिए जब कभी मैंने Basic Democracy की बात की है, तब यही सोचकर कि नीचे के स्तर पर कुछ अच्छा काम हो सकता है।

प्रश्न : वैदिक डेमोक्रेसी मनुष्य को यथार्थ मुक्ति दे सकती है क्या ?

उत्तर : मुक्ति अर्थात् Emancipation तब तक नहीं आयेगी जब तक बुनियादी गठबन्धन हिंसा पर निर्भर करेगा । आजकल दुनिया का हाल बड़ा विचित्र है । संसार के बड़े-बड़े राष्ट्र-नेताओं का अब हिंसा पर से विश्वास उठ गया है किन्तु अहिंसा पर उनका विश्वास अभी जम नहीं पाया है । उनकी मानसिक स्थिति अनिश्चयात्मक है । इस स्थिति में मुझे साहित्यकारों से आशा है । शिक्षा में समाज-परिवर्तन की जो शक्ति निहित है इस बात पर आज आप अध्यापकगण ही विश्वास नहीं करते ।

आदर्श होगा : क्रान्ति और अहिंसा का समन्वय

प्रश्न : कम्युनिस्ट कहते हैं कि उन्हीं के मार्ग से विश्व-शान्ति स्थापित होगी । इस सम्बन्ध में आपका क्या विचार है ?

उत्तर : कम्युनिज्म की मुख्य शक्ति है करुणा । यद्यपि कम्युनिज्म Violence (हिंसा) का प्रयोग करता है तथापि वह दुर्बलों के दुःख निवारण का प्रयत्न करता है । यह तीव्र भावना हममें भी होनी चाहिए—हमारा आदर्श होना चाहिए, क्रान्ति और अहिंसा का समन्वय । साधारणतः देखा जाता है कि जो लोग अहिंसा में विश्वास करते हैं वे Status quo अर्थात् वर्तमान समाज-व्यवस्था को मानकर चलते हैं और जो लोग क्रान्ति लाना चाहते हैं वे हिंसावादी होते हैं । Marxian dialectic (मार्क्सवादी द्वन्द्व-समाधान) की भाषा में कहा जाता है : Non-violence + Status quo है Thesis; Violence + Revolution है Antithesis और Non-violence + Revolution है Synthesis ।

प्रश्न : यह अहिंसात्मक क्रान्ति लाने के लिए क्या किया जाना चाहिए इसे विस्तार से बताइये ।

उत्तर : सर्वप्रथम Decentralization of power अर्थात् शक्ति का विकेन्द्रीकरण—सबसे अधिक शक्ति सबसे निचले स्तर पर रहनी

चाहिए। ऊपर के स्तर पर कम शक्ति रहेगी और सबसे ऊपर के स्तर पर केवल Moral power या नैतिक शक्ति रहेगी। सबसे अधिक शक्ति सबसे नीचे के स्तर पर रहनी चाहिए। दूसरी बात है सहकारी समाज (Co operative Society) की रचना। तीसरी बात यह कि प्रत्येक व्यक्ति के सर्वतोमुखी विकास के लिए पूरा अवसर रहना चाहिए। चौथी बात, समाज-कल्याण के लिए त्याग-भावना होनी चाहिए।' पाँचवीं बात शिक्षा के क्षेत्र में ज्ञान और कर्म का समन्वय होना चाहिए। आजकल जो लोग हाथ का काम करते हैं उनके पास ज्ञान नहीं है और जिनके पास ज्ञान है, वे हाथ का काम नहीं करते। इस प्रकार आज समाज में श्रमजीवी और बुद्धिजीवी, ये दो विभाग बन गये हैं। मेरी एक पुस्तक है 'स्वराज्य-शास्त्र'—उसमें इसी सम्बन्ध में विचार किया गया है। अहिंसक समाज-निर्माण का आधार होगा ग्राम-राज अर्थात् पूरा गाँव एक परिवार होगा। इसके लिए उपयुक्त वातावरण भूदान तैयार करेगा।

अन्त में विनोबाजी ने कहा। दुनिया में तीन शक्तियाँ हैं—सत्व, रज और तम। मैं इनमें से किसीको भी बाद नहीं देना चाहता। रज और तम गुण भी रहेंगे पर सत्वगुण के Control (अधीन) और Direction (निर्देशन) में। तमोगुण न रहने से रात में नींद नहीं आयेगी; रजोगुण न रहने से दिन में काम नहीं होगा, और सत्वगुण न रहने से बुद्धि नहीं रहेगी। सत्वगुण होगा ऐन्जिन ड्राइवर रजोगुण होगा इन्जन और तमोगुण होगा ट्रेन के डिब्बे। लोग कहते हैं कि आप जिस आदर्श समाज का निर्माण करना चाहते हैं उसमें क्या रज और तमोगुण नहीं रहेंगे? मैं कहता हूं कि मैं सत्वगुण के द्वारा उन्हें Control करना चाहता हूँ। कारण, रज और तम इन गुणों के पास कोई बुद्धि नहीं होती। आज दुनिया जिस भयानक परिस्थिति से होकर गुजर रही है उसमें मैं यही सोचता हूँ कि दिया बुझने से पहले खूब तेज जल उठता है—यह दिये के बुझने से पहले की अवस्था है।

अपराह्न पौने पाँच बजे प्रार्थना-सभा आरम्भ हुई। प्रायः दस हजार लोग एकत्र हुए। विनोबाजी ने कहा :

दैहिक बुद्धि ही भय का कारण

"आज मेरी यात्रा का दसवाँ दिन है। छः दिन और बाकी रह गये हैं। आप सबके दर्शन पाकर मुझे बड़ी खुशी हुई है। यहाँ लोगों में जो उत्साह और प्रेम देख रहा हूँ उसके कारण पहले दिन ही मैंने कहा था : भारत में मैंने जो हृदय पाया है यहाँ भी मनुष्य का वही हृदय पा रहा हूँ। इसी कारण पहले दिन से ही मैंने गरीबों के लिए भूमिदान माँगा है और वह पा भी रहा हूँ। लोग प्रेम से समझाने पर बात ठीक तरह समझेंगे। कल रंगपुर बड़ा शहर था। वहाँ एक भाई ने आकर कहा : 'हमें आशीर्वाद दीजिये कि हम निर्भय हो सकें।' उनकी बात मुझे बहुत अच्छी लगी। निर्भयता एक महान् गुण है। लेकिन वह आयेगी कैसे ? जो लोग देह को ही आधार मानकर जीवन बिताते हैं और मानते हैं कि देह ही वे स्वयं हैं वे निर्भय नहीं हो सकते। किन्तु जब कोई यह सोचेगा कि मैं देहमात्र ही नहीं हूँ मैं आत्मा हूँ सभी देहों में मैं हूँ, तब वह निर्भय हो सकेगा—ऐसा ही व्यक्ति न तो किसीसे डरता है और न किसीको डराता है। स्वाधीन मनुष्य का भी यही लक्षण है कि वह न तो किसीके अधीन रहता है और न किसीको अपने अधीन रखता है। आम तौर पर लोग सोचते हैं कि जो किसीसे नहीं डरता वही निर्भीक है, जो किसीकी गुलामी नहीं करता वही स्वाधीन है। मैं कहता हूँ कि यह गुण तो रहना चाहिए ही किन्तु जो दूसरों को भय दिखाता है उसे निर्भीक नहीं कहा जा सकता; जो दूसरों को अपने अधीन रखता है उसे स्वाधीन नहीं कहा जा सकता।

'बिल्ली चूहे को देखकर नहीं डरती। उस समय उसमें शूर का रूप दिखाई पड़ता है—वह बहुत तेजस्वी निर्भीक मालूम पड़ती है। किन्तु वही बिल्ली कुत्ते को देखकर डर के मारे भाग खड़ी होती है। जब

किसको आप निर्भीक कहेंगे या भीरु? बाघ को देखकर कुत्ता हरिण और सब पशु डरते हैं। अतः बाघ को देखकर लोग कहेंगे, उसमें बड़ा तेज है बड़ा पराक्रम है। किन्तु बन्दूक से वह डरता है। कुत्ते के सामने बाघ बड़ा वीर होता है और इसका कारण वह जानता है—कुत्ते की तुलना में उसके नख दाँत और शारीरिक बल अधिक हैं किन्तु मनुष्य की बन्दूक देखते ही वह भाग खड़ा होता है। इसलिए बाघ को भी भीरु कहना होगा। ये जब साहस दिखाते और आक्रमण करते हैं, तब अपनी देह का हिसाब लगाकर; और जब अधिक शक्तिशाली जीव को देखकर भागते हैं तब भी देह का हिसाब लगाकर। प्रथम विश्व-युद्ध में जर्मन लोग जब बेल्जियम आदि छोटे-छोटे देशों पर एक-के-बाद-एक आक्रमण करके विजय पाने लगे तब लोगों ने सोचा कि जर्मन लोग खूब साहसी और पराक्रमी हैं। किन्तु जब अमेरिका सामने आया तब उन्होंने पराजय स्वीकार कर ली। युद्ध में यह जो जय-पराजय हुई, वह केवल दैहिक शक्ति के हिसाब की बात है—उसमें वीरता या साहस का कोई प्रश्न नहीं है। किन्तु एक छोटा बच्चा भी यदि आत्मा की शक्ति लेकर प्रबल शक्ति के मुकाबले खड़ा होता है तो उसे निर्भय कहा जायगा। यह बात अच्छी तरह समझ लेने की है कि हम शरीर में बँधे हुए नहीं हैं—सभी देहों में मैं हूँ—जब यह बुद्धि हममें आयेगी तभी वास्तविक निर्भयता आयेगी वास्तविक प्रेम भी आयेगा। जब हृदय में इस प्रेम की ज्योति फैलेगी तब संसार में सबको वह अपना मानेगा कोई उसका शत्रु नहीं रहेगा सब मित्र होंगे।

इस्लामी राष्ट्र में भूदान का काम ग्रहण करना ही होगा

आज कुछ लोग प्रश्न करते हैं कि भूदान क्या (समस्या-समाधान का) पूर्ण प्रोग्राम है या कि साधन मात्र है। उत्तर में मैं कहता हूँ कि मेरा असली उद्देश्य समाजमात्र में प्रेम का विस्तार करना है—सभी देशों के सभी लोग भाई-भाई हैं उनके बीच कोई पार्थक्य नहीं है कोई भेद

नहीं है। प्रत्येक गाँव एक परिवार होगा—इसीकी सूचना भूदान में है। गाँवों में जो लोग भूमिहीन गरीब हैं उन्हें भूमि देकर गरीबी से मुक्त करना होगा। यदि कोई कहता है कि केवल भूदान से क्या गरीबी की समस्या हल हो जायगी तो मैं कहता हूँ कि भूदान के अलावा भी बहुत कुछ की जरूरत है। किन्तु भूदान के बिना गाँवों की गरीबी दूर नहीं होगी, उनमें एक परिवार की भावना नहीं बनेगी प्रेम का सम्बन्ध नहीं बनेगा। मुझे विश्वास है कि पाकिस्तान इस कार्यक्रम को शायद ग्रहण करेगा। इस्लाम का अर्थ है शान्ति। शान्ति की कामना करके मुसलमान लोग एक-दूसरे का अभिवादन करते हैं। सबके बीच शान्ति विराजमान रहे—भय का सम्पर्क हिंसा का सम्पर्क दूर होकर प्रेम का सम्पर्क बने—यही तो इस्लाम है। भय या लोभ दिखाकर अपना विचार दूसरों पर लादने से काम नहीं चलेगा। इस्लाम की बड़ी बात है—'ला-इक्राहा फिद्दीने'—धर्म के सम्बन्ध में कभी भी कोई जबरदस्ती नहीं चलेगी। सबके साथ प्रेम का व्यवहार करूँगा नम्रतापूर्वक प्रेमपूर्वक अपनी बात कहूँगा और दूसरों की बात समझूँगा—इसीका नाम है इस्लाम। जहाँ इस इस्लाम के नाम पर एक राष्ट्र का संगठन किया गया है वहाँ राष्ट्र के आदर्श के सूचनास्वरूप भूदान का काम ग्रहण करना ही होगा।

"जमीन का मालिक कोई नहीं हो सकता अल्लाह ही मालिक है। हम लोग यदि सचमुच जमीन के मालिक होते तो सदा ही जमीन के मालिक रहते—मरते नहीं। हम अपनी सन्तान के जन्मदाता हो सकते हैं किन्तु मालिक उनके भी नहीं हो सकते। हमें यह गलत शिक्षा मिली है कि अपनी सन्तान की चिन्ता केवल मुझे ही करनी होगी—मेरा बच्चा क्या केवल मेरा ही है? मेरा बच्चा गाँव का है—गाँव ही उसकी चिन्ता करेगा। मैं यदि केवल अपनी चिन्ता न करके समाज की चिन्ता करूँ और उसकी सेवा करूँ तो समाज भी मेरे बच्चे की चिन्ता करेगा। जो समाज की सेवा करेगा वह निश्चिन्त होकर मरेगा और समाज उसकी सन्तान का भार लेगा। समाज गाँव के सभी बच्चों का भार लेगा उनकी

शिक्षा की व्यवस्था करेगा गाँव के सब लोगों का एक परिवार बनेगा—सबकी उन्नति होगी। इस तरह जिस समाज की रचना होगी उसका नाम ही होगा—सर्वोदय-समाज भूदान उसका आरम्भमात्र है। भूदान का उद्देश है सबकी उन्नति सबकी जय। साधारणतः एक व्यक्ति की विजय दूसरे व्यक्ति की पराजय होती है एक की पराजय में दूसरे की जय होती है। इसमें सभी जय किसीकी नहीं होती। सभी जय तभी होती है जब दोनों पक्षों की जय होती है—सभी उन्नति तभी होती है जब सबकी उन्नति होती है। इसीलिए मैं कहता हूँ—जय जगत्। एक ओर जय जगत् और एक ओर ग्रामदान—ग्राम परिवार।

मौन प्रार्थना के बाद कुछ दानों की घोषणा की गयी। आज इस छोटे-से गाँव में पाँच दान मिले। एक युवक महोदय इधर-उधर फोटो खींचते फिर रहे थे; उन्होंने आकर परिचय दिया कि वे फिल्म में काम करते हैं, Film actor हैं। विनोबाजी से मिलने के लिए ढाका से आये हैं और मिलना चाहते हैं। मैं उन्हें विनोबाजी के पास ले जाकर बोला "बाबा आपसे मिलने के लिए वकील डाक्टर विद्यार्थी शिक्षक किसान-मजदूर आदि कई श्रेणियों के लोग आये हैं आज एक नये क्षेत्र के सज्जन आये हैं। ये एक Film-actor हैं। इससे पहले आपसे किसी फिल्म-अभिनेता ने तो मुलाकात की नहीं।" बोलकर मैंने युवक महोदय को उनके सामने कर दिया। बाबा ने हाथ पकड़कर उन्हें बैठाया। तदुपरान्त युवक महोदय ने अंग्रेजी में कहा कि ढाका में अखबार में विनोबाजी का समाचार पढ़कर उन्हें उनसे मिलने की इच्छा हुई इसीलिए वे चले आये। वे दिनाजपुर जिला के निवासी हैं। विनोबाजी दिनाजपुर जिले के अन्दर से होकर जायेंगे, उनकी इस यात्रा के प्रति श्रद्धा और उसके स्मृतिस्वरूप वे तीन एकड़ जमीन का दान करना चाहते हैं। बाबा ने प्रसन्न मन से उन्हें विदा दी। दानपत्र लिखकर और कुछ फोटो खींचकर वे चले गये।

इस घटना के बारे में पदयात्री-दल में चर्चा हुई। जिसका हृदय

किस समय किस रूप में प्रकाशित होता है—यह ईश्वर की एक विचित्र लीला है। इन युवक महोदय ने ढाका में अखबार में विनोबाजी की बात पढ़ी। एक दिन के लिए दौड़े आये ढाका से। विनोबाजी के उद्देश्य का प्रेमपूर्वक अभिनन्दन करके एक दान देकर, चले गये। इस दान से अधिक मूल्य उनकी सद्भावना का है—संसार में सद्भावना की कमी नहीं है।

रसोई की व्यवस्था अपने कार्यकर्ताओं के हाथ में रहने के कारण रात के भोजन में कुछ विलम्ब हुआ। प्रायः सब लोग सो गये थे। कालिन्दी बहन भी सो गयी थीं। उन्हें जगाकर, उनकी अनिच्छा के बावजूद थोड़ा भोजन कराया किन्तु असमय में भोजन करने के कारण बाद में उनकी तबीयत थोड़ी खराब हो गयी।

अगले दिन का पड़ाव इससे भी छोटा गाँव था और एक प्राथमिक विद्यालय की फूस की छावनीवाली छोटी झोपड़ी में शिविर की व्यवस्था की गयी थी। इससे पहले इतनी दरिद्रता के वातावरण में शिविर स्थापित नहीं हुआ था। बाबा यह सब सुनकर खुश हुए।

रात में सिल्हट के प्रमथबाबू अस्वस्थ हो गये। अतः निश्चय हुआ कि वे और यतीन्द्रबाबू यहीं से रंगपुर वापस चले जायेंगे।

आज यहाँ दो और नये लोग पदयात्री दल में सम्मिलित हुए। उनमें से एक पूर्व-परिचित सर्वोदय-कार्यकर्ता श्रीलंकावासी बन्धु थे। उनका नाम है शिवगुरु नाथन्। वे विनोबाजी से मिलने आये थे। वे दिनाजपुर के सीमान्त से पश्चिम बंगाल के सर्वोदय-कार्यकर्ताओं से मिलकर आये थे और यहाँ बाबा की पदयात्रा की व्यवस्था आदि का समाचार लाये थे। उनके पास श्रीलंका का पासपोर्ट था—कामनवेल्थ देशवासियों की सुविधाएँ उन्हें मिली थी। वीसा की जरूरत नहीं थी—वे इच्छानुसार आ-जा सकते थे। दूसरे सज्जन ब्राह्मणबाड़िया के निवासी व्यवसायी युवक थे। वे टोपी पहनते हैं और उनका नाम भी जितेन्द्रनाथ भौमिक है। वे भी विनोबाजी से मिलने आये थे। उन्होंने कुछ दिन उनके साथ रहने की इच्छा प्रकट की। उन्हें बाबा से कुछ शंकाओं का समाधान कराना था।

○

• ग्यारहवाँ दिन[1]

११ दण्ड-शक्ति—अहिंसा—स्वशासन

पहले की ही भाँति रात के अन्तिम प्रहर में, तीन बजे यात्रा शुरू हुई। आज यमुनेश्वरी नाम की एक नदी नाव से पार करने की बात थी। नदी के दोनों किनारों पर स्थित पक्के मार्ग को संयुक्त करने के लिए नदी पर एक पक्का पुल तैयार किया गया था। पर उस समय तक वह पुल गाड़ियों और पैदल राहगीरों के लिए खुला नहीं था। हाँ, पुल का काम अवश्य पूरा हो गया था। आज सामयिक भाव से वह पुल खोल दिया गया और विनोबाजी तथा पदयात्री दल ने पुल के ऊपर से ही नदी पार की।

कालिन्दी बहन थोड़ी अस्वस्थता अनुभव कर रही थीं। सरकारी पुलिस-कर्मचारियों की एक जीप रोककर उसमें उन्हें चढ़ा दिया गया—वे पड़ाव पर चली गयीं। शरमा भी उस दिन कुछ अस्वस्थता अनुभव कर रही थी। मैं उसके साथ थोड़ा पीछे रह गया।

मालम्याडिया के बन्धु विनोबाजी से बातचीत कर रहे थे। उनका प्रश्न था—सामिष भोजन करके ब्रह्मचर्य का पालन करना सम्भव है या नहीं?

विनोबाजी ने कहा: भोजन की कई श्रेणियाँ हैं। प्रथम फल-मूल का आहार ही सर्वोत्तम आहार है—इसमें पकाने की आवश्यकता नहीं होती। द्वितीय अन्न और सब्जी, जिन्हें पकाकर खाना होता है। अन्न का मतलब है चावल दाल गेहूँ आदि निरामिष खाद्य। तृतीय श्रेणी का खाद्य है—अन्न सब्जी दूध और दूध से बने पदार्थ। दूध तृतीय श्रेणी का खाद्य इसलिए है कि वह जैव खाद्य है। फिर भी उसे निरामिष ही

---

[1] ग्यारहवाँ दिन १५ दिसम्बर—[illegible] से [illegible]—९ मील।

करना चाहिए। चतुर्थ श्रेणी के खाद्य पदार्थ हैं—मछली, मांस, अण्डे, पक्षी के अण्ड, यानी साधारण तौर पर जिन्हें सामिष आहार माना जाता है। श्रेष्ठता के क्रम से खाद्य पदार्थों की यही चार श्रेणियाँ हैं। इनमें से कौन-सा खाद्य मनुष्य के स्वास्थ्य और ब्रह्मचर्य-पालन में कमोबेश सहायक हो सकता है यह ब्रह्मचर्य-पालन की मानसिक अवस्था पर निर्भर करता है। उस अवस्था का विचार करके कौन-सा खाद्य कितना सहायक है यह देखकर खाद्य ग्रहण करना होगा। आहार में लोभ रहने से सामिष-निरामिष कोई भी भोजन ब्रह्मचर्य-पालन में सहायक नहीं होगा। आहार के सम्बन्ध में निर्लिप्तता ही ब्रह्मचर्य-पालन में प्रथम और मुख्य सहायक है।

चलते-चलते एक बड़ा हरिनाम-कीर्तन-दल हमारे साथ आ मिला। छोटे-छोटे बच्चों को गेरुआ वस्त्र पहनाकर और कपोल-कपाल पर चन्दन के तिलक लगाकर बालक संन्यासी का रूप दे दिया गया था। उन्होंने हाथ उठाकर, नाच नाचकर, हरि-नाम का गान करते हुए बाबा की आरती उतारी उन्हें प्रणाम किया और फिर वे कीर्तन करते हुए पीछे-पीछे चलने लगे। कुछ दूर और चलने पर एक और कीर्तन-दल इसी तरह हमसे आ मिला। सबसे अगुवा एक बड़े बाबा एक और कीर्तन-दल की ओर मुड़ करके खड़े हो गये। बच्चे हाथ उठाकर नाच करते हुए राम, कृष्ण, हरि नाम का कीर्तन करते रहे। बाबा उन लोगों के कीर्तन की ताल पर तालियाँ बजाते रहे और उनकी आँखों से पानी बहता रहा। कुछ देर बाद उन्होंने उन्हें शान्त होने को कहा। फिर उन्होंने बताया कि उनका यह नाम-गान सुनकर उन्हें बड़ा आनन्द हुआ था। आज साथ पर आये-पीछे कोई डेढ़ हजार लोग चल रहे थे—यात्रा-पथ पर इतने सारे लोगों की भीड़ पहले नहीं हुई थी। प्रायः साढ़े सात बजे हम गन्तव्य पर पहुँचे। यात्रा दल के लोग, स्थानीय लोग सब स्कूल के मैदान में जमा हो गये। तब बाबा ने कहा :

प्रेम का प्रकाश : सेवा-कर्म में

"आप सब लोगों का प्रेम देखकर आनन्द हुआ—पिछले दस दिनों से मैं आप लोगों का उत्साह और प्रेम देख रहा हूँ। यह प्रेम और उत्साह किसी काम में लगना चाहिए। प्रेम और उत्साह तभी तक होते हैं जब उनके द्वारा कर्म प्रकाशित होता है। भाप यदि हवा में उड़ जाती है तो कोई काम नहीं होता। किन्तु वही भाप यदि इंजन में बन्द की जाती है, तो प्रबल शक्ति का जन्म होता है। इसी प्रकार आपके प्रेम के आवेग को मैं सेवा-कर्म में संलग्न देखना चाहता हूँ। गाँव में जो भूमिहीन दुःखी और गरीब लोग हैं, जमीन का दान करके उनका दुःख दूर कीजिये। इससे आपस में प्रेम का सम्पर्क बढ़ेगा, धीरे-धीरे सारा गाँव एक परिवार बन जायगा गाँव की शक्ति बढ़ेगी आनन्द बढ़ेगा।

'आपके पास जमीन कम हो तो कम ही दें। बाकी जमीन पर यदि पूरी खाद तथा श्रम का उपयोग करेंगे तो पहले की ही तरह फसल पायेंगे। यूनियन कौंसिल के सदस्य और चेयरमैन यदि इस काम को हाथ में लें, तो बड़ा अच्छा हो। जो लोग जमीन का दान करेंगे, वस्तुतः उनका कोई नुकसान नहीं होगा वे सुखी होंगे, जमीन पाने वाले लोग भी सुखी होंगे इसके अतिरिक्त जो लोग जमीन दिलायेंगे, वे भी सुखी होंगे—इस प्रकार एक सुखी परिवार का जन्म होगा।"

ठाकुरगाँव में जिन्होंने विनोबाजी और पदयात्री-दल की व्यवस्था का भार ग्रहण किया था उनका भी यहाँ थोड़ा उल्लेख करने की आवश्यकता है। विनोबाजी की पदयात्रा का कार्यक्रम और पड़ाव निश्चित करने के लिए जब मैं पहले-पहल दो सरकारी कर्मचारियों के साथ इस ओर आया था तब जीप से उतरते ही इनसे मुलाकात हुई थी। इनका नाम है जनाब अमीनुद्दीन सरकार। सुना गाँव के विभिन्न उन्नतिमूलक कामों से इनका सम्बन्ध है—वह स्थानीय स्कूल भी इन्हीं के तत्वावधान में चल रहा है। उस समय एक जगह बैठकर मैंने उनी

विनोबाजी की पदयात्रा की बात बतायी थी और कहा था कि यहाँ पड़ाव रखने की व्यवस्था करना चाहता हूँ। हमें विस्मित करते हुए उन्होंने कहा "आचार्य विनोबा भावे की बात मैं पहले ही सुन चुका हूँ, थोड़ा बहुत पढ़ा भी है। वे गरीबों के लिए भूमि का दान माँगते हैं। एक ऐसे महान् नेता यहाँ आवें यह तो परम सौभाग्य की बात है। मैं ही विनोबा जी के पदयात्री-दल के ठहराव-ठिकाने और आहारादि का सम्पूर्ण भार वहन करूँगा।' दो-तीन हिन्दू भी वहाँ उपस्थित थे; उनकी ओर इशारा कर वे बोले : "मेरे ये साथी मेरे साथ काम कर रहे हैं। इनकी सहायता से मैं सब व्यवस्था कर दूँगा।" एक सुदूर गाँव के मुसलमान सज्जन पहले से ही विनोबाजी के सम्बन्ध में जानते हों यह बात साधारणतः देखने में नहीं आती और अनुरोध करने या व्यवस्था की बात कहने से पहले ही वे स्वयं ही आग्रह सहित दायित्व ग्रहण कर लें यह भी अक्सर देखने में नहीं आता। बाबा को यह सब बताकर मैंने उनसे उनका परिचय करा दिया।

यहाँ भी गाँव के लोगों के सहयोग से रसोई की व्यवस्था पदयात्री कार्यकर्ताओं को ही करनी पड़ी। धान के तीन कमरों में मिट्टी पर धूल-पुआल बिछाकर यात्री दल के ठहरने की व्यवस्था की गयी। एक में बाबा ठहरे और शेष दो में पदयात्रीगण। बाबा के प्रातःकालीन भाषण के बाद ही थोड़ी वर्षा हो गयी थी पर कुछ देर बाद ही खासी धूप निकल आयी। अगले पड़ाव भैरवपुर से कुछ युवक भीगते भीगते मोटर साइकिल पर आ पहुँचे। दिनाजपुर के अन्तिम पड़ाव विरल से भी एक युवक आये। ये वहाँ की एक चावल-मिल के मालिक के प्रतिनिधि थे। उन्होंने आकर कहा कि वे दिनाजपुर और विरल में विनोबाजी के पदयात्री दल के आहार और निवास की व्यवस्था का भार लेना चाहते हैं। मैंने उनसे कहा कि वे इस सम्बन्ध में दिनाजपुर के डिप्टी कमिश्नर से बात करें और एक परिचय-पत्र दे दिया। बाद में मैंने उन्हें विशेष रूप से समझाया कि भोजन की व्यवस्था या सम्पदा की व्यवस्था ही

बड़ी बात नहीं है—विनोबाजी गरीबों के लिए भोजन चाहते हैं, भूमिदान चाहते हैं; वही बड़ी बात है—ऐसा न करने से विनोबाजी रूठे ही रह जाते हैं। यदि ये लोग, मारवाड़ी व्यवसायी अथवा जमीन न दे सकें, तो विनोबाजी जिस सर्वोदय-साहित्य के प्रचार पर जोर देते हैं उसके प्रचार की व्यवस्था कर सकते हैं। कोई सज्जन 'गीता-प्रवचन' की दस हजार प्रतियाँ छपा देने का भार ग्रहण कर सकते हैं। उन्होंने सब कुछ सुनकर कहा कि अपने मालिक से वे इस बारे में बात करेंगे। इसके बाद उन्होंने किया भी।

इस बीच एक बार मैं बाबा के कमरे में जाकर बैठा। स्थानीय कार्यकर्ताओं में से भी कुछ लोग उस समय वहाँ थे। बाबा साहित्य प्रचार की बात बोल रहे थे। उन्होंने कहा: "यहाँ देखता हूँ कि साहित्य के लिए लोगों में भूख है। इस सम्बन्ध में क्या किया जाय?" तब मैंने साहित्य-सम्बन्धी अपनी मिन्नत बतायी कि सम्पत्ति-दान अर्थात् धन लेकर ही यह काम किया जा सकता है। भारत से पुस्तकें मँगाना एक कठिन कर्म है। लगभग तीन साल पहले उन्हींकी प्रेरणा से मैंने कुछ पुस्तकें मँगायी थीं। उनमें से बहुत सारी बिक गयी थीं और बाकी इस यात्रा-काल में बिक रही हैं। बाबा जिस तरह भूमिदान माँगते हैं उसी तरह साहित्य-प्रचार के लिए सम्पत्तिदान की भी माँग कर सकते हैं। सबेरे साहित्य-प्रचार के सम्बन्ध में उन मारवाड़ी सज्जन से जो बात हुई थी, वह मैंने उन्हें बतायी। प्रार्थना-सभा में सम्पत्तिदान माँगने की बात तो बाबा को न जमी, पर दर्शनार्थ आनेवाले व्यवसायियों से बातचीत के क्रम में उन्होंने इस सम्बन्ध में विचार-विमर्श किया।

सभी कार्यकर्ताओं से उन्होंने कहा: "आप सब लोग पदयात्रा के लिए निकल पड़ें, साहित्य प्रचार करें, भूदान की वाणी सबको सुनायें। संस्था पर मेरी विशेष आस्था नहीं है। सबको संस्था छोड़कर निकल पड़ना चाहिए। यहाँ कार्यकर्ताओं में खींचा-तानी चलती है, यह मैं देख रहा हूँ।" फिर सोमानाथजी की बात का उल्लेख करके उन्होंने

कहा कि वहाँ तो गांधी-आश्रम रहना ही चाहिए। बाद में उन्होंने एक बार सरला और कल्पना के साथ भी बैठकर विचार-विमर्श किया।

अपराह्न में चार बजे प्रार्थना-सभा हुई। सवेरे वर्षा हो गयी थी, इसलिए बहुत सारे लोग इधर उधर खड़े थे। स्वयंसेवकों और पुलिस के आदमियों ने जनता को थोड़ी दूरी पर रोक रखा था मैंने उन्हें निकट आने देने के लिए कहा। सब दौड़कर आने लगे जिससे थोड़ी गड़बड़ी और अशान्ति पैदा हो गयी। लोगों को बैठने में देर लगी। विनोबाजी बाहर आकर खड़े हो गये और उन्होंने सबसे शान्त हो जाने का अनुरोध किया। जनता को शान्त करके बैठाने का काम उन्होंने ही ग्रहण किया। उन्होंने पुलिस और स्वयंसेवकों को जनता को बैठाने की चेष्टा करने से रोका। कुछ एक क्षणों में ही जनता शान्त हो गयी। तदुपरान्त उन्होंने भाषण शुरू किया। प्रायः दस हजार लोग वहाँ उपस्थित थे।

दण्ड-शक्ति—अहिंसा—स्वशासन

"यह देखिये आप लोग किस तरह शान्तिपूर्वक बैठ गये। इसी प्रकार यदि आप सभी क्षेत्रों में दण्ड-शक्ति के प्रयोग के बिना ही व्यवस्थित हो पायें तो कितना अच्छा हो। वास्तविक शान्ति-स्थापना अहिंसा के द्वारा इसी प्रकार होती है—दण्ड शक्ति के द्वारा नहीं। समाज में जब लोग स्वयं नियम नीति का पालन नहीं करते तब दण्ड-शक्ति की आवश्यकता होती है—फिर लोग कहेंगे बाबा की नीति तो चलती नहीं। (एक ओर कुछ लोग अब भी खड़े थे—बाबा ने उनकी ओर संकेत करके कहा) आप सब लोग यदि नहीं बैठ जायेंगे तो बाबा आज कुछ नहीं बोलेंगे। आप लोग मेरी बातें सुनने के लिए ही आये हैं। अतः आप लोग जितनी जल्दी बैठ जायेंगे मैं उतनी ही जल्दी बोलना आरम्भ करूँगा। बहुत अच्छा अब लगभग सभी लोग बैठ गये हैं केवल थोड़े-से लोगों के ही बैठने में देर हो रही है। आप लोग पलासी के युद्ध की कहानी जानते हैं। अंग्रेजों ने उस युद्ध में बंगाल पर विजय

थमी—हम लोग हार गये। कारण, इंग्लैण्ड के सैनिकों में अनुशासन था और हमारे सैनिक यद्यपि संख्या में अधिक थे, तथापि उनमें अनुशासन का अभाव था। इसी कारण हम युद्ध में हार गये। नेपोलियन ने एक-के-बाद-एक अनेक देशों पर विजय प्राप्त की, पर अंग्रेजों से हार गया और उसे सेंट हेलेना नामक एक द्वीप में निर्वासित कर दिया गया। वहाँ उससे पूछा गया कि आप तो युद्धों में कभी पराजित नहीं हुए थे, इस वाटरलू के युद्ध में कैसे हार गये। उसने उत्तर दिया कि मार्शल ने अपने सैनिकों के साथ मेरी सहायतार्थ पहुँचने में आध मिनट की देर की, इसीलिए मेरी हार हुई। अब सोचिये अनुशासन और समय का कितना मूल्य है!

'अब पहले अल्-फातेहा का पाठ करके मैं अपनी बात आरम्भ करूँगा (विनोबाजी ने सस्वर पाठ किया)। आप लोग खूब शान्त होकर बैठ गये हैं—इससे मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई है। आप लोग समाज में भी यदि इसी स्वशासन की नीति अपनायें तो पुलिस की जरूरत नहीं पड़ेगी। वैसी अवस्था में प्रेम का शासन चलेगा। जिस समाज में पुलिस और सेना का जितना अधिक शासन होगा वह समाज उतना ही कम स्वाधीन होगा। जहाँ पुलिस की अपेक्षा शिक्षक-वर्ग का प्राधान्य होगा और सब बच्चे-बच्चियाँ शिक्षा प्राप्त करेंगी, वहाँ यथार्थ स्वाधीनता होगी। यह बात हमें समझनी होगी।

चोर का दण्ड : भूमि-दान

"किसी चोर ने अभावग्रस्त होकर चोरी की। उसे पकड़कर पुलिस को सौंप दिया गया। फिर उसे न्यायाधीश के सामने उपस्थित किया गया। न्यायाधीश ने उसे सजा दी—तीन वर्ष के लिए कारावास। किन्तु इससे क्या चोरी कम होगी? जरा सोचकर देखिये वास्तव में सजा किसे मिली? वह व्यक्ति अपने परिवार का एकमात्र उपार्जनकर्ता था। बच्चों को भोजन नहीं मिल रहा था इसलिए उसने चोरी की। किन्तु

जेल में उसे दिन में तीन बार खाने को दिया गया, शाम के बाद बारह घण्टे उसे विश्राम मिला। हर पन्द्रह दिन पर वहाँ उसका वजन किया जाता है। यदि किसीका वजन कम उतरता है, तो उसे Medical diet दिया जाता है। बीमारी के लिए अस्पताल का प्रबन्ध है। जेल में उसके लिए अनेक प्रकार की व्यवस्था है। उधर उसकी पत्नी और बच्चों की क्या दुर्गति हुई, जरा इस पर विचार कीजिये। कोई कमाने वाला न रहने के कारण उन्हें भूखा-अधभूखा रहना पड़ा। धीरे धीरे बच्चों की माँ भी थोड़ी-बहुत चोरी करने लगी। बच्चों ने भी यही किया। पकड़ जाने पर मिला अपमान और तिरस्कार। अब देखिये कि चोरी के लिए किसे सजा मिली। मैं देश की स्वाधीनता के युद्ध के प्रसंग में पाँच छह बार जेल में था। जेल में ही मैंने देखा कि पन्द्रह बर्ष बाद एक कैदी को रिहा किया गया। उस समय जेल के बाहर अपना कहने लायक उसका कोई नहीं था। रिहाई के समय उसके जेल के कुछ कैदी साथी रो पड़े। तब उसने कहा कि 'अब मैं कहाँ जाऊँगा—मेरा घर-द्वार तो कोई है नहीं। अगले रविवार मैं पुनः जेल में हाजिर हो जाऊँगा। बाहर जाकर उसने फिर चोरी की और पकड़े जाने पर अगले रविवार को वह फिर जेल में आ गया। यदि मैं न्यायाधीश होता और कानून बनाने का भार मुझ पर होता तो मैं उसे तीन बर्ष के कारावास की जगह तीन एकड़ भूमि-दान की सजा देता। उसे तीन एकड़ जमीन देकर हुक्म देता कि उस पर मेहनत करके अपने बच्चों का भरण-पोषण करो। लोग हँसेंगे कहेंगे कि इस पगले बाबा की बात कौन सुनेगा! किन्तु मैं कहना चाहता हूँ कि पुलिस समाज को नहीं बचा सकती। उसे शिक्षक साहित्यकार और समाज-सेवक ही बचा सकेंगे। जब समाज पर इनका प्रभाव पड़ेगा तब समाज में स्वशासन चलेगा अर्थात् दण्ड शक्ति की जगह प्रेम का शासन चलेगा तब सभी बच्चों की शिक्षा की व्यवस्था समाज करेगा समाज तब भार से जैसा ग्राम एक परिवार हो जायगा तभी संसार में ईश्वर का राज्य स्थापित होगा।

"पाकिस्तान-सरकार ने प्रेमपूर्वक दया करके मुझे इस देश में आने की अनुमति दी है, क्योंकि उसने समझा कि यह आदमी देश में आग फैलानेवाला नहीं आग बुझानेवाला है। मेरा और कोई काम नहीं है, लोगों के हृदय के साथ प्रेमपूर्वक हृदय संयुक्त करना ही मेरा काम है। देश में अशान्ति नहीं शान्ति लाना ही मेरा काम है। किन्तु जब तक गाँव में भूखे लोग रहेंगे, तब तक शान्ति और त्वचालन स्थापित नहीं हो सकेगा। भूदान के द्वारा जब सबके हृदय जुड़ जायेंगे, जब गाँव एक परिवार होगा तब गाँव में ही गाँव की योजना बनेगी और देश उन्नति करेगा। उस समय विज्ञान की शक्ति को काम में लगाकर उत्पादन भी बढ़ाया जायगा। भूदान के प्रति मेरा कोई विशेष आग्रह नहीं है। यदि भूदान के अतिरिक्त किसी दूसरे तरीके से गाँव में प्रेम और शान्ति लायी जा सकती है, तो मैं उसे जानना चाहूँगा—कोई भी व्यक्ति मुझे वह तरीका बता सकता है।

"अब हम पाँच मिनट मौन प्रार्थना करेंगे। आज मार्ग में आते समय मधुर हरि-कृष्ण-राम का कीर्तन हुआ था। इतना सुन्दर गायन हुआ कि सुनते सुनते मेरी आँखों से पानी बहने लगा।"

मौन प्रार्थना के बाद भी लोगों की भीड़ जमा होती रही—बहुत लोग आते रहे। बाबा कई बार बाहर आकर लोगों से मिले। उसके बाद तीन दानपत्रों की घोषणा की गयी।

सायम् प्रार्थना के बाद बाबा सो गये। उसके बाद रंगपुर के ए डी सी साहब और सैदपुर के कुछ अफसर आये। उनसे थोड़ी बातचीत हुई और उसके बाद वे लोग विदा लेकर चले गये।

*बारहवाँ दिन

१२ भक्त का काम ईश्वर की इच्छा

अब प्रतिदिन रात के साढ़े तीन बजे यात्रा आरम्भ होती थी। परन्तु ठण्डे-ठण्डे में, धूप तेज होने से पहले ही, हम अगले पड़ाव पर पहुँच गये। सैयदपुर रंगपुर जिले के निल्फामारी महकमे में है। अब तक के S D O साहब ने पूर्ववर्ती दिन ही विदा ले ली थी।

मार्ग में सैयदपुर के चन्द मारवाड़ी व्यवसायियों, उनके युवक पुत्रादि और कुछ कर्मचारियों ने अग्रगामी होकर स्वागत किया था—वे बस द्वारा तारागंज के बहुत निकट तक पहुँचे थे। चलते-चलते बाबा ने उनसे साहित्य प्रचार के लिए सम्पत्ति दान की चर्चा की।

सैयदपुर शहर के इलाके में शहर के प्रवेश-स्थल पर, वहाँ के S D O साहब ने विनोबाजी का स्वागत किया। एक पुल पर ही सदर महकमे की सीमा समाप्त हो गयी थी और सैयदपुर आरम्भ हो गया था। वहीं वे लोग प्रतीक्षा कर रहे थे। बालचरों और अन्सारों ने बैण्ड बजाकर और गार्ड ऑफ ऑनर देकर स्वागत किया तथा साथ-साथ चलने लगे। सैयदपुर के डाक-बँगले में ठहरने की व्यवस्था की गयी थी। आठ बजे के कुछ बाद ही हम लोग वहाँ पहुँच गये।

रास्ते में बहुत भीड़ हुई थी—छोटे बच्चे कतार पर थे। डाक-बँगले में पहुँचने के पहले ही लगभग दो हजार लोग जमा हो गये थे। भाषण की व्यवस्था थी। विनोबाजी ने वहाँ उपस्थित लोगों को सम्बोधित कर कहा :

दपदूल स्वर्ग में उतर आना है

"आज मेरी पाकिस्तान-यात्रा का बारहवाँ दिन है। इन कुछ दिनों

---

*बारहवाँ दिन ११ सितम्बर—तारागंज से सैयदपुर—८ मील।

में मुझे आप लोगों से बहुत प्रेम मिला है—मैं इस प्रेम के दर्शन के लिए ही आया हूँ। भारत के प्रति मेरा जो प्रेम-भाव है, पाकिस्तान के प्रति भी वही प्रेम भाव है—केवल पाकिस्तान ही नहीं सभी देशों के प्रति मेरे मन में वैसा ही प्रेम-भाव है। मेरा काम तो सर्वत्र हृदय जोड़ने का है इसलिए पहले दिन से ही मैंने प्रेम सहित भूदान माँगा। अनेक लोगों को यह सन्देह था कि यह काम नहीं होगा किन्तु मुझे विश्वास था कि भूदान मिलेगा। कारण यहाँ जिस तरह भूमिहीन लोग हैं उसी तरह भूमिवान् लोग भी हैं और उनमें हृदय है। पहले दिन ही एक मुसलमान युवक ने अपनी कुल चार एकड़ जमीन में से एक एकड़ का दान किया। तब मैंने उनके कन्धे पर हाथ रखकर कहा कि भगवान् आपको दुआ देंगे। सुनकर उनकी आँखें भर आयीं। उसके बाद से मैं जमीन पाता रहा हूँ। जरा देखिये एक टुकड़ा जमीन के लिए कितना झगड़ा, मुकदमेबाजी और हत्या तक होती है। इतनी प्रिय जमीन मैं माँग रहा हूँ गरीबों के लिए और दाता आते हैं जमीन देने। यह दृश्य देखने के लिए स्वर्ग से देवदूत उतर आते हैं। यह प्रेम की हवा यदि गाँवों में बहती रहे, तो गाँव कितने शक्तिशाली हो जायेंगे। एक संवाददाता ने पूछा 'आप तो कुछ दिनों के लिए ही इस देश में हैं। तो क्या इस काम को चलाते रहने के लिए किसी संस्था का निर्माण कर जायेंगे? मैंने उत्तर दिया कि संस्था पर मेरा भरोसा नहीं है—मुझे लोगों के हृदय पर विश्वास है। फिर मैंने सोचा कि इस देश में तो बेसिक डेमोक्रेसी है—यूनियन कौंसिल बनायी गयी है। इसके जो चेयरमैन और मेम्बर हैं वे यदि इस काम को हाथ में लें तो सम्पूर्ण पाकिस्तान में दया और करुणा का काम चारों ओर से चले। इसलिए आप लोग यथासम्भव जमीन दें—मैं दाता और प्राप्तकर्ता के बीच निमित्त-मात्र हूँ।"

मैमनपुर पूर्व पाकिस्तान का एक बड़ा व्यापारिक केन्द्र है। यह एक रेलवे-सम्पन्न शहर है—आबादी लगभग ९०-९१ हजार है। बड़ा शहर—सभी चीजों की यहाँ व्यवस्था। एस डी ओ. साहब ने स्वयं ही

सारी व्यवस्था की देखरेख की थी। स्थानीय मारवाड़ी व्यवसायियों ने पार्टी-दल की आहार-व्यवस्था का भार ग्रहण किया था। स्थानीय गण्य-मान्य व्यक्तियों की स्वागत-समिति बनी थी। उसका कार्यालय खोला गया था—कार्यालय में टेलीफोन की व्यवस्था की गयी थी। बाहर के लोगों के लिए होटल भी खुले थे मानो एक बड़ा मेला लग रहा हो। डाक-बँगले के सामने सभा-स्थल पर टिन की छावनी डी गयी थी, जो धूप में तपकर अग्निकुण्ड-सी गर्मी पैदा कर रही थी। मैंने S. D O साहब को बताया कि विनोबाजी टिन की छावनी पसन्द नहीं करते—प्रार्थना-सभा में उन्मुक्त आकाश के ही नीचे खड़े होकर बोलना पसन्द करते हैं। S. D O साहब ने कहा कि इस सम्बन्ध में मेरी बात तो उन्होंने समझी किन्तु विनोबाजी की सुरक्षा के लिए उन्हें कुछ निर्देश भी प्राप्त हैं उन्हींके अनुसार उन्हें व्यवस्था करनी पड़ी है। जो हो पर टिन की छावनी बड़ी मजबूत थी, उसे हटाना सम्भव न हो सका।

सवेरे लगभग दस बजे स्थानीय प्रमुख हिन्दू-मुसलमान आये और अनेक बातों के बारे में विचार-विमर्श करते रहे। वे अच्छी तरह हिन्दी उर्दू समझते थे अतः सारी बातचीत हिन्दी-उर्दू में ही हुई। बीच में दुभाषिये की जरूरत न पड़ी, इसलिए वातावरण एक प्रवाह में चलता रहा।

एक सज्जन ने प्रश्न किया : आपने तो सभी धर्मशास्त्रों का अध्ययन किया है; क्या बता सकते हैं कि कौन-सा धर्म श्रेष्ठ है सबसे अच्छा है?

उत्तर मिला : मैं सभी धर्मों का सार ग्रहण करता हूँ। जो चीज अच्छी होती है उसे ही ग्रहण करता हूँ। जिस प्रकार मधुमक्खी विभिन्न पुष्पों से मधु का संचय करती है उसी प्रकार मैं सब धर्मों से अच्छी-अच्छी चीजें लेता हूँ।

प्रश्न : आप सब धर्मों से मधु ले लेते हैं तो क्या आपका कोई नया धर्म-सम्प्रदाय चलाने का इरादा है?

उत्तर : नहीं, आजकल अनेक लोगों को यह भ्रान्ति हो रही है कि मेरा धर्म और मेरा सम्प्रदाय ही श्रेष्ठ है—मैं ही स्वयं उत्तम हूँ। मैं

इस मनोवृत्ति को पसन्द नहीं करता, न ही ऐसा मानता हूँ। किसी भी धर्म को मैं ऊँचा-नीचा नहीं मानता। मैं सभी धर्मों से अपनी जरूरत की चीज, अच्छी चीज, ले लेता हूँ। इसका अर्थ यह नहीं है कि बाकी सब चीजें अर्थहीन हैं किन्तु हाँ उनसे मेरा कोई सरोकार नहीं है।

एक अन्य सज्जन ने प्रश्न किया : आप प्रेम की बात करते हैं, तब कश्मीर को लेकर जो झगड़ा है, उसे मिटाने की चेष्टा क्यों नहीं करते ?

विनोबाजी ने हँसकर कहा : यह तो राजनीतिक सवाल है। मैं यहाँ राजनीतिक चर्चा करने नहीं आया। यदि राजनीति की चर्चा करनी होगी तो प्रेसिडेण्ट अयूब खाँ के ही साथ करूँगा आपके साथ नहीं।

यह सुनकर सब लोग हँस पड़े।

भेद दूर होते ही नास्तिकता मिट जायगी

एक सज्जन ने सवाल किया : Marxian तथा कम्युनिज्म संसार में तेजी से बढ़ रहे हैं। इन्हें रोकने का उपाय क्या है ?

उत्तर : मार्क्स थे जर्मन, किन्तु Marxian का प्रयोग International है—सारे संसार में उसका प्रयोग हो सकता है। कारण, कम्युनिज्म ने गरीबों के दुःख दूर करने का बीड़ा उठाया है। सारे संसार में दुःख दुर्दैव है, इसी कारण Marxian ने अन्तर्राष्ट्रीय रूप ग्रहण किया है। मार्क्सवादी कुछ भी नहीं मानते, किन्तु उन्होंने सभी भेदों को दूर करने पर जोर दिया है। वे भगवान् को नहीं मानते, नास्तिकता का प्रचार करते हैं। इसका कारण यह है कि संसार में जितने आस्तिक लोग हैं वे ईश्वर के नाम पर आपस में ही लड़ाई करते हैं और गरीबों की सहायता करने के बजाय उनका शोषण करते हैं। कम्युनिज्म और नास्तिकता को दूर करने के लिए यह जरूरी है कि संसार में जितने आस्तिक लोग हैं वे अपने आपसी विवाद खतम करें और गरीबों का दुःख दूर करने में तत्पर हों।

धर्म राजनीति भूदान आदि अनेक विषयों पर चर्चा हुई, प्रश्नोत्तर हुए—खूब उत्साह और प्रसन्नता के बीच। बातचीत के समय एक

मुसलमान समाज-सेवी युवक बाबा के सामने ही बैठे थे और प्रश्न आदि कर रहे थे। प्रश्न का उत्तर देते समय बाबा लगभग हर बार उनकी पीठ थपथपा देते थे—वे यूनियन-कौन्सिल के एक सदस्य भी थे। बाबा ने उनसे और स्थानीय अनेक प्रमुख लोगों से भूदान-कार्य का दायित्व ग्रहण करने को कहा और दान लेकर आने का अनुरोध किया। उक्त युवक महोदय बाद में एक दाता से एक दान ले आये।

यहाँ शहर की यही बात—बड़ी व्यवस्था। सारा दिन लोग दर्शनार्थ आते रहे—किन्तु एक भी बड़ा भूदान नहीं मिला।

अपराह्न साढ़े चार बजे डाक-बँगले के मैदान में प्रार्थना सभा हुई—उस समय काफी धूप थी। उस पर से टिन की छावनी की गर्मी। अतः बाबा ने बड़ा संक्षिप्त भाषण किया :

भक्त का काम ईश्वर की इच्छा से होगा

"संसार में एक-पर-एक समस्याओं का जन्म हो रहा है और उनका समाधान नहीं मिल रहा है। बड़े-बड़े महापुरुष अपने-अपने युग में अनेक काम कर गये हैं फिर भी समस्या रह ही गयी है। इसलिए मैं किसी समस्या के समाधान का भार लूँगा—मुझे ऐसा कोई अहंकार नहीं है। मुझसे जितनी कुछ सेवा सम्भव है मैं उतनी करके जा सकता हूँ। बाकी ईश्वर की इच्छा। यहाँ अब तक १५ बीघा जमीन मिली है। रंगपुर जिले की जनसंख्या के हिसाब से देखा जाय तो एक व्यक्ति के हिस्से में डेढ़ बीघा खेती योग्य जमीन पड़ती है। अतः इस १५ बीघा जमीन से १ व्यक्तियों के जीवन-निर्वाह की व्यवस्था हो गयी। यह कोई छोटी बात नहीं है। मैं इतने से ही सन्तुष्ट हूँ। मैं यहाँ कोई संस्था स्थापित करना नहीं चाहता—मैं भगवान् का भक्त बनना चाहता हूँ। मैं भगवान् के भक्त पर विश्वास रखता हूँ। यदि भगवान् की इच्छा होगी तो उनका कोई भक्त इस देश में इस काम को अपने हाथ में ले लेगा। मैंने अपने जीवन में जो कुछ काम किया

है, जितना कम रहा है, उसकी तुलना में भगवान् ने मुझे अधिक दे दिया है। संवाददाताओं ने मुझसे पूछा है कि मेरे पूर्व पाकिस्तान से चले जाने के बाद यह काम कौन करेगा? मैं कहता हूँ कि इस देश के बेसिक डेमोक्रेसी के अस्सी हजार सदस्यगण यह काम हाथ में ले सकते हैं—बशर्ते यदि उन्हें प्रेरणा दें, तो काफी बड़ा काम होगा। भारत में भूदान का काम बहुत आगे बढ़ा है लेकिन वहाँ इसके लिए कोई संगठन नहीं है। यहाँ तो अस्सी हजार सदस्यों का एक व्यापक संगठन भी विद्यमान है इसलिए यहाँ काफी बड़ा काम हो सकता है।

'आपमें से अनेक लोग बड़ी देर से धूप में, भीड़-भाड़ में, खड़े हैं। आप लोगों को बड़ा कष्ट हो रहा है अतः अब मैं अधिक नहीं बोलूँगा। अब पाँच मिनट के लिए मौन प्रार्थना। हम सब भगवान् से प्रार्थना करेंगे—सत्य प्रेम, करुणा निर्भयता और शान्ति माँगेंगे।

मौन प्रार्थना के बाद, दानों की घोषणा से पहले ही एक सज्जन ने उठकर सभा-भंग की घोषणा कर दी। सब लोग उठ खड़े हुए—गड़बड़ी शुरू हो गयी। पहले सभाओं में जिस तरह शान्ति के साथ भूदान-प्राप्ति की घोषणा की जाती थी, उस तरह यहाँ सम्भव न हो सकी। फिर भी तीन दान मिलने की बात सबको बता दी गयी। बाद में एक और दान मिला। ठैमरपुर में कुल चार दान मिले।

सभा के बाद जब बाबा उतर आये, बड़ी देर तक बाबा मैदान में टहलते रहे। वहीं एक जगह बैठकर उन्होंने सान्ध्यकालीन दुग्ध-पान भी किया। रंगपुर के ए० डी० सी० साहब मिलने आये। उनका परिचय करा दिया। वे पूर्वकी दिन रात में लगभग आये थे। विनोबाजी ने उनसे पूछा: "जिन भारतीय नागरिकों ने भूमि-दान किया है उनके दानपत्रों की रजिस्ट्री में कोई कठिनाई है क्या?" ए० डी० सी० साहब ने कहा: "नहीं कोई कठिनाई नहीं है। कई नियम-कानून हैं उनके अनुसार काम कर लेना होगा। इसमें बाधा या कठिनाई कोई नहीं है।"

तब तक सान्ध्यकालीन प्रार्थना का समय हो गया था। बाबा जिस

कमरे में थे, उसीमें प्रार्थना हुई। स्थानीय अनेक लोगों के साथ-साथ ए थी सी साहब भी प्रार्थना में बैठे।

शाम को स्थानीय हरिजन-सम्प्रदाय के लोग मिलने आये—स्त्रियाँ। एक हरिजन वृद्धा ने आकर बाबा को प्रणाम किया। वह अच्छी तरह देख नहीं पाती थी। बाबा से उसने आशीर्वाद मांगा। बाबा ने पूछा: "राम का नाम लेती हो न?" उसने कहा "जी हाँ लेती हूँ।"

सैयदपुर ही रंगपुर जिले का अन्तिम पड़ाव था। अतः यहाँ रंगपुर जिले के सरकारी कर्मचारियों ने विदा की।

पूर्व पाकिस्तान में बाबा की पदयात्रा के दिन समाप्ति पर आ रहे थे—अब और चार दिन शेष थे। सहयात्री कार्यकर्ताओं के साथ आज संयुक्त रूप से विशेष विचार-विमर्श नहीं हुआ। बाबा ने आज सूचित किया कि कल से वे प्रतिदिन दस बजे कार्यकर्ताओं के साथ बैठेंगे।

नोआखाली के वृद्ध कविराज पयोदाबाबू ने यहाँ से विदा ली। हमारे पदयात्री-दल में आज तीन और सज्जन आ मिले। रंजन के परिचित, मिदनापुर के एक सेवापरायण युवक विष्णुचरण राय और उनके एक साथी आये। वे विनोबाजी के साथ कुछ दिन बिताना चाहते थे। यात्री दल का कुछ काम भार लेने के लिए भी उन्होंने आग्रह दिखाया। उनके आने से हमें सुविधा ही हुई क्योंकि कार्यकर्ताओं की कमी थी। मैंने उनसे पदयात्री दल में शामिल होने के लिए कहा और बाबा के स्वभाव के मेल-मिजाज में सहायता पहुँचाने का अनुरोध किया। इन दोनों सज्जनों के अलावा नारायणगंज के प्रसिद्ध कांग्रेसी और रचनात्मक कार्यकर्ता बसाउद भी भगवत सान्याल महाशय भी आज पदयात्री-दल में सम्मिलित हुए। ●

*तेरहवाँ दिन 13 स्वर्ग-नरक—धनी-गरीब—ईश्वर की परीक्षा

कल की प्रार्थना-सभा में यह बताये जाने पर भी कि आज के पड़ाव की दूरी कम थी और रास्ता काफी अच्छा था बाबा ने रात के चार बजे रवाना होने का ही सिद्धान्त कायम रखा। इसके अनुसार ही यात्रा शुरू हुई। बाबा से थोड़ा पहले आशादेवी हठात् अचेत होकर गिर पड़ीं, उनके लिए पैदल चलना कठिन हो गया अतः माल-असबाब वाली एक मोटर-वैगन में उनके भी जाने की व्यवस्था की गयी। कुमीं ने काफी पहले आलोकदिहि के पड़ाव पर पहुँच गयीं।

खैरपुर के डाक बंगले से लगभग दो मील की ही दूरी पर रंगपुर और दिनाजपुर का सीमान्त है। इस सीमान्त पर रंगपुर के डिप्टी कमिश्नर, पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट, निलफामारी के एस० डी० ओ० आदि ने विनोबाजी को विदा दी और दिनाजपुर के डिप्टी कमिश्नर, पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट तथा सदर के एस० डी० ओ० ने उनका स्वागत किया। दिनाजपुर के डिप्टी कमिश्नर, मिस्टर हसन मेरे पूर्व-परिचित बन्धु थे। हम सब प्रातः सात बजे आलोकदिहि हाइस्कूल के प्रांगण में उपस्थित हुए।

यहाँ प्रार्थना-मंच पर दो मारक पहले से ही रखे हुए थे—स्थान को बहुत अच्छी तरह सजाया गया था। प्राकृतिक वातावरण भी बड़ा सुन्दर था। पक्के मार्ग पर मीरकसा में खड़े कई विराट् महुआ-वृक्ष मानो अपनी छाया में विश्राम करने के लिए सबको आमन्त्रित कर रहे थे। मुझे याद है जब मैं विनोबाजी की पदयात्रा का कार्यक्रम और पड़ाव ठीक करने आया था तब इन वृक्षों तथा स्कूल के मैदान को देखकर यहीं और

---

*तेरहवाँ दिन १० दिसम्बर—खैरपुर से आलोकदिहि—७ मील।

धर्मशाला थी और इस हाइस्कूल को ही पड़ाव निश्चित किया था। पास में ही एक पतली नदी बहती है—विद्यालय के सामने और पीछे विराट मैदान है। उन वृक्षों के नीचे अनेक लोग खड़े थे। यहाँ पहुँचते ही विनोबाजी ने एक छोटा-सा भाषण किया। भाषण के बीच में ही पानी की हलकी-हलकी बूँदें पड़ने लगीं और भाषण के बाद कुछ मिनट तक वर्षा हुई। उठने सवेरे, साढ़े छह बजे, स्कूल के मैदान में लगभग पाँच सौ लोग जमा हो गये थे। विनोबाजी ने कहा

भूदान में प्रेम का प्रत्यक्ष प्रकाश

प्रेम एक ऐसी चीज है, जिसे बाहर से प्रकाशित करना कठिन है—ईश्वर या हाथ की सहायता से यदि उसे प्रकाशित करना चाहें, तो वह दुर्लभ होता है—प्रेम का प्रकाशित होना कठिन है। किन्तु प्रेम को प्रकाशित न करने से भी शान्ति नहीं मिलती। मैंने प्रेम को प्रकाशित करने का एक मार्ग पाया है। हम लोगों में जो प्रेम है उसे प्रत्यक्ष प्रकाशित होना चाहिए। गाँव में जितने गरीब लोग हैं उन्हें थोड़ी-थोड़ी भूमि का दान देने से वह प्रेम प्रकट होता है। रंगपुर जिले की तुलना में दिनाजपुर जिले में जमीन कुछ अधिक है। जो भी हो आप लोग अपनी जमीन का थोड़ा हिस्सा गरीबों को दें। इससे गाँव में प्रेम-भाव बढ़ेगा। गाँव के सब लोग बैठकर विचार कीजिये कि कौन कितनी जमीन देगा। जमीन किसको मिलेगी किसे यह भी गाँव ही निश्चित कर देंगे और जमीन का कब्जा गरीब को दे देंगे। जमीन में अभी यदि फसल लगी हो तो उसके कटने के बाद भूमिहीन उसमें खेती करेंगे। जिसे आप जमीन देंगे, उसे पहले वर्ष आपको बीज की भी सहायता देनी होगी। इस तरह गाँव में प्रेम का सम्बन्ध बढ़ने से गाँव की शक्ति बहुत बढ़ेगी। यदि आपस में मनमुटाव रहता है तो शक्ति घटती है—और प्रेम का सम्बन्ध बढ़ने से शक्ति बढ़ती है। मेरे यहाँ से चले जाने के बाद इस काम को कौन करेगा मुझे इसकी चिन्ता नहीं है—ईश्वर की इच्छा

होगी तो कोई दरदवाले सज्जन इस काम को अपने हाथ में लेंगे ही।"

जलपान आदि के बाद ई० पी० आर० के एक युवक मेजर ने मुझसे विनोबाजी के सम्बन्ध में कुछ जानना चाहा और फिर सुविधा के अनुसार उनसे मुलाकात करनी चाही। मैंने उन्हें संक्षेप में विनोबाजी का जीवन-चरित्र और भूदान-आन्दोलन की विकास-गाथा सुनायी। बाबाजी से उनका परिचय भी करा दिया। मेजर ने उनके साथ बातचीत की।

बाबा के घर में घुसा तो देखा कि वे सरमा और असमा के हाथों के साथ-साथ अपना हाथ भी देख रहे हैं। मैंने हँसकर कहा 'बाबा यदि हाथ देखना जानते हैं तो काफी बड़ा व्यवसाय आरम्भ किया जा सकता है। रुपये की कमी नहीं होगी। एक हाथ एक हजार रुपये। तब फिर साहित्य-प्रचार के लिए रुपये की कमी नहीं रहेगी।" बाबा खूब हँसने लगे, बोले "अमेरिका में हाथ देखना बहुत बड़ा रोजगार है।" मैंने कहा: "कोई हाथ देखना जाने या न जाने, पर, हाथ देखने का ढोंग करके भी कुछ बोल देने से ही थोड़ा रोजगार हो जाता है।" थोड़ी देर खूब हँसी रही, फिर बाबा बोले: "इन दोनों बहनों के हाथ खूब मजबूत हैं। मेरे हाथ कितने नरम पड़ गये हैं। ये मजबूत हैं—खूब काम कर सकती हैं।' अब मैंने मेजर साहब की बात कही। उन्होंने कहा: "गाँव के लोग जब मिलने आयेंगे, तभी उन्हें भी आने के लिए कहो। उसी समय उनसे बातचीत करूँगा।'

स्वर्ग-नरक

दस बजे विनोबाजी पूर्व पाकिस्तान के पदयात्री कार्यकर्ताओं के साथ बैठे। उन्होंने कहा: मेरे 'पईस आफ भूदान' के सम्बन्ध में 'भूदान' पत्रों में अच्युत देशपाण्डेजी ने एक लेख लिखा है। मिस्टर खान ने उस लेख में देखा है कि मैंने स्वर्ग-नरक के सम्बन्ध में एक श्लोक उद्धृत किया है। मिस्टर खान का सवाल है कि इस जीवन के बाद हम

लोगों के कर्मों के अनुसार सचमुच स्वर्ग-नरक है क्या ? अथवा, समाज में नैतिकता कायम रखने के लिए ही स्वर्ग-नरक के काल्पनिक प्रलोभन और भय की व्यवस्था की गयी है ? या कि इस जीवन में ही स्वर्ग-नरक है—इसके बाहर की बातें केवल कल्पना हैं ?

"इसमें सन्देह नहीं कि इस लोक में भी अर्थात् इस जीवन में भी स्वर्ग और नरक है। देखा जाता है कि अनेक लोग धर्म-पथ पर चलने के बावजूद इस जीवन में सुख नहीं पाते, जब कि अनेक लोग अधर्म के पथ पर चलकर भी अनेक अनुचित काम करके भी सुख से जीवन बिताते हैं। कोई कहता है कि पाप-पुण्य का फल अभी भले न मिला हो पर इस जीवन में मिलेगा अवश्य, और कोई कहता है कि इस जीवन में फल भले न मिले परलोक में अवश्य मिलेगा। ईसामसीह धर्म-पथ पर चलकर सूली पर चढ़े, किन्तु बाद में, बहुत वर्ष बाद भी, कोटि-कोटि लोगों के हृदय में उनका निवास है।

"कर्मफल अनिवार्य है—यह दिखाने के लिए मृत्यु के बाद स्वर्ग-नरक की बात हिन्दू बौद्ध जैन ईसाई इस्लाम सभी धर्मों में है। विभिन्न धर्मों में स्वर्ग नरक के जो वर्णन हैं उन्हें मैंने नहीं पढ़ा। हिन्दू जैन बौद्ध वैदिक वैष्णव शैव आस्तिक और नास्तिक ये सब पुनर्जन्म को मानते हैं—इस जीवन में हम जो कुछ काम करते हैं उनके अधूरा रहने पर, उन्हें पूरा करने के लिए पुनः जन्म लेना होता है। इस प्रकार जब काम पूरा हो जाता है तब मुक्ति मिल जाती है।

"इस जीवन में हम देखते हैं कि लोग रात में सोते हैं और दिन में जागते हैं। रात में समस्त इंद्रियाँ अन्दर आ जाती हैं और दिन में बाहर निकलती हैं। दिन में जितना श्रम करना होता है रात में प्रायः उतना ही विश्राम मिलता है और अगले दिन हम पुनः नये उत्साह से काम करते हैं। निद्रा मानो मृत्यु का पूर्व-प्रयोग—रिहर्सल—हो। यह काम हम रोज करते हैं। हमारी जानकारी यही है कि निद्रा से पहले जो तीव्र भावना रहती है जागरण पर पुनः वही मिलती है। इसीलिए

कहा जाता है कि सोने से पहले भी ईश्वर का स्मरण करो और उसके बाद भी। गीता में कहा गया है कि मृत्यु के समय जो भावना रहती है, परलोक में वही मिलती भी है। मनोविज्ञानवेत्ता लोग कहते हैं कि मनोभूमि में एक विचार रखा और फिर सो गये। इस सोने का अर्थ यह है कि उस विचार-बीज को मिट्टी से ढँक दिया गया और सोकर उठने के बाद भावना का अंकुर बाहर निकला। नींद के समय चित्त के पूर्णतः शान्त रहने पर ही विचार-बीज का विकास होगा। यदि नींद में बाधा पड़े, अर्थात् स्वप्न आवें तो आराम नहीं मिलता और बीज का अंकुर नहीं निकलता—इस दृष्टि से सुस्वप्न और दुःस्वप्न, दोनों ही विकारी हैं। फिर भी सुस्वप्न से मन प्रसन्न रहता है और दुःस्वप्न से मन को कम विश्राम मिलता है। दुःस्वप्न से हम भयभीत होते हैं। गुरुदेव (रवीन्द्रनाथ) ने 'दुःस्वप्ने आसिके राखा को' गीत गाया है। हम जितना काम करते हैं प्रायः उतना ही विश्राम करते हैं। जो एक चीज आराम या विश्राम नहीं पाती वह है प्राण। जागरण और निद्रा, दोनों ही अवस्थाओं में प्राण का काम चलता रहता है। योगी लोग जब समाधिस्थ होते हैं—प्रज्ञा-समाधि में नहीं ध्यान-समाधि में—तब प्राण को कुछ आराम मिलता है। साधारण लोगों की यह अवस्था नहीं होती। मनुष्य सबको आराम देता है, किन्तु प्राण को आराम नहीं देता—प्राण को आराम देने के लिए ही मृत्यु की व्यवस्था है। साधारणतः दिन में जितना काम या परिश्रम होता है रात में उतना ही विश्राम होता है। इसी तरह जीवन है—जितना लम्बा जीवन, उतनी ही लम्बी मरण-निद्रा। तदुपरान्त जागरण या नया जीवन। मरण-निद्रा में यदि स्वप्न होता हो तो वह भी उतना ही लम्बा होगा—दो साल या पाँच-दस साल। यदि वह स्वप्न खराब हो तो नरक होगा—यदि स्वप्न अच्छा हो तो स्वर्ग होगा। हम निद्रा में जो स्वप्न देखते हैं उनका अच्छा-बुरा नतीजा भी दिखाई पड़ता है। कोई-कोई तो रोने लगते हैं। नींद टूट जाने पर स्वप्न के सब दुःख दूर हो जाते हैं किन्तु निद्रा

स्वप्न में भोगों में जो आँसू आये, वे तो उसे हुए, सामयिक भले हों। मरण-निद्रा में जो दीर्घकालव्यापी स्वप्न दीखता है, उसका गुरुत्व अधिक है। उसे सामयिक कहकर टाला नहीं जा सकता। और यदि किसीकी मरणरूपी दीर्घ निद्रा निस्स्वप्न होती है तो हम कहते हैं कि वह स्वर्ग या नरक में नहीं, ब्रह्मलोक में गया। स्वप्न में हम जितना भी पुरुषार्थ करें, वह सत्य नहीं होता। स्वप्न के समय हम अच्छे-बुरे काम नहीं करते, अच्छे-बुरे का भोग करते हैं। उस समय कर्म का जो अनुभव होता है, वह मिथ्या होता है। किन्तु उस समय सुख या दुःख का जो भोग होता है वह सत्य होता है। शास्त्रकारों ने स्वर्ग-नरक के बारे में कहा है कि नाना प्रकार की अभिरुचियों के संस्कार स्वप्न में आते हैं—यदि संस्कार उस समय कार्यशील रहते हैं—खराब संस्कार रहने से खराब स्वप्न आयेंगे।

"एक बार भारतन कुमारप्पा ने मुझसे पूछा कि मैं स्वप्न देखता हूँ या नहीं। मैंने जवाब दिया कि आजकल कम ही देखता हूँ। उन्होंने कहा कि बाल्यावस्था में वे परीक्षा देने का स्वप्न देखा करते थे। नयी तालीम में परीक्षा की कोई व्यवस्था नहीं है इससे उन्हें बड़ा आनन्द हुआ था।

'महाभारत में भीष्म की शर-शय्या का उल्लेख है। मैंने उस शर शय्या का स्वप्न देखा। भीष्म तो निर्विकार थे, किन्तु शर मेरा शरीर को बींधते थे। मन में जितने संस्कारों का निर्माण हुआ है वही स्वप्न में दिखाई देते हैं। अर्थात् हम यदि इस जीवन में सत्कर्म करते हैं तो स्वर्ग-भोग होता है और यदि असत्कर्म करते हैं तो नरक-भोग होता है।

"एक बात और है। जिन्होंने पुण्य कर्म किये हैं उन्हें दूसरे जन्म में स्वर्ग-भोग के पश्चात् नया जीवन नवजीवन, प्राप्त होगा—यही है वास्तविक फल। इसी प्रकार नरक-भोग के बाद का जीवन दुर्बुद्धियुक्त जीवन होगा। और, निस्स्वप्न मरण-निद्रा अर्थात् ब्रह्मलोक के बाद जो जीवन मिलेगा वह समत्व-बुद्धि से युक्त होगा और इस तरह तीनों जन्मों के बाद जन्म की प्रक्रिया बन्द हो जायगी। सद्बुद्धि दुर्बुद्धि

तथा समत्व-बुद्धि-जीवन यही तीन जीवन हैं और स्वर्ग, नरक तथा मर्त्यलोक, ये तीन आवास-स्थितियों के परिणाम हैं। यह एक दर्शन मुझे प्राप्त हुआ है।

"कुरान में कहा गया है कि एक तोला पुण्य करने से दस तोला फल मिलता है, किन्तु एक तोला पाप करने से एक तोला ही फल मिलता है। माँ भी सन्तान के साथ ऐसी ही व्यवस्था करती है। माँ की न्याय व्यवस्था जिस प्रकार स्नेह-मिश्रित होती है, ईश्वर ने भी उसी प्रकार प्रेम-युक्त दण्ड की व्यवस्था की है।"

कार्यकर्ताओं के साथ बातचीत के समय ही दिनाजपुर के डिप्टी कमिश्नर मिस्टर इसम आये। शिविर की व्यवस्था आदि के सम्बन्ध में और कुछ करना शेष है या नहीं उन्होंने यह जानना चाहा। मैंने उनसे थोड़ा रुककर बाबा से मिलकर जाने को कहा। किन्तु वे अपने शिविर की व्यवस्था देखने के लिए जल्दी जाना चाहते थे और 'मुलाकात तो फिर हो जायगी' कहकर उन्होंने तुरन्त विदा ले ली।

कार्यकर्ताओं के साथ बातचीत समाप्त होने के थोड़ी देर बाद ही गाँव के प्रमुख लोगों के साथ बैठक हुई। उस बैठक में एस० डी० ओ० साहब सी० ओ० साहब ई० पी० आर० के पूर्वोक्त मेजर साहब और यूनियन-कौंसिल के कई चेयरमैनों तथा सदस्यों ने भाग लिया।

गुण ही मनुष्य के अन्तर का प्रवेश-द्वार—दोष प्रवेश-रोधक

विनोबाजी ने उनसे कहा : "मैं पूरी श्रद्धा और विश्वास लेकर ही जनता के पास जाता हूँ। यदि मनुष्य के अन्तर में प्रवेश करना है तो उसके गुणों से होकर ही प्रवेश करना होगा। यदि उसके दोषों से होकर प्रवेश करने की चेष्टा की जायगी, तो प्रवेश तो नहीं ही मिलेगा केवल धक्के खाने को मिलेंगे—ठीक वैसे ही जैसे घर में प्रवेश करने के लिए दरवाजे से होकर ही जाना होगा दीवार से होकर घुसने की चेष्टा करने पर घर में प्रवेश तो नहीं ही मिलेगा दीवार के धक्के खाने

होंगे। घर का दरवाजा है मनुष्य का गुण और दीवार है मनुष्य का दोष। मैं चंबल की बागड़-घाटी में मैं गया था। वहाँ कई वर्षों से डाके पड़ रहे थे। सरकार की पुलिस डाकुओं का दमन नहीं कर पा रही थी। वहाँ बीस डाकुओं ने बन्दूक के साथ आकर मेरे सामने आत्मसमर्पण किया। मैंने उन्हें पुलिस के हाथ सौंप दिया। उन्होंने मेरी बात मान ली, इसका कारण यह था कि सैकड़ों दोषों के रहते हुए भी उनके गुणों पर मुझे विश्वास था। यहाँ जनता से मैं जो प्रेम और भूमि का दान पा रहा हूँ, उसका कारण यह है कि उसके प्रति मेरे मन में प्रेम-भाव है और उसके प्रेम पर मेरा पूरा विश्वास है। बच्चे के कोई चीज माँगने पर मां 'ना' नहीं कर पाती, वह उधार करके भी वह चीज लाकर बच्चे के हाथ में देती है। इसका कारण यह है कि बच्चा अपने सम्पूर्ण विश्वास से ही माँ से कोई चीज मांगता है। मैं भी बच्चे का विश्वास लेकर ही जनता के पास जाता हूँ और माँगता हूँ। इसीलिए जनता मुझे 'ना' नहीं कर पाती। इस देश की बेसिक डेमोक्रेसी के सम्बन्ध में मैंने कहा है कि सैनिक शासन के अन्त के हिसाब से यह अच्छी शुरुआत हुई है। यदि यह संस्था—यूनियन-कौंसिल—प्रेम और करुणा-सहित ग्रामोन्नति का काम करे, तो डेमोक्रेसी का क ख ग आरम्भ होगा और अन्त में वास्तविक डेमोक्रेसी की स्थापना में सहायता मिलेगी।"

विनोबाजी का यह भाषण समाप्त होने के साथ-साथ यूनियन-कौंसिल के एक चेयरमैन उठकर बोले : "मुझमें स्वयं तो कुछ काम करने की शक्ति नहीं है लेकिन तब मैं एक एकड़ जमीन का दान करता हूँ।" बाबा ने हाथ पकड़कर उनका मान किया और इस तरह गाँव के प्रमुख लोगों की बैठक समाप्त हुई।

इस बैठक के समाप्त हो जाने के बाद पूर्वोक्त मेजर साहब ने बाबा से बातचीत की—बातचीत अंग्रेजी में हुई। उनका मुख्य प्रश्न था : "संसार में युद्ध का अन्त किस तरह होगा और शान्ति किस तरह आयेगी? आपकी इस पदयात्रा का उद्देश्य क्या है?" बाबा ने उन्हें

समझा दिया। इस तरह के प्रश्नों के उत्तर पहले के भाषणों में उन्होंने जिस तरह दिये थे, उसी तरह उन्हें भी समझा दिया। बातचीत के बाद कुछ फोटो उतारने के बाद मेजर साहब ने विदा ली। इसके बाद दोपहर की प्रार्थना करके बाबा विश्राम करने चले गये।

दोपहर के भोजन आदि के बाद मैंने थोड़ा विश्राम करने की चेष्टा की, किन्तु लोगों की भीड़ के कारण वह सम्भव न हो सका। बीच में थोड़ी वर्षा हुई और अपराह्नकालीन प्रार्थना-सभा के लगभग आध घंटा पहले रुक गयी।

प्रार्थना-सभा यथारीति चार बजे आरम्भ हुई। मैदान भीगा था फिर भी बहुत सारे लोग भीगी जमीन पर ही बैठे थे। उधर पक्की सड़क के वृक्षों के नीचे तक लोग खड़े थे। इस छोटे-से गाँव में लगभग दस हजार लोग जमा हो गये थे। दो माइक रहने के कारण विनोबाजी के भाषण का अनुवाद करने में विशेष सुविधा हुई। अपने भाषण में विनोबाजी ने कहा :

"प्रिय भाइयो! आज मेरी पाकिस्तान-यात्रा का तेरहवाँ दिन है। आप लोगों को देखकर मुझे बड़ा आनन्द हो रहा है। थोड़ी देर पहले वर्षा हुई है। ईश्वर की कृपा से अब प्रार्थना-सभा के समय वर्षा थम गयी है। मेरी पाकिस्तान-यात्रा के १६ दिनों में से अब ३ दिन बाकी हैं।

धनी-गरीब—ईश्वर की परीक्षा

"हमारे समाज में धनी-गरीब, दोनों प्रकार के लोग हैं। ऐसा क्यों हुआ? कुरान में कहा गया है—परीक्षा के लिए। जिस तरह स्कूल में छात्रों की विभिन्न विषयों में परीक्षा होती है, उसी तरह ईश्वर ने दो प्रश्नपत्र रखे हैं—एक धनी लोगों के लिए और दूसरा गरीबों के लिए। गरीबों के प्रश्नपत्र में कहा गया है—तुम्हें कई तरह के दुःख मिल रहे हैं, फिर भी तुम सच बोलोगे, झूठ नहीं; तुम सच्चे होगे, चोरी नहीं करोगे, निर्भय होओगे, अपने को नितान्त असहाय अनुभव नहीं करोगे, उदार

या अन्य नशीली वस्तुओं का सेवन नहीं करोगे ईश्वर का नाम लोगे। गरीब यदि इस तरह चले तो वह परीक्षा में पास होगा। धनी लोगों के सम्बन्ध में कहा गया है—तुम्हें मैंने धनी बनाया है किन्तु दुःखियों के प्रति क्या तुम्हारे मन में प्रेम भाव है उनका दुःख दूर करते हो तो किसीको धोखा तो नहीं देते अहंकार तो नहीं करते ईश्वर का नाम तो लेते हो! यदि ऐसा करो तो तुम भी परीक्षा में पास। और, यदि तुम भोग-विलास में डूबे हो दुःखियों की सहायता नहीं करते नशा करते हो लोगों को धोखा देते हो केवल रुपये जोड़ते हो व्यवसाय में सब चीजों में मिलावट करते हो खाद्य पदार्थों में मिलावट करते हो, दवाओं में मिला वट करते हो, तो तुम परीक्षा में फेल हो। इस तरह ईश्वर धनियों और गरीबों दोनों की परीक्षा ले रहे हैं—वे किसीके भी पक्ष में नहीं हैं। जो लोग सच्चे, ईमानदार, परिश्रमी, प्रेम-भाव रखनेवाले दूसरों के दुःखों का ध्यान रखनेवाले ईश्वर का नाम लेनेवाले और उन पर निर्भर रहनेवाले हैं वही ईश्वर के प्रिय हैं। कुरान का आदेश है कि अपने उपार्जन का कुछ हिस्सा गरीबों को दो। यही बात मैं सब जगह कहता हूँ। यदि गरीबों के प्रति प्रेम-भाव होगा तो आप उन्हें उधार देकर उनसे सूद नहीं लेंगे।

"आपके पास कोई भूखा व्यक्ति आये, तो आप उसे भोजन देंगे; किन्तु कुछ देर बाद ही उसे फिर भूख लग जायगी—तब फिर उसे खिलाना होगा। इस तरह तो उसकी भूख मिटेगी नहीं। भिक्षा मांगना वह आदती बन जायगा और भिक्षा की मनोवृत्ति के कारण मनुष्यत्व पराजित हो जायगा। किन्तु यदि उसे भोजन न देकर थोड़ी जमीन दी जाय, तो वह उसमें परिश्रम करेगा फसल पैदा करेगा—इस कारण भूदान सबसे बड़ा दान है। फिर, भूदानवाला भूमि पर परिश्रम करेगा भोजन उपजायेगा—उसे बार बार भोजन-दान नहीं करना पड़ेगा। भारत में चालीस लाख एकड़ जमीन दान में मिली है। यदि अधिक नहीं, सौ रुपये ही एक एकड़ भूमि का मूल्य माना जाय, तो चालीस करोड़ रुपये

को भूमि दान में मिली है। यहाँ १५ बीघे से कुछ अधिक जमीन प्राप्त हुई है। इतनी मिट्टी हाथ में आयी, लेकिन बाबा के हाथ देखिये—इन हाथों में मिट्टी एकदम नहीं लगी है। भारत में जमीन के बदले यदि चालीस करोड़ रुपये जमा होते, तो उसके रक्षण के लिए, हिसाब रखने के लिए कितना इंतजाम खड़ा करना पड़ता। किन्तु मुझ पर कोई बोझ नहीं है—मैं रात साढ़े चार बजे लेटता हूँ और दो-तीन मिनट में ही सो जाता हूँ।

'पहली बात मैं कहता फिरता हूँ कि जमीन का मालिक भगवान है। कानून के अनुसार मालिक चाहे जो हो किन्तु भगवान् के नियम के अनुसार जमीन का मालिक कोई नहीं है। जिस तरह हवा और पानी का मालिक कोई नहीं है, उसी तरह जमीन का मालिक कोई नहीं है। दूसरी बात मैं यह कहता हूँ कि मद्य सेवन एकदम बन्द होना चाहिए। सभी धर्मों में इसका निषेध है। इस्लाम में तो इसका बहुत सख्त निषेध है। फिर, इस मानव शरीर को शराब पीकर या दूसरी नशीली चीजों का सेवन करके दूषित नहीं करना चाहिए—इन सब चीजों को छोड़ देना होगा। फिर, सब लोग मिलकर एक साथ भगवान् का नाम लें। भगवान् का नाम लोग अकेले भी ले सकते हैं और भिन्न भिन्न सम्प्रदायों के लोग एक साथ भी ले सकते हैं। किन्तु इसके अतिरिक्त, सभी धर्मों के, सभी सम्प्रदायों के, सभी भाषाओं के हिन्दु हम, स्त्री-पुरुष शिक्षित अशिक्षित मिलकर एक साथ भी भगवान् का नाम ले सकते हैं। कई वर्ष पहले मैंने मौन प्रार्थना आरम्भ की तब से अब तक करोड़ों लोगों ने मेरे साथ मौन प्रार्थना की है। संसार के लोग यदि किसी समय प्रेम के रूप में आबद्ध होंगे, एक हृदय होंगे, एकात्मक होंगे, तो ईश्वर के नाम को ही लेकर होंगे। इसलिए सभी देशों में मौन प्रार्थना होनी चाहिए। अब हम लोग पाँच मिनट मौन प्रार्थना करेंगे।"

मौन प्रार्थना के बाद आज प्राप्त दानों की घोषणा की गयी।

शिविर का अग्रगामी दल पहले ही चला गया था—आचार्य और

चौदहवाँ दिन १४ ग्राम-राज्य : विश्व-राज्य

रात दो बजे से थोड़ा पहले देखा कि पानी की कमी है। पूर्वकी दिन व्यवस्था खूब सुन्दर थी—किसीको भी किसी चीज की कमी महसूस नहीं हुई थी। अब पता चला कि दोनों ही ट्यूबवेलों के पम्प खराब पड़े हैं—किसीको भी इसके लिए दोषी नहीं ठहराया जा सकता था। दिन के समय तेज धूप से परेशान प्यासे लोगों ने पानी पीने के लिए अनाड़ी हाथों से अपनी मर्जी के मुताबिक ट्यूबवेलों का उपयोग किया था। अतः पम्पों का खराब होना स्वाभाविक ही था। पदयात्री-दल को सोकर उठने के बाद सबसे पहले आवश्यकता होती है पानी की। अतः मन्टू को बुलाकर एक तार की सहायता से किसी तरह एक पम्प ठीक करके स्त्रियों और पदयात्री-दल के वृद्ध सदस्यों के लिए दो बाल्टी पानी की व्यवस्था की और स्नान शौच प्रार्थना आदि के बाद तैयार हुआ। कल ही लम्बे मार्ग को ध्यान में रखकर यह निश्चित हुआ था कि करुणा और सुहासिनीदी सामानवाली मोटर-वैगन से चली जायँगी। तदनुसार ही वे दोनों और विमलाई गाड़ी में चले गये। यथासमय यात्रा शुरू हुई। लगभग डेढ़ घण्टा बाद बलराह नदी पार की गयी। नदी पार करके आते ही दिखाई पड़ा कि अन्धकार में प्रदीप लेकर एक वृद्धा खड़ी है—उसके एक हाथ में पानी भरा गिलास है। वृद्धा ने बाबा को प्रणाम करके कहा : "चरणामृत दीजिये बाबा!" बाबा ने उसका हाथ पकड़कर कहा : 'इसकी जरूरत नहीं है।" हम लोगों ने भी उसे मना किया कहा "चरण तो धूलों से ढँके हैं।" वृद्धा ने कहा 'बाबा यहाँ एक शिव-मन्दिर है। दर्शन करना चाहें तो चलिये।"

चौदहवाँ दिन ८ दिसम्बर—बालोतिहि से मुजफ्फरपुर—१० मील।

मैंने तो मना किया, पर बाबा ने पूछा : "कहाँ है ? कितनी दूर है ?" वृद्धा ने हाथ दिखाकर कहा : "यहीं पास ही है।" बाबा चल पड़े। हाथ में मशाल लिये वृद्धा आगे चली। एक मिनट का रास्ता था। बाबा मन्दिर के सामने थोड़ा खड़ा रहकर, दर्शन करके हाथ जोड़ नमस्कार कर लौट पड़े। बाबा के इस काम ने पदयात्री दल के सभी लोगों को थोड़ा विस्मित किया। भारत में वे साधारणतः मन्दिरों में इस तरह दर्शन करने नहीं जाते, अतः लोगों ने सोचा था कि आज भी वे नहीं जायेंगे। इस मन्दिर में दर्शन के सम्बन्ध में पड़ाव पर पहुँचने के बाद बाबा ने प्रसंगवश कहा : "मेरे लिए तो मन्दिर में जाकर दर्शन करने का सवाल ही नहीं उठता—मैं तो सर्वत्र ईश्वर के दर्शन पाता हूँ, अतः दर्शन के लिए किसी विशेष स्थान पर जाने की जरूरत ही नहीं रहती। किन्तु विशेष रूप से इस देश में यदि मैं उस वृद्धा के अनुरोध पर दर्शन करने नहीं जाता तो उस मन्दिर की प्रतिष्ठा को ठेस पहुँचती—वृद्धा के मन को भी आघात लगता। इस दर्शन से मन्दिर में शिव की प्रतिष्ठा अक्षुण्ण रह गयी।" थोड़ी देर बाद ही सुन्दर पक्का मार्ग मिला। मार्ग के दोनों ओर आबादी एकदम नहीं थी—गाँव दूर-दूर पर थे। मार्ग में चलते समय पहले की तरह लोगों की भीड़ भी नहीं थी। फिर भी बीच-बीच में, दूर-दूर से आये लोग रास्ते में दर्शनार्थ खड़े मिलते थे। पक्के मार्ग पर आने के बाद से ही मील स्तम्भ दिखायी पड़ने लगे। मील-स्तम्भ देखकर मैं बाबा से कहता कि अब पड़ाव इतनी दूर रह गया है। बात-बात में ही उन्होंने कहा : "दिनाजपुर में तो जमीन अधिक है।" मैंने उन्हें बताया कि जमीन अधिक होने पर भी लोगों के हाथ में अधिक नहीं है। सरकार ने कानून द्वारा जमीन दखल कर ली है। सरकार यहाँ एक फार्म बना रही है। फार्म इस रास्ते के बगल में ही है। फार्म की सीमा निकट आते ही मैंने उसे विनोबाजी को दिखाया। बाबा ने एक बार पूछा : "भूदान कैसा मिलेगा ?" मैंने थोड़े हास्यात्मक ढंग से कहा : "यह सिकदार बतायेंगे। इस काम का भार उन पर है।" बाबा ने हँसकर कहा :

"ग्राम-राज्य से विश्व-राज्य—विश्व-राज्य बनाना ही होगा।" बोलकर वे धीरे धीरे, मानो अपने-आपसे बातें कर रहे हों, यह सोचते हुए चलने लगे कि विश्व-राज्य कैसा हो सकता है।

कुछ देर बाद ही एक बस पास आकर रुकी और उससे उतरकर बहुत-से लोग पदयात्री-दल में शामिल हो गये। वे सब दिनाजपुर से आये थे। बाद में पता लगा कि अगले पड़ाव पर आहार और अन्य व्यवस्था आदि का भार इन्होंने ही ले रखा था। ये लोग साथ-साथ चलने लगे—भीड़ भी क्रमशः बढ़ने लगी। दिनाजपुर से नौवें मील का स्तम्भ जहाँ पर है वहीं एक प्राइमरी स्कूल के मकान में पड़ाव निश्चित किया गया था। हम लोग वहाँ साढ़े सात बजे पहुँचे। यह स्थान देखकर मुझे थोड़ा आश्चर्य हो रहा था। पहले जब मैं रास्ता देख गया था, तब यह निश्चित हुआ था कि हमारा पड़ाव नशीपुर का प्राइमरी स्कूल होगा। किन्तु यह तो वह स्थान नहीं था। एस० डी० ओ० साहब ने कहा कि उन्होंने और डी० सी० साहब ने मिलकर पड़ाव एक मील बढ़ा दिया है—इस स्थान का नाम कुसुम्बापुर है। यह स्थान काफी खुले वातावरण में था—प्राकृतिक सुषमा भी सुन्दर थी। इसी कारण उन्होंने स्थान-परिवर्तन किया था। इससे इतनी सुविधा अवश्य हुई कि विनोबा जी के आज के यात्रा-पथ में एक मील की कमी आ गयी, जो कल के यात्रा पथ में जुड़ जायगी। परिणामस्वरूप रास्ता तय करने का कष्ट आज कुछ कम हुआ। परन्तु पूर्व निर्धारित गाँव के चारों ओर आबादी इसके मुकाबले अधिक थी। यहाँ वैसा नहीं था—इधर उधर थोड़ी दूरी पर लम्बी सी आबादी थी। अग्रगामी दल के कार्यकर्ताओं में से एक ने बताया कि उ[illegible]ान के लिए लम्बर ली गयी है। इस स्कूल की जमीन [illegible] एक सम्पन्न किसान की दी हुई है, स्कूल का मकान भी संथालों ने स्वयं श्रम करके बनाया है बच्चे-बच्चियों के पढ़ने के लिए।

पड़ाव पर सुन्दर शामियाना लगाकर दो हजार की व्यवस्था की गयी थी। प्रायः [illegible] लोग जमा हुए। विनोबाजी ने उनसे कहा :

विश्व-राज्य स्थापित करना होगा

"आज अधिक नहीं बोलूँगा। आज लम्बा रास्ता तय करके आया हूँ। शरीर थोड़ा थका तो है ही किन्तु आपके दर्शन करते ही सब थकान्ति दूर हो जाती है। ऐसा हमेशा देखता हूँ। आज संसार के सब लोग चाहते हैं कि सब एक हो जायँ। विज्ञान के युग का यही तकाजा है। अब यही देखिये लाउडस्पीकर के जरिये कितनी दूर बैठे हजारों हजार लोग मेरी बातें अच्छी तरह सुन लेते हैं। यह देखिये मेरी आँखों पर का यह गहरे हरे रंग का चश्मा—धूप की गर्मी से यह मेरी आँखों की रक्षा करता है फिर इसके जरिये दूर बैठे लोगों के दर्शन भी पा रहा हूँ—रिस्ट वाच फाउण्टेनपेन आदि विज्ञान के नये-नये साधनों ने काम काफी आसान कर दिया है। ये सब चीजें भिन्न भिन्न देशों में बनती हैं और इनके बिना हमारा काम नहीं चलता। विज्ञान की सहायता से सभी देश परस्पर निकट आ रहे हैं। यह बात सही है कि हमें अपनी अधिक आवश्यक वस्तुएँ अपने देश में ही तैयार करनी होंगी, किन्तु ऐसी अनेक वस्तुएँ हैं जिन्हें हम विदेशों से मँगाते हैं और विदेशों को भेजते हैं। इस तरह सारा संसार एक हो रहा है। विज्ञान की जितनी प्रगति हो रही है उतना ही विज्ञान का यह निर्देश आ रहा है—संसार को एक होना होगा। संसार आज पहले की तरह अपरिचित नहीं है दूरस्थ नहीं है। संसार छोटा होता जा रहा है। इसलिए अब विश्व-राज्य स्थापित करना होगा। विश्व-राज्य होगा हमारा देश—पाकिस्तान होगा उसका एक प्रदेश—पूर्व पाकिस्तान होगा एक जिला—दिनाजपुर होगा एक महकमा—और गाँव होगा परिवार। धीरे धीरे ऐसा होगा ही—सभी मनुष्य एक देश के निवासी हो जायँगे।

संघर्ष : बुद्धि (मस्तिष्क) और हृदय का

"हमें अपने हृदय को काफी बड़ा बनाना होगा। विज्ञान के युग में

मनुष्य का मस्तिष्क बहुत बड़ा हो गया है। जब अकबर राज करते थे, तब इंग्लैण्ड से अंग्रेज लोग दो वर्ष चलकर दिल्ली में अकबर के दरबार में पहुँचे, तभी अकबर को पहली बार मालूम हुआ कि इंग्लैण्ड नाम का भी एक देश है। अब तो मामूली स्कूल के बच्चे-बच्चियों को भी मालूम है कि इंग्लैण्ड कहाँ है। आजकल अखबारों के जरिये सारी दुनिया की खबरें अगले दिन मालूम हो जाती हैं। ईरान के भूकम्प की खबर हमें साथ साथ ही मिली है। प्राचीन काल होता तो हमें कुछ भी पता न चलता। हमारा ज्ञान, हमारी बुद्धि काफी बढ़ी है—किन्तु हृदय का विस्तार नहीं हुआ। इसीलिए बुद्धि और हृदय के बीच संघर्ष चल रहा है। परिणामतः मनुष्य की दुःख-दुर्दशा बढ़ती जा रही है। तनिक एक चित्र की कल्पना कीजिये। एक व्यक्ति है जिसका सिर बहुत बड़ा है हाथ पैर खूब बड़े-बड़े हैं किन्तु बीच में हृदय बहुत छोटा है—वह एक हास्यास्पद व्यंग्यचित्र ही तो होगा। आजकल जाति का झगड़ा धर्म का झगड़ा भाषा का झगड़ा मजदूर-मालिक का झगड़ा आदि कई तरह के झगड़े दुनिया में चल रहे हैं। मैं कहता हूँ कि यह सब हृदय और मस्तिष्क का वृद्धि का झगड़ा है। विज्ञान के युग में मस्तिष्क को छोटा करने का कोई उपाय नहीं है इसलिए हृदय को बड़ा करना होगा। मैं यही बात बारह साल से कहता आ रहा हूँ। मनुष्य का हृदय बड़ा करने के लिए हमारे अपने हृदय को भी बड़ा करने की जरूरत है। अपने हृदय को बड़ा करने के लिए ही मैं पाकिस्तान आया हूँ—यदि मैं यहाँ न आता तो मेरा हृदय छोटा रह जाता।"

इसके बाद बाबा स्नान करने चले गये। स्नान करके आने के बाद वे अपने सिंहासन पर बैठे ही थे कि एक महाराष्ट्रीय मुसलमान सज्जन आये। विनोबाजी ने उन्हें सिंहासन पर ही अपनी बगल में बिठाकर मराठी भाषा में बातचीत की।

कालिन्दी बहन ने अपनी डायरी में लिखा है: "मैं स्नान करके बाबा के कमरे में गयी तो देखा कि एक सज्जन बाबा की खाट पर बैठे

बातचीत कर रहे हैं और बाबा खूब हँस रहे हैं। बाबा ने कहा : आप मैं साथ नागपुर-जेल में थे—हम लोग जेल में छह महीने साथ साथ थे। वहाँ से छुटी मिलने पर आप अपने काम से कलकत्ता चले गये और अब पाकिस्तान चले आये हैं। बड़ा ही अच्छा हुआ कि आप मुझसे मुलाकात करने चले आये।

"उक्त सज्जन बोले : 'जी हाँ मुझे तो सब लोग कह रहे थे कि वे आपको कैसे पहचानेंगे। किन्तु मुझे विश्वास था। घर में कुछ परेशानी थी, इसीलिए पहले नहीं आ सका। यहाँ आप प्रेम-दाम और सेवा-दान की बातें कहें। सब धर्म, जाति और मतवाद पर झगड़ रहे हैं। बापू के बाद आपमें ही इस झगड़े को बन्द करने की शक्ति है। आपके कुरान के सम्बन्ध में यहाँ के अखबारों में खूब टीका टिप्पणी हुई है। मैंने कहा है कि आपके मुँह से ऐसा कोई शब्द निकल ही नहीं सकता जो कुरान के विरुद्ध हो।

'बाबा ने कहा 'उसमें इस्लाम की सेवा है। आप उसीका प्रचार करें।

'इस समय बाबा ने मेरी ओर देखकर कहा : 'तुम इनसे मराठी में बात करो। उन जनाब ने मुझसे मराठी में बात की। मैं खूब हँसी। वे वर्धा के हिंगणघाट में थे। मैंने कभी सोचा तक नहीं था कि पूर्व पाकिस्तान के एक गाँव में एक मुसलमान सज्जन मुझसे मराठी में बातचीत करेंगे।"

उक्त सज्जन कुछ देर बातचीत करके चले गये। इसके बाद इस बीच बाबा सहयात्री कार्यकर्ताओं के साथ बैठे। उन्होंने कहा :

विचार-विकास से ही आन्दोलन का जन्म

"आप लोगों ने देखा है कि मैं प्रथम दिन से ही एक मुख्य विषय—भूदान—को केन्द्र बनाकर धीरे-धीरे उसके साथ अन्य अनेक विषयों को जोड़ रहा हूँ। आज जो बोल रहा हूँ उसका अगले दो दिनों में और

विस्तार करूँगा। हृदय और मस्तिष्क, दोनों ही यदि समान आकार के हों तो सभी समस्याओं का समाधान हो जाय। यहाँ आने के बाद इन कुछ दिनों में मैंने पाकिस्तान देश के सम्बन्ध में जो कुछ पुस्तकें पढ़ी हैं, वह अपना हृदय बड़ा करने के लिए ही। मेरा ख्याल है कि इन कुछ दिनों में मुझे एक लाख से भी अधिक लोगों के दर्शन मिले हैं। आज सबेरे मैंने कहा था कि आज पैदल चलकर कुछ विशेष थक गया हूँ किन्तु लोगों के दर्शन से सब क्लान्ति मिट गयी है। यहाँ लोगों में इतनी व्यापक उत्सुकता देखूँगा, यह मैंने पहले नहीं सोचा था। शायद आपने सुना हो मेरी पदयात्रा से पहले वातावरण तैयार करने के लिए यहां कुछ लोगों को भेजने का सवाल उठा था। पर मैं इसके लिए राजी नहीं हुआ। कारण इस देश के जनसाधारण के हृदय पर मुझे विश्वास था। मैं कहता हूँ कि सरकार यदि कोई व्यवस्था न करती तो भी अभ्यर्थना में कोई कमी न आती। मैं एक राष्ट्र से दूसरे राष्ट्र में आया हूँ—वह भी व्यक्तिगत रूप से यहाँ भारत के प्रतिनिधि के रूप में। पण्डित नेहरू ने इस सम्बन्ध में पाकिस्तान-सरकार को बताया था इसलिए पाकिस्तान-सरकार ने सुरक्षा आदि की अच्छी व्यवस्था की है। ऐसा करना उनके लिए स्वाभाविक ही था। थोड़ी देर पहले मेरे पास एक मुसलमान बन्धु आये थे। वे 'भारत छोड़ो' आन्दोलन के समय गिरफ्तार होकर मेरे साथ जेल में रहे थे। उस समय सरकार के किसी काम के विरोध में मैंने तीन दिन अनशन किया। सभी राजनीतिक कैदियों और मेरे इन बन्धु ने इस तीन दिन के अनशन में मेरे साथ सहयोग किया। वे आशादेवी को भी पहचानते हैं। आर्यनायकम्जी (आशादेवी के पति) भी उस समय नागपुर जेल में थे। वे नयी तालीम के सम्बन्ध में व्याख्यान देते थे। मैं व्याख्यान देता था गीता पर। जेल से मुक्त होने के बाद वे बन्धु महाराष्ट्र से कलकत्ता चले गये। Dawn आदि अखबारों ने मेरी आलोचना की थी इन्होंने मेरा समर्थन कर लोगों के मन से मेरे सम्बन्ध में गलत धारणा दूर करने की चेष्टा की।

"महाराष्ट्र में मुस्लिम-शासन सबसे कम समय रहा। फिर भी यह शासन तीन सौ वर्ष तक तो रहा ही। उस समय अधीन होने पर भी लोगों की प्राण-शक्ति अक्षुण्ण थी। उस समय अनेक सन्त प्रकट हुए। ज्ञानेश्वरी की रचना के सात वर्ष बाद मुस्लिम-शासन आरम्भ हुआ और शिवाजी के अभ्युदय तक चला। इस दौरान और भी कई सन्त पुरुषों ने धर्म की शिक्षा दी। उनकी वाणी धर्म की वाणी थी—हिन्दू धर्म की नहीं, सार्वजनिक धर्म की वाणी प्रेम और करुणा की वाणी। उन्होंने राजनीति से हटकर प्रचार किया। इसके बाद अंग्रेजी शासन आया। अंग्रेजी शासन सबसे पहले बंगाल में शुरू हुआ। बंगाल में राममोहन राय के बाद पचास वर्षों के अन्दर जितने महापुरुषों का आविर्भाव हुआ उतना और कभी नहीं हुआ। सम्पूर्ण भारत के सन्दर्भ में भी यही बात लागू होती है। उन्होंने शिक्षा सामाजिक संस्कार, प्रार्थना भक्तिवाद के संशोधन अध्यात्मवाद के संशोधन समाज के संशोधन का काम किया। परिणामस्वरूप देश में जागरण आया। इसके बाद कांग्रेस आयी, फिर गांधीजी आये। उन्होंने कांग्रेस-राजनीति का काम और सामाजिक संस्कार का काम मिला दिया। शिवाजी ने भी ऐसा ही किया। फ्रांसीसी क्रान्ति से पहले विक्टर ह्यूगो ने साहित्य के क्षेत्र में और रूसो तथा वाल्टेयर ने चिन्तन के क्षेत्र में एक क्रान्ति की सृष्टि की। सर्वत्र यही दिखायी देता है—बड़े बड़े राजनीतिक आन्दोलनों से पहले सांस्कृतिक आन्दोलन थे और उनके पीछे एक वैचारिक भूमिका थी।

विश्व-राज्य की वैचारिक भूमिका : भगवान् एक, मनुष्य एक

"मान लीजिये कि यहाँ हिन्दू लोग हैं—जो लोग अल्प संख्या में हैं उन्हें कोई अधिकार नहीं है—वे व्यवहारतः ऐसा देख रहे हैं इसलिए उन्हें ऐसा बोध हो रहा है। यद्यपि कानून में धर्म की स्वाधीनता दी हुई है तथापि सम्भव है औरों के स्तर पर वैसा न हो। किन्तु वर्तमान युग डेमोक्रेसी का युग है—हमें यह समझना चाहिए कि उत्थान अवश्यम्भावी

है—विश्व-राज्य की कल्पना तो लोगों को माननी ही होगी। मैंने इस सम्बन्ध में कहा है—दो-एक वर्षों में क्या फल निकलता है, यह आप नहीं देखेंगे; भविष्य में जो सामाजिक क्रान्ति आयगी, आप उसके अग्रदूत होंगे। हम स्वयं राजनीति में नहीं पड़ेंगे, किसीको चुनाव में खड़ा नहीं करायेंगे—राजनीति से मुक्त रहेंगे। यदि आप इस प्रकार प्रेम-विस्तार का काम करेंगे, तो आपके विरुद्ध कोई शक्ति सिर नहीं उठायेगी—इसका प्रमाण मेरी यह पदयात्रा है। पाकिस्तान-सरकार, यह सोचकर कि मेरे आने से अशान्ति बढ़ेगी, मुझे यहाँ आने की अनुमति नहीं भी दे सकती थी। यदि वह अनुमति न देती, तो उसे दोषी नहीं ठहराया जा सकता था। किन्तु उसने अनुमति दी। मुहम्मद अली ने कहा : 'इस पदयात्रा का प्रभाव भारत पर ही नहीं, सम्पूर्ण संसार पर पड़ेगा।

हमें दूरदर्शिता से काम करना होगा। साधु-सन्तों का विचार व्यापक था उन्होंने व्यापक विश्व के दर्शन किये थे। किन्तु हमारी बुद्धि और व्यापक होनी चाहिए। हम लोगों का काम हृदय के साथ हृदय को मिलाना होगा सबमें निर्भयता लानी होगी देह की आसक्ति का भय और लोभ छोड़ना होगा। भय—अपनी देह का भय और सम्पत्ति तथा बच्चों पर संकट का भय। कई बार यह दूसरा भय ही विशेष प्रबल मालूम पड़ता है। स्वाधीनता-युद्ध के समय सविनय अवज्ञा-आन्दोलन में कई लोग जेल जाने से, मुकदमे झेलना और सम्पत्ति की जब्ती से अधिक डरते थे। इस भय से मुक्त करना साधु-सन्तों का काम है। वे समझाते थे : भाई, सम्पत्ति चंचल है इसलिए विराग चाहिए; फिर, यह देह तो नश्वर है। मनुष्य में ये दो प्रकार की दुर्बलताएँ हैं—इसका ध्यान रख कर सन्त लोग शिक्षा देते थे। हमें सभी समस्याओं के हृदय आकर्षित होगा। उस दिन मैंने [illegible] एक पत्र में एक मुसलमान साहित्यिकार ने वैष्णव साहित्य के सम्बन्ध में एक लेख लिखा था। उस लेख में वैष्णव धर्म के साथ गांधी-मतवाद की तुलना की गयी थी और इस क्रम में उन्होंने

मैत्य-धर्म में अन्तर्निहित सत्य तथा हर काल में हर किसीको प्रेरणा देने की उसकी क्षमता का उल्लेख किया था। साहित्यकार की भूमिका उच्चतर सत्य की भूमिका है। इसलिए मैंने 'कुरान-सार' नामक एक पुस्तक की रचना की है। इस व्यापक भूमिका को ध्यान में रखकर आप लोग यहाँ निर्भयता-प्रचार, साहित्य-प्रचार और समाज-सेवा का काम करेंगे।

"चरखा चलाने आदि ग्रामोद्योगों में व्यक्तिगत रूप से हिस्सा रखते उनके व्यापक प्रचलन का काम ग्रामवासियों से करायेंगे। सरकार भी धीरे-धीरे यही काम करेगी। आप लोग इसी काम में उलझे नहीं रह जायेंगे।

"ग्राम में सामाजिक एकता और प्रेम-विस्तार का काम करना होगा। इसलिए सुविधानुसार एक साथ प्रेमपूर्वक सहभोज की व्यवस्था कर सकते हैं। किन्तु इस सम्बन्ध में यदि किसीको कोई दुविधा हो तो उसे प्रकट नहीं होना चाहिए। सामूहिक मौन प्रार्थना आपकी प्रेम-सम्पर्क बढ़ाने का एक शक्तिशाली साधन है। विश्व-राज्य की वैचारिक भूमिका—भगवान् एक मनुष्य एक—इसी उच्चतम भावना से अनुप्रेरित होकर आप यह सब करेंगे। इसमें सेवा का काम अपने आप आ जायगा।"

सेवा-कार्य-सम्बन्धी एक प्रश्न के उत्तर में विनोबाजी ने कहा "ग्राम-दान को सबसे ऊपर, उच्चतम स्तर पर रखकर भूदान सर्वोदय पात्र आदि कई प्रकार से गरीबों की सेवा का काम करना होगा। भारत में मैंने सर्वोदय-पात्र के चावल का सर्वोदय-सेवक के निर्वाहार्थ उपयोग करने की राय दी है किन्तु इस देश में सर्वोदय-पात्र के चावल धन उसका उपयोग गरीबों की सेवा में करने की बात कहता हूँ। यदि कोई सेवाधीन संस्था हो तो उसके लिए सर्वोदय-पात्र के पैसाका उपयोग हो सकता है। कार्यकर्ताओं का खर्च उनके मित्र पूरा करेंगे।

"जिस साहित्य का प्रचार किया जाय उसके द्वारा हिन्दुओं और

शिक्षिता थीं—नाम था बेगम सेकिना बानू। उन्होंने कहा कि उनकी इच्छा आरम्भ से ही विनोबाजी के साथ पदयात्रा में रहने की थी किन्तु बच्चों की बीमारी पारिवारिक झंझट आदि के कारण आने में देर हो गयी फिर भी वे शेष दो दिन तो बाबा के साथ रहने को मिलेंगे। मैंने कहा कि यदि बाबा से कुछ बातचीत करने की इच्छा हो तो बात कर सकती हैं। उन्होंने कहा कि बातचीत में कुछ नहीं रखा है; उनकी बात सुनने और कुछ समय साथ रहने का अवसर मिले यही बहुत है। वे रात में रहीं और सुहासिनीजी, आशादेवी, करुणा, कमला इन सबके साथ घुल-मिल गयीं।

अपराह्न साढ़े चार बजे प्रार्थना-सभा हुई। पूरा मैदान भर गया और कुछ लोग सड़क पर खड़े हो गये। लगभग दस-ग्यारह हजार लोग थे। किन्तु सभा समाप्त होने के बाद भी जो लोग आते रहे उससे करीब तीन-चार हजार लोग और हो गये। प्रार्थना-सभा में विनोबाजी ने कहा

ज्ञान बढ़ा है और प्रेम घटा है सम्पत्ति

आज मेरी पाकिस्तान-यात्रा का चौदहवाँ दिन है। मैं दो दिन और आप लोगों के बीच हूँ। आज सबों में जितना ज्ञान है पहले बड़ों में भी उतना ज्ञान नहीं था। संसार में कितने देश हैं—इसका पहले के लोगों को बहुत कम ज्ञान था। आज तो स्कूल के एक छोटे बच्चे को भी इस सम्बन्ध में काफी अच्छा ज्ञान है। दैनिक समाचारपत्रों के द्वारा हम संसार के किसी भी देश में घटी घटना की जानकारी अगले दिन ही पा जाते हैं। आज ढाका में कराची पहुँचने में पाँच घंटे लगते हैं पहले एक मास लगता था। कई तरह के ज्ञान बढ़े हैं—रेडियो रोज संसारभर के समाचार सुनाता है।

इधर जितना ज्ञान बढ़ा है उधर उतनी ही उपयोग की वस्तुएँ बनी हैं। आज तो एक जगह बैठकर संसार के सभी देशों के सामान का स्वाद लिया जा सकता है। अमेरिका से उधर पाकिस्तान का आम

भ्याया जाता है। इस देश में भी स्त्रियों में मरकर विदेशों के तरह-तरह के साथ पदार्थ आते हैं दूध आता है। पहले यदि किसीके पेट में फोड़ा होता था तो वह दर्द से चिल्लाता रहता था। यदि किसीके पास दवा होती थी तो देता था। आज तो विज्ञान की सहायता से दवा देकर, उसे अचेत करके आपरेशन किया जाता है—फोड़ा काटकर पेट को सिलाई कर दी जाती है। वेदना तो दूर की बात, उसे कुछ मालूम भी नहीं होता। जब वह फिर चेतना में आता है तब उसे मालूम होता है कि उसके शरीर का आपरेशन हुआ है। इस तरह नाना प्रकार की सुख-सुविधाओं का मनुष्य उपभोग कर रहा है। फिर भी वह सुखी नहीं है। इतना अधिक ज्ञान बढ़ा है इतने अधिक उपभोग के साधन उपलब्ध हैं, किन्तु भोग की लालसा उससे भी अधिक बढ़ी है इससे असन्तोष बढ़ रहा है। ज्ञान बढ़ा है किन्तु प्रेम नहीं बढ़ा है। मनुष्य की बुद्धि खूब बढ़ी है किन्तु हृदय का प्रसार नहीं हुआ है, बल्कि वह छोटा ही हुआ है। ऐसी अवस्था में मनुष्य को दुःख भोगना ही होगा।

आजकल हमारी जरूरत की अनेक चीजें— रिस्टवाच, पाउडरमेन आदि—संसार के विभिन्न देशों से आ रही हैं। इस तरह हमारी वासना सारे संसार में विस्तृत हो गयी है। इसके कारण परस्पर सम्पर्क, आवागमन आदि भी तेजी से बढ़े हैं। वासना के मामले में दुनिया एक हो गयी है। किन्तु यह दुःख की बात है कि हमारा प्रेम घर में ही बन्दी है। प्रेम एक कोने घर में बन्दी हो गया है—कैदी बन गया है। वासना के मामले में सम्पूर्ण संसार परस्पर सम्बद्ध है। हर कोई अपनी वासना मिटाने के लिए व्यग्र है। इसके लिए इधर उधर दौड़-भाग कर रहा है, स्वयं सुख पाने के लिए व्यग्र है किसीको प्यार कोई नहीं देखता।

यदि किसी देश में पटसन या उसके स्थान पर अन्य किसी वस्तु का उत्पादन होता हो तो इस देश में पटसन का भाव घट जायगा। इसी तरह भारत में कपास का भाव घट सकता है। तब हम संकट में पड़ जायें। किन्तु यदि समाज में प्रेम का विस्तार होता तो संसारभर

के लोग बैठकर विचार करते कि पाकिस्तान की पटसन और भारत की कपास के लिए क्या व्यवस्था की जाय। ऐसा होने पर यदि सारी दुनिया में वास्ता हो जाती तो भी कोई असुविधा न होती—सब लोग सुखी रहते।

शक्ति बढ़ी है, भक्ति नहीं

"इसीलिए ज्ञानी लोग कहते हैं—वर्तमान परिस्थिति में विश्व-राज्य शीघ्रातिशीघ्र प्रतिष्ठित होना चाहिए। आज के वैज्ञानिक युग में हमारी शक्ति जितनी बढ़ रही है अपने हृदय को भी हमें उतना ही बड़ा करना होगा। आज मनुष्य भी पृथ्वी से पाँच सौ मील ऊपर उठकर हम सबकी परिक्रमा कर रहा है। लेकिन जितनी शक्ति बढ़ी है उतनी भक्ति नहीं बढ़ी है—शक्ति और भक्ति का द्वन्द्व चल रहा है। पर शक्ति तो घटायी जा नहीं सकती इसलिए भक्ति ही बढ़ानी होगी। जिस तरह बुद्धि बढ़ी है उसी तरह हृदय को भी बड़ा करना होगा। जिस तरह भावना बढ़ी है उसी तरह प्रेम भी बढ़ना चाहिए। इंग्लैण्ड यूरोप के Common market में शामिल होना चाहता है। इससे भारत और पाकिस्तान का नुकसान होगा—इस सम्बन्ध में विचार-विमर्श चल रहा है। किन्तु होना तो चाहिए सारे संसार का Common market—संसार किस दिशा में जा रहा है यह हमें समझना होगा।

"चीन के एक लेखक ने एक पुस्तक लिखी है: 'सुखी गाँव की कहानी'। वहाँ खाद्य और आवश्यक सभी चीजें उत्पन्न थीं, इसलिए वहाँ के लोग कहीं बाहर नहीं जाते थे। यहाँ तक कि पास के गाँवों में भी नहीं जाते थे। रात को कुत्तों की आवाज सुनकर वे अनुमान लगाते थे कि थोड़ी दूर पर एक गाँव है। मैं जब स्वाधीनता-संग्राम की अवधि में जेल में था तब कैदी लोग दिन गिनते थे कि अब छूटने में कितने दिन बाकी हैं। किन्तु जेल में असुविधाएँ भी थीं, फिर इसकी कोई चिन्ता न थी, क्योंकि उनके लिए वह जेल ही दुनिया थी।

'छोटा बनकर रहने और दूसरों को छोटा बनाकर रखने का युग बीत चुका है। अब हर किसीको बड़ा बनना पड़ेगा, अन्यथा सब नष्ट हो जायगा। सत्रह वर्ष पहले जापान के एक शहर पर परमाणु बम गिरा था। उसके फलस्वरूप लाखों-लाख लोग मरे—लाखों-लाख लोग आहत हुए। आजकल जो परमाणु बम तैयार हो रहे हैं उनकी शक्ति उस बम के मुकाबले हजारगुना अधिक है। मनुष्य हिंसा-प्रतिहिंसा में पड़कर यदि महास्त्र का प्रयोग करे तो उसका सब कुछ विनष्ट हो जायगा। मुझे इसमें कोई आपत्ति नहीं है—बशर्ते कि कोई घायल होकर जिन्दा न रहे। स्त्रियों की गर्भस्थ सन्तान नष्ट या विकलांग होगी और प्रजनन-क्षमता विनष्ट हो जायगी। मनुष्यों के साथ-साथ पशु भी विनष्ट या विकलांग हो जायगें। मनुष्य ने इस भयानक शक्ति की सृष्टि की है—उसे ही इसे रोकना भी होगा। मनुष्य ने भय-विद्वेष में पड़कर इस शक्ति को जन्म दिया है इसलिए प्रेम और निर्भयता के सहारे उसे इसे रोकना होगा।

ग्राम-स्वराज्य से विश्व-राज्य

'संसार में यदि केवल कुछ लोगों के हाथ में समस्त शक्ति रहेगी तो संसार की भयंकर दुरवस्था हो जायगी। इसका एकमात्र समाधान है समस्त संसार के गाँव गाँव में ग्राम स्वराज्य की स्थापना और उसके द्वारा विश्व राज्य की स्थापना। तभी संसार बच सकेगा। हम सर्व [illegible] क्या केवल सज्जन और सज्जनों की स्थापना के लिए प्रार्थना करेंगे? हम गाँव गाँव में प्रेम विस्तार का काम करना होगा—गाँव [illegible] समग्र गाँव को एक परिवार बना देना होगा। [illegible] बीच परस्पर भय और विरोध है उसी तरह गाँवों [illegible] है। [illegible] भय और विरोध दूर करके एकत्रित [illegible] सभी [illegible] सभी सम्पत्ति मिलकर। स्वामित्व में धीरे [illegible] प्रभाव [illegible] विश्व में भी होगा। छोटे बड़ों

में जो चीज लिखी है, वही बड़े अक्षरों में भी लिखी है। जो गाँव में है, वही संसार में भी है। गाँव अर्थात् छोटा संसार और संसार अर्थात् बड़ा गाँव। हम यदि प्रेम के द्वारा गाँव के सब भेद-विवाद मिटाकर शान्ति ला सकें, तो उसी उपाय से संसार के सब भेद-विवाद मिटाकर शान्ति लायी जा सकेगी। इसीलिए मैं कहता हूँ कि गरीबों को भूमिदान करें—पूरा गाँव एक परिवार बने, सूद लेना बन्द हो। ग्रामदान की योजना गाँव में ही बनेगी, गाँव की समस्त भूमि एक हो जायगी। ग्रामोद्योगों का प्रचलन होगा, कोई सूद नहीं लेगा, तब ग्राम-स्वराज्य स्थापित होगा।

इस देश की बेसिक डेमोक्रेसी की यूनियन कौंसिलें प्रेम के आधार पर ग्राम निर्माण का काम हाथ में ले सकती हैं। गाँव में यदि एक व्यक्ति को सुख हो, तो सब सुखी होंगे, एक व्यक्ति को दुःख होगा, तो सब दुःखी होंगे। सुख भी बाँटकर भोगेंगे और दुःख भी। सुख बाँटने से बढ़ता है और दुःख बाँटने से घटता है।"

सभा के अन्त में मौन प्रार्थना हुई। आज कोई दान नहीं मिला। न मिलने का कोई कारण समझ में नहीं आया। भूमि-दान करने योग्य जो लोग थे, वे बड़े आदमी थे, पास नहीं आये।

बाबाजी और विश्वनाथ कुछ काम करने के ख्याल से सन्ध्या समय अग्रगामी दल के साथ अगले पड़ाव दिनाजपुर चले गये। [illegible] शम्भु भी सवेरे चले गये। वे पश्चिम बंगाल के पश्चिम दिनाजपुर में विनोबाजी की पदयात्रा के व्यवस्थापकों से मिलने गये।

सन्ध्याकालीन प्रार्थना के बाद बाबा सो गये। दिनाजपुर के एस० पी० और अन्य कुछ अफसर आये। वे विनोबाजी के सम्बन्ध में जानना चाहते थे। मैंने कुछ देर उनके साथ इस सम्बन्ध में बातचीत की। वे सब उठकर खुश-खुश चले गये। एस० पी० साहब ने बताया कि पूर्व पाकिस्तान की सरकार विनोबाजी को उपहार-स्वरूप कुछ पुस्तकें देना चाहती है—वे पुस्तकें कब दी जायें? मैंने कहा : "बाबा के दिनाजपुर पहुँचने के बाद, आपको जब कभी सुविधा हो पुस्तकें दे सकते हैं।"

पन्द्रहवाँ दिन **१५**

जन-शक्ति और राज्य-शक्ति; बंगला भाषा की शक्ति का विकास

यात्रारम्भ से कुछ पहले बाबा थोड़ा टहलने के लिए घर से बाहर आये। यात्रा के लिए तैयार होकर जब हम सब बाहर आये, तो देखा कि बाबा मैदान में नहीं हैं। ज्ञात हुआ कि महादेवी के साथ सड़क पर गये हैं—कल जिस ओर से हम लोग आये थे उसी ओर। कुछ-विलम्ब आगे बढ़कर उन्हें ले आये। चलते-चलते प्रार्थना हुई; फिर उन्होंने मल्लि की खोज की—उसने बाबा के साथ बातचीत करनी चाही थी। उसने उनके साथ पूर्णतः एकान्त में व्यक्तिगत रूप से बात करनी चाही, इसलिए बाबा उसके साथ काफी आगे बढ़ गये। फलतः हम सब स्वयंसेवी विभिन्न टुकड़ियों में बिखर गये। मैं कालिन्दी बहन के साथ बातचीत करता हुआ पीछे-पीछे चला—उन्होंने नोआखाली में बापू की पदयात्रा की कहानी सुनायी। इधर काफी आगे बढ़ जाने के बाद बाबा एक स्थान पर रुक गये। फिर हम सब साथ-साथ चले। बाबा सब मित्रों के साथ परस्पर हँसी से बातें करते रहे। जलपान करने के लिए जब वे एक स्थान पर रुके तब बोले "आज तो काफी चलना पड़ रहा है!" मैंने हँसकर कहा "बाबा तो इतनी तेजी से चल रहे हैं, मानो हम लोगों को जल्दी-से-जल्दी छोड़ आना चाहते हों।" सुनकर वे थोड़ा हँसे। नारी शिक्षा मन्दिर की शिक्षिका बहन भी आज पदयात्रा में चल रही थीं। उन्हें इतना पैदल चलने का अभ्यास नहीं था जब कि बाबा आज ही इतना तेज चल रहे थे—वे लगभग हाँफ गयीं, पर उनका मन आनन्द से ओतप्रोत था। शहर के निकट आने के साथ-साथ भीड़ बढ़ने

पन्द्रहवाँ दिन मिदनापुर—मुहम्मदपुर से विलासपुर—९ मील।

थी। एक जगह पर स्वागत के लिए तोरण तैयार किया जा रहा था—उन लोगों के हिसाब से बाबा के पहुँचने में अभी दस-बारह मिनट की देर थी अतः उनका दस मिनट का काम बाकी था—तोरण पूरी तरह तैयार न हो सका था। निकट ही उन लोगों की एक गोशाला थी। उन्होंने बाबा से उसे देखने का अनुरोध किया। बाबा उधर बढ़ गये। गोशाला के लोग भी अभी सोकर उठ ही रहे थे और तैयार नहीं हुआ था। गोशाला के एक खुले स्थान पर खड़े होकर बाबा ने प्रातःकालीन दुग्ध-पान किया। जो पदयात्री पीछे रह गये थे, वे सब आकर रास्ते पर खड़े हो गये। बाबा ने एक बार कल्पना की खोज की। मैंने उत्तर दिया कि वे लोग बहुत आगे बढ़ गये थे। दुग्ध-पान समाप्त करके चलने के साथ साथ लोगों की भीड़ खूब बढ़ने लगी। मार्ग में माल्यार्पण, तिलक आदि के रूप में अभ्यर्थना होती रही। इस तरह चलते-चलते साढ़े सात के थोड़ा पहले हम दिनाजपुर के पड़ाव सर्किट हाउस में पहुँचे। वहाँ दिनाजपुर के डी सी एस पी० और अन्य अफसरों ने बाबा का स्वागत किया। सर्किट हाउस के सामने ही बड़ा मैदान था। वहाँ बहुत सारे लोग जमा थे। बाबा ने उन्हें सम्बोधित कर कहा :

पहले जन-शक्ति, फिर राज-शक्ति—दोनों के संयोग से ही विकास

मेरी पाकिस्तान यात्रा अब केवल दो दिन और है। आज बड़े शहर में आया हूँ यहाँ सभा होगी। कल एक छोटे गाँव में रहूँगा और फिर परसों सबेरे पाकिस्तान छोड़कर चला जाऊँगा। यदि भगवान् की इच्छा हुई तो मैं फिर यहाँ आ सकता हूँ। आप लोगों के दर्शन पाना हमारे लिए सौभाग्य की बात है। मेरी पदयात्रा का उद्देश्य प्रेम का विस्तार करना है—केवल भारत ही में नहीं बल्कि संसार के प्रति मेरा मन में प्रेम है। जिसके पास प्रेम है, उसे सारे में प्रेम ही मिलेगा। यह बात मैं अपने अनुभव से कह रहा हूँ। यहाँ आने से पहले ही मुझे विश्वास था कि आप लोगों से मुझे प्रेम मिलेगा। परन्तु

इस प्रेम का ज्ञान बौद्धिक था। इन चन्द दिनों में आपके प्रेम की प्रत्यक्ष अनुभूति हुई है। मेरे सामने गुड़ है, वह खाने में मीठा लगेगा, इसका ज्ञान भी मुझे है किन्तु गुड़ जब मुँह में लिया तब उसके स्वाद की प्रत्यक्ष अनुभूति हुई। यहाँ आने से पहले आपके प्रेम का मुझे ज्ञान था—इन कुछ दिनों में उस प्रेम से साक्षात्कार हुआ। आप लोगों के प्रेम के बदले में देने के लिए मेरे पास क्या है—देने लायक कुछ भी नहीं है मेरे पास! मैं चाहता हूँ कि आप लोग गरीब-दुखियों का दुःख दूर करके, भूमिदान करके अपने प्रेम को प्रकाशित करें। लोगों का दुःख दूर करने की जिम्मेदारी सरकार की है, यह बात सही है किन्तु पहली आवश्यकता जनसाधारण के उद्यम और शक्ति की है। मेरा पड़ोसी यदि बीमार पड़े तो मैं स्वास्थ्य-मन्त्री को तार देकर नहीं बैठ जाऊँगा यथासम्भव उसके इलाज का इन्तजाम करूँगा। जरा सोचिये कि आग लगने पर हम म्युनिसिपैलिटी की सहायता के लिए इन्तजार करेंगे या खुद बाल्टी में पानी भर-भरकर उसे बुझाने की कोशिश करेंगे! आग जितनी तेजी से अपना काम करेगी, उतनी ही तेजी से हम उसे बुझाने की कोशिश करेंगे। जनसाधारण के उद्यम और शक्ति के साथ सरकारी सहायता और शक्ति का योग होने से ही काम ठीक ढंग से होगा। एक हाथ से ताली नहीं बजती इसके लिए दोनों हाथों की जरूरत पड़ती है। जनता का उद्यम और सरकार की सहायता इन दो हाथों से ही ताली ठीक तरह बजेगी। मैं तो कहूँगा कि जनता का उद्यम ऊपर का हाथ है 'अपर' है और सरकारी सहायता नीचे का हाथ है 'जेर' है।*

धन दान से ही बढ़ेगा सूद से नहीं

पाकिस्तान में क्या योजना बनी है मुझे नहीं मालूम। भारत की

* 'जबर' और 'जेर' अरबी तथा उर्दू लिपियों के विशेष चिह्न हैं जो क्रमशः अक्षरों के ऊपर और नीचे लगाये जाते हैं।

पंचवर्षीय योजना में ५८ अरब रुपये खर्च होंगे। हिसाब करने से यह रकम प्रति पीछे एक आना प्रतिदिन ठहरती है। इसीलिए मैं इसे एक आने की योजना कहता हूँ। अगर पाकिस्तान में भी ऐसी कोई योजना हो। यहाँ यदि दिनभर की मजदूरी दो रुपये हो तो एक आने की आमदनी चार आना हुई। यानी एक आने की आमदनी पन्द्रह मिनट में हुई। इस तरह सरकार प्रतिदिन जो एक आना खर्च करती है वह यहाँ के मजदूर का पन्द्रह मिनट का धन्धा है। अब देखिये कि सरकार की शक्ति के मुकाबले जनसाधारण की शक्ति कितनी अधिक है। आप लोग सरकार का मुँह न देखकर, मिल-जुलकर जो काम करेंगे वही असली काम होगा। सरकार सहायता देकर उस काम को और बढ़ा सकती है। आप लोग अपने प्रेम के परिचयस्वरूप गरीबों को भूमिदान दें। जमीन के अलावा भी कुछ चीजों का आप दान कर सकते हैं— जिन लोगों के पास बुद्धि है विद्या है वे बुद्धि और विद्या का दान कर सकते हैं। आप लोग यदि रोज रात को एक घंटा अनपढ़ लोगों को लिखना-पढ़ना सिखायें, तो एक बहुत बड़ा काम हो। एक सज्जन यदि सालभर में दस अनपढ़ लोगों को लिखना पढ़ना सिखा दें तो एक साल की ही अवधि में पाकिस्तान में कोई अनपढ़ न रहे। यह काम यदि सरकार करना चाहे तो उसे बहुत धन खर्च करना होगा बहुत समय भी लगेगा जब कि आप बिना किसी खर्च के थोड़े समय में ही इस काम को पूरा कर सकते हैं।

"मैं खाली हाथ आया हूँ खाली हाथ ही जाऊँगा। मेरी अपनी कोई सम्पत्ति नहीं है कोई घर नहीं है बैंक में मेरा धन जमा नहीं है जमीन नहीं है—मैंने सब कुछ दे दिया है। मेरे बड़े-बड़े बन्धुओं के पास बड़े-बड़े मकान हैं। किन्तु मैं तो साल के ३६५ दिन ३६५ मकानों में रहता हूँ। सभी मकान साफ-सुथरे सजे-सजाये रहते हैं खाने-पीने की भी मुझे चिन्ता नहीं करनी पड़ती। लोग ही मेरे खाने-पीने और सुख-सुविधा की चिन्ता करते हैं। मैं अपने अनुभव से ही बोल रहा हूँ कि जो लोग

प्रेम से दान करते हैं उन्हें कई गुना प्राप्त होंगे—यदि वो हाथों से दान करें तो सहस्र हाथों से पायेंगे। कुरान में कहा गया है—तुम्हारी सम्पत्ति दान से बढ़ेगी सूद से नहीं। इसीलिए आप लोगों से जितना सम्भव हो भूदान सम्पत्तिदान श्रमदान बुद्धिदान प्रेम-सहित गरीबों के लिए दें।"

बाबा सर्किट हाउस में पड़ाव पड़ा था—बाबा ऊपर की मंजिल में थे। पास में ही डिप्टी कमिश्नर साहब का बंगला था। सुरक्षा-व्यवस्था पहले से थोड़ी कड़ी थी इसलिए सबके लिए ऊपर जा सकना सम्भव नहीं था। बाद में सरकारी कर्मचारियों से बातचीत करके मैंने जन-साधारण को सर्किट हाउस के मैदान में वृक्षों की छाया में बैठने या खड़े होने को कहा। बाबा बीच बीच में आकर लोगों को दर्शन दे जायें और उनके दर्शन कर जायें—ऐसी व्यवस्था हुई। हर आध-पौन घंटे पर बाबा बाहर आते रहे और जनता दर्शन करके जाती रही।

सुबह-सुबह ही भीलवा के बन्धु श्री शिवगुरु भावन उपस्थित हुए। वे पश्चिम बंगाल के दिनाजपुर में बाबा के पहले पड़ाव से भी चारुचन्द्र भण्डारी का सन्देश लेकर आये थे। दस बजे बाबा स्थानीय कार्यकर्ताओं के साथ बैठे। उन्होंने कहा: 'विश्वरंजन कहते हैं कि अब तक मैंने कार्यकर्ताओं से खूब ऊँचे ऊँचे विषयों पर, ऊँचे स्तर से, बातचीत की है। अब कुछ छोटे छोटे विषयों पर बात करना अच्छा होगा।

कार्यकर्ता होंगे एक परिवार

'सबसे छोटी बात—सभी कर्मचारियों के बीच एक परिवार के सदस्यों की भाँति प्रेम का सम्पर्क और आदान-प्रदान रहेगा। हम ग्राम को एक परिवार बनने के लिए कहते हैं—भूदान ग्रामोद्योग, छोटे बच्चों के लिए बुनियादी शिक्षा छोटे बड़े के भेद की समाप्ति संयम आदि के लिए हम ग्रामवासियों से कहते हैं। ये सब बातें कार्यकर्ताओं में होनी चाहिए। विभिन्न स्थानों के कार्यकर्ता अलग अलग काम करने के बावजूद अपने को एक परिवार के सदस्य मानेंगे। हमारा आचरण, आपस में हमारा व्यवहार अब सब ग्रामवासियों को प्रभावित करेगा।

"आजकल मैं नये सिरे से 'न्यू टेस्टामेण्ट' पढ़ रहा हूँ। उसमें लिखा गया है कि महात्मा ईसा की मृत्यु के बाद उनके अनुगामी किस तरह जीवन-यापन करते थे : 'They sold their possessions. preached amongst men begging from house to house became one heart and one soul nobody thought for himself but for all. महात्मा ईसा के अनुगामी व्यक्तिगत सम्पत्ति का विसर्जन करके एक परिवार की भावना लेकर चले थे। कम्युनिस्ट लोग भी यही बात कहते हैं—वे State के सम्बन्ध में कहते हैं कि जबर्दस्ती ही यह काम करना होगा। पर State level पर यह काम करने से unreal (अवास्तविक) होता है। व्यक्तिगत भाव से करने से यह real (वास्तविक) होता है। छोटी मण्डली में प्रयोग करने पर व्यक्तिगत सम्पर्क होगा। व्यक्तिगत सम्पर्क रहने से ही परस्पर सुधार हो सकता है। State level का सुधार अवास्तविक होता है और इसके लिए जबरदस्ती करनी होती है।

"किसी प्रतिष्ठान या मण्डली में विभिन्न कार्यकर्ता विभिन्न वेतन पाते हैं—इससे उनका जीवन-यापन भी विभिन्न स्तरों का होता है। अपने आश्रम में एक बार मैंने सभी कार्यकर्ताओं—मजदूरों, बढ़इयों, बुनकरों, कुम्हारों, रसोइयों आदि—का वेतन बराबर कर दिया था। यह व्यवस्था सबने सन्तोष के साथ मान ली थी। इससे परस्पर प्रेम और एक परिवार की भावना बढ़ी। यदि कार्यकर्ता इसी तरह चलें तो अमृत प्राप्त होता है। लेकिन बराबर रहना कठिन लग सकता है—हमारे अभ्यास न होने के कारण यह कठिन लगता है—किन्तु इससे अमृत आस्वादन का आनन्द भी मिलता है।

"कार्यकर्ता यदि गाँवों में लोकतन्त्र का प्रयत्न करें तो उनको वेतन या भत्ता किसान के तरीके से ही लेना होगा। उनका व्यय किसान मजदूर संस्था के लिए दिया जा सकता है। कार्यकर्ताओं का जीवन निर्भर होगा अथवा अन्य स्थान से दान या श्रम से [illegible]—

गाँव में उत्तम फसल का मल-संग्रह करके या साक्षात् सम्पत्तिदान से भी उनका जीवन निर्वाह हो सकता है। कार्यकर्ता लोग किसी भी कारण से सामूहिक या व्यक्तिगत रूप से सरकारी या अन्य कोई कर्ज नहीं लेंगे। देश के काम के लिए वे जिस तरह चोरी नहीं करेंगे, उसी तरह कर्ज भी नहीं लेंगे।

कार्यकर्ताओं के साथ बैठक समाप्त होने के बाद डी० सी० साहब ने खबर भिजवायी कि पूर्व पाकिस्तान सरकार की ओर से कुछ उपहार लेकर वे कब आ सकते हैं। मैंने उन्हें उसी समय आ जाने के लिए खबर भिजवायी। इसी बीच वकील-संघ के सदस्य लोग आ गये। मैंने उन्हें ऊपर लाकर बिठाया। डिप्टी कमिश्नर मिस्टर हसन भी इसी समय पुस्तकों के मोटे-मोटे कुछ बण्डल लेकर आ पहुँचे और विनोबाजी को उपहार भेंट किया। कहा कि पदयात्री-दल के सब सदस्यों के लिए ये बण्डल पुस्तकें पूर्व पाकिस्तान-सरकार ने भेजी हैं। बैठने के लिए अनुरोध किये जाने पर मिस्टर हसन कुछ देर बैठे। विनोबाजी ने उनसे कुरान का पाठ सुनाने के लिए एक कारी साहब की व्यवस्था करने को कहा। तीन बजे कारी साहब को भेजने की व्यवस्था करने की बात कहकर डी० सी० साहब चले गये।

कालिन्दी बहन की डायरी में लिखा है : "वकीलों के साथ बातचीत शुरू हुई :

कितने वकील हैं यहाँ ?

पचास-साठ

बाबा — More th n enough

नहीं सर, यहाँ तो बहुत कम है।

" अरे, कम वकीलों से काम चल जाता है। फिर तो लोगों की moral ty बढ़ी है। कुछ लोग बाबा की बात का अर्थ समझ गये। वे थोड़ा हँसे। बाबा ने उन लोगों से कहा : "फिर गाँवों में जाकर हमारा जैसे आप लोगों को समझाया और भूदान ले आये।

"अपराह्न-काल में साहित्यकारों का दल आया। उसमें कुछ अध्यापक भी थे। उनके साथ बड़ी देर तक बातचीत हुई। बाबा ने साहित्यकारों से साथ पहले जैसी बातचीत की थी लगभग वैसी ही बातचीत आज भी हुई। उनके साथ बातचीत समाप्ति पर ही थी कि काजी साहब आ गये। उन्होंने उच्च स्वर में कुरान की आयतों का पाठ किया। पहले उन्होंने अपनी मर्जी के मुताबिक पाठ किया। बाद में बाबा की फरमाइश के मुताबिक उन्होंने पाठ किया। इन लोगों के जाने के बाद बाबा ने थोड़ा आराम किया। इसी समय एक बहन अपने छोटे बच्चे को लेकर भीतर आयीं। वे निस्संकोच सीधे बाबा के पास आकर बैठ गयीं और बोलीं : 'बाबा दुनिया में इतनी अशान्ति है, इतनी हिंसा-प्रतिहिंसा चल रही है; कुछ रास्ता बताइये।' ये बहन एक स्थानीय अफसर की पत्नी थीं। बाबा ने उनसे कहा : 'यह काम तो स्त्रियों को ही करना चाहिए।' बाबा से बातें करने के बाद उन्होंने अपने पुत्र को बाबा के सामने रखकर कहा : 'मैं अपने इस पुत्र को ही आपको समर्पित करती हूँ। मैं चाहती हूँ कि यह आपका यही काम करे।' बच्चे ने माँ को और जकड़कर पकड़ लिया।

वकील बन्धु बातचीत करके जब जा रहे थे, तब मैंने स्थानीय दो प्रमुख वकीलों का नाम लेकर पूछा कि क्या वे उस दल में उपस्थित थे। वे नहीं आये थे यह जानने के बाद मैंने कहा कि उन्हें यह संदेश दे दिया जाय कि यदि वे किसी समय आ जायँ तो अच्छा हो। सन्ध्या समय वे आये। बाबा के पास थोड़ी देर बैठने के बाद पुनः प्रार्थना-सभा में आने का वचन देकर वे चले गये।

सन्ध्या पाँच बजे प्रार्थना-सभा करने का निश्चय किया गया था। दक्षिण टाउन का विशाल मैदान लोगों से खचाखच भर गया था। बहुत सारी स्त्रियाँ भी आयी थीं। मैदान के एक ओर उनके बैठने की व्यवस्था थी। उपस्थित लोगों की संख्या लगभग पन्द्रह हजार थी। विनोबाजी ने अपने भाषण में कहा :

बंगला भाषा की शक्ति का विकास

"मेरी पाकिस्तान-यात्रा का मात्र एक दिन और बच गया है। यदि मैं बंगला में अपनी बात कह सकता तो आपके हृदय में और अधिक प्रवेश कर पाता। पिछले चालीस वर्षों से मैं बंगला का अध्ययन कर रहा हूँ। बंगला-भाषा पर मेरी बड़ी श्रद्धा है। यद्यपि मैं बंगला बोल नहीं पाता तथापि किसीके बोलने पर समझ सकता हूँ। बंगला भाषा एक मधुर भाषा है। इसे मधुर करने का काम, शक्तिशाली बनाने का काम अतीत में अनेक महापुरुष कर गये हैं। इसमें वैदिक, वैष्णव, बौद्ध और इस्लाम धर्मों के अवदान हैं। इसका आधुनिक युग की चिन्तन-धारा से सम्बन्ध है जिसका आरम्भ राममोहन राय से हुआ। जिस तरह एक नदी में कई नदियों के आकर मिलने से वह नदी पुष्ट बनी और वेगवती हो जाती है उसी तरह वैदिक ध्यान-योग, बौद्धों की करुणा, वैष्णवों के प्रेम धर्म और इस्लाम की सत्य-निष्ठा के मिलने से बंगला भाषा समृद्ध हुई है। आठ करोड़ से अधिक लोग यह भाषा बोलते हैं। उधर जापानी और चीनी भाषाएँ, इधर बंगला उर्दू और हिन्दी हैं, मध्य-पूर्व में अरबी भाषा है यूरोप में अंग्रेजी फ्रेंच जर्मन रूसी, स्पेनिश— इनमें से हर भाषा में सम्भवतः ९, ६ करोड़ से अधिक लोग नहीं बोलते। बंगला भाषा में एक और विशेषता है। इस भाषा में लिंग-भेद नहीं है, अतः बंगला भाषा में प्रेम का जो वर्णन है वह विशुद्ध प्रेम है। बंगला का जब अन्य भाषाओं में, जैसे हिन्दी में अनुवाद किया जाता है, तब लिंग भेद के कारण कुछ विकार का आभास मिलने लगता है। बंगला भाषा में जो विमलता या पवित्रता है वह रमणीय है। अतः बंगला भाषा और साहित्य के लिए मैं खूब गौरव अनुभव करता हूँ। भाषा में जितनी अधिक सम्पत्तियाँ आकर मिलती हैं उतनी ही उसकी शक्ति बढ़ती है। इसी भाषा में संगीत भी भरा हुआ है। रवीन्द्रनाथ के संगीत की नवीनता ने बंगला के पुराने संगीत की परम्परा को आघात नहीं पहुँचाया । इन पुरातन के आधार पर नवीन प्रतिष्ठित हुआ है।

जब मैं बंगला गीत सुनता हूँ, तब मेरा हृदय उच्छ्वसित हो उठता है। यह गीत केवल सुनाई ही नहीं पड़ता जगाता है नचाता है, प्रेरणा देता है।

"यह बंगला भाषा बड़ी सम्पत्ति है। इसका खूब विकास होना चाहिए। बंगला भाषा से हिन्दी में जितनी पुस्तकों का अनुवाद हुआ है, उतनी पुस्तकों का अनुवाद और किसी भाषा से नहीं हुआ। मुझे दुःख है कि मैं आपसे बंगला में न बोल सका।

विज्ञान की शक्ति के संचालक, नूतन-पुरातन के योग-साधक : साहित्यकार

'आज कुछ अध्यापक आये थे। उनके एक प्रश्न के उत्तर में मैंने कहा कि भविष्य में साहित्यकारों और शिक्षकों का काम बहुत महत्त्वपूर्ण होगा। विज्ञान की शक्ति उत्पादन और संहार, दोनों ही काम कर सकती है। जब आग का आविष्कार हुआ तब लोगों ने देवता मानकर उसकी पूजा की किन्तु आग तो एक शक्ति है—उससे भोजन भी बनाया जा सकता है और घर को जलाया भी जा सकता है। बेचारी आग को बुद्धि जिस पथ पर चलायेगी, वह उसी पथ पर चलेगी। केवल आग ही नहीं उसके बाद आयी वाष्प-शक्ति विद्युत्-शक्ति और अन्त में परमाणु-शक्ति। इन सब शक्तियों को लेकर जिस तरह खूब काम हो सकता है उसी तरह मनुष्य का सम्पूर्ण विनाश भी हो सकता है। पहले साधारण आपरेशन कठिन था किन्तु आजकल क्लोरोफार्म आदि के आविष्कार से उक्त काम कितनी सरलता से हो रहा है। पेट काटकर, आपरेशन करके सिलाई कर दी जाती है और रोगी को आभास तक नहीं मिलता। मनुष्य की भलाई के लिए ऐसे आविष्कार अब भी हो रहे हैं भविष्य में भी होंगे।

"इस विज्ञान शक्ति का संचालन कौन करेगा? यह काम साहित्यकारों और शिक्षकों का है। उनका काम पुरातन को नूतन के साथ

जोड़ना होगा। नूतन का धर्म है सामने की ओर बढ़ते जाना और पुरातन का धर्म है पीछे की ओर खींचे रखना। इन दोनों का मेल बना हुआ है। नूतन में शक्ति है और पुरातन में रस। इन दोनों को जोड़ने का काम है शिक्षक का, साहित्यकार का। नूतन विज्ञान के पथ पर तेजी से बढ़ना चाहता है, पुरातन उसे रोकना चाहता है। नूतन की वैज्ञानिक अग्रगति के साथ पुरातन के आध्यात्मिक अनुभव को जोड़ने का काम शिक्षक का है। यह एक बहुत बड़ा काम है। ये दोनों शक्तियाँ यदि विच्छिन्न रहें, तो पुरातन जर्जर होकर मर्यादाहीन हो जायगा और नूतन पथभ्रष्ट होकर ध्वंस के पथ पर चला जायगा। पुरातन के अपने शास्त्र के अक्षरों के बीच आबद्ध होकर रहने से काम नहीं चलेगा—नूतन के प्रकाश में शास्त्र के मर्मार्थ को ग्रहण करना होगा—नूतन को आगे बढ़ने देना होगा। मैं रास्ता छोड़कर चलता हूँ—बच्चों के दल साथ साथ दौड़कर चलते हैं। किसी समय उत्साह से भरकर वे मेरे आगे-आगे चलते हैं, तब प्रवीण लोग बाधा देते हैं। उनसे कहते हैं कि भीड़ मत करो, पीछे आओ। किन्तु बच्चे क्या पीछे आना चाहेंगे? बुद्धिमानी का काम होगा उन्हें और आगे जाने के लिए कहना, जो वे उत्साह के साथ करेंगे। इसी तरह नूतन की अग्रगति अवरुद्ध करना ठीक नहीं है और यह सम्भव भी नहीं है। पुरातन का केवल नियन्त्रण रहना चाहिए, अंकुश रहना चाहिए। पतंग उड़ाने की पद्धति देखिये—पतंग को आप जिस किसी ऊँचाई तक उड़ने देते हैं—आपके हाथ का धागा पतंग को नियन्त्रित करता है। यदि सूत टूट जाय, तो पतंग हवा में उड़कर कहाँ चली जायगी, इसका कोई ठिकाना नहीं; फिर नियन्त्रण ऐसा भी नहीं होना चाहिए कि पतंग उड़ ही न सके।

श्रेष्ठ उदाहरण : रवीन्द्रनाथ

इस कारण शिक्षक और साहित्यकार राजनीतिक गुटबन्दियों से अलग रहकर पूर्णदृष्टि से सभी चीज़ों को देखेंगे और बतायेंगे। इसके

सब लोग मेरे ही हिस्से हैं, वही विश्व का निर्माण करेंगे। उनसे विज्ञान पूछेगा कि मुझे किस पथ से होकर जाना चाहिए।

"इस प्रदेश में जैसी मिट्टी है, वैसा ही जल भी है। जहाँ जल अधिक रहता है और मिट्टी कम, वहाँ हृदय संकुचित होता है। जहाँ मिट्टी अधिक होती है और जल कम, वहाँ कठिनता अधिक और मृदुता कम होती है। जिस प्रदेश में मिट्टी और जल दोनों ही ठीक हैं, वहाँ मृदुता और कठिनता दोनों हैं तथा हृदय विशाल है।

"मैंने पूर्व पाकिस्तान क्यों आना चाहा? मैंने कहा है, इसके पीछे प्रेम विस्तार के लिए, किन्तु वस्तुतः अपने हृदय को बड़ा करने के लिए ही मैंने यहाँ आना चाहा। प्रेम सिखाऊँगा कम और सीखूँगा अधिक। पहले दिन ही मैंने यह बात अनुभव की। उस दिन प्रार्थना-सभा के अन्त में एक मुसलमान युवक आया और बोला कि मैं जमीन का दान करूँगा। वह चार एकड़ जमीन का मालिक था, जिसमें से एक एकड़ का उसने दान कर दिया। मेरे कहने पर उसीने उस दान को प्राप्त करनेवाले का नाम भी निश्चित कर दिया। एक साधारण युवक जो पढ़ा-लिखा भी साधारण ही है, कितना बड़ा हृदय रखता है, यह देखकर मेरे मन में प्रेरणा जागी—हृदय बड़ा हुआ। आज एक भाई ने पूछा है कि भूदान की प्रेरणा मुझे कहाँ से मिली? मैंने उनसे कहा कि इस सम्बन्ध में सभा में बोलूँगा।

तेलंगाना की कहानी : भूदान की प्रेरणा

"मैं दक्षिण भारत में तेलंगाना गया था। वहाँ के लोग रात में कम्युनिस्टों द्वारा उत्पीड़ित होते थे। दिन में वहाँ सरकारी सैनिक आते थे। वे वहाँ के लोगों से कहते: 'रात में तुम लोगों ने कम्युनिस्टों को खिलाया है, उनकी सहायता की है।' और उन पर अत्याचार करते। रात में कम्युनिस्टों का उत्पात और दिन में सरकारी पुलिस तथा सैनिकों का आतंक। इस प्रकार दिन-रात आतंकित रहते। वहाँ कैसी जमींदार

थी। नौका पर बैठने के लिए दरी बिछी थी। इस जिले की बोलचाल की भाषा में बारह आदमियोंवाली नौका को 'भर' कहते हैं। घाट के मालिक ने विनोबाजी को ले जाकर आदरसहित नौका पर बिठाया। नौका चलने लगी। नदी पार करने में लगभग पन्द्रह मिनट लगते हैं। उस पार सुन्दर पक्की सड़क है, पर उस समय वर्षा के पानी और बैल गाड़ियों के चलने के कारण उसका बुरा हाल था—उस पर चलना मुश्किल था। इसलिए उसके पास से ही पैदल चलनेवालों के लिए एक मेड़ जैसा पथ तैयार हो गया था। उस पथ से ही होकर हम आराम से चलने लगे।

पहले एक दिन राह चलते-चलते ही विनोबाजी ने पूछा था कि रात समाप्त हो रही है पर अज़ान तो सुनाई पड़ी नहीं और मैंने उत्तर दिया था कि सुनाई पड़ती तो है, पर हम लोग बातचीत करते रहते हैं और आप कुछ ऊँचा सुनते भी हैं इसीलिए शायद आपको नहीं सुनाई पड़ी। आज चलते-चलते प्रायः साढ़े चार बजे अज़ान सुनाई पड़ी। बाबा को बताया गया तो रुककर उन्होंने वह आवाज़ सुनी और फिर ज़ोर-ज़ोर से अज़ान देने लगे।

स्निग्ध प्रभात—चारों ओर हरे भरे खेत—सूर्य का प्रकाश आने में अब भी थोड़ी देर थी। पूर्व दिशा में थोड़ा-थोड़ा उजाला फैलने लगा था। पक्षियों के कलरव से पथ के किनारे-किनारे खड़े वृक्षों की हरी-भरी शाखाएँ गुंजायमान हो उठीं। विरल बाबा के उस जन-विरल पथ पर आकाश वायु और पक्षियों का कलरव ही पदयात्रियों का स्वागत करने लगा। हो सकता है रोज ही ऐसा होता हो परन्तु प्राकृतिक वातावरण की ओर ध्यान आज ही अधिक आकृष्ट हो रहा था—पदयात्री-दल के अनेक लोगों का ध्यान। अगले पड़ाव का ग्राम विरल था। पथ भी जन विरल था। दूर-दूर पर एक-दो ग्राम थे। पास के गाँवों से आकर लोग बीच-बीच में मार्ग में खड़े हो जाते थे। एक छोटी लड़की ने एक सुन्दर गुलाब-पुष्पों का गुच्छा बाबा को भेंट किया।

चलते-चलते मार्ग के निकटवर्ती एक गाँव के पास पहुँचते ही बाबा रुक गये। रुक गये थे। उन्होंने प्रातःकालीन दुग्ध-पान किया। कल्पना वात्सल्य के रूप में आगे-आगे थी ही वह उस गाँव के अन्दर घुस गयी। सहसा के नारी-शिक्षा-मन्दिर की शिक्षिका बहन भी उनके पीछे-पीछे शामिल हुईं। कल्पना ने लौटकर बताया कि उसने गाँव के एक घर में घुसकर वहाँ की स्त्रियों के साथ थोड़ी बातचीत की। स्त्रियों ने रास्ते के किनारे छोटे-छोटे बच्चों को खड़ा कर दिया था ताकि साधु बाबा के आते ही वे दौड़कर खबर दें। रास्ते के किनारे थोड़ी दूर पर खड़ी होकर उन्होंने बाबा को देखा, फिर वे लौट गयीं।

फिर चलना आरम्भ हुआ। अब पड़ाव अधिक दूर नहीं था। बिरल का बाजार पार करते ही ई० पी० आर० का सीमावर्ती केन्द्र है। उस केन्द्र के सामने से गुजरते समय वहाँ के अफसरों ने बाबा का स्वागत किया। साढ़े सात बजे बिरल हाईस्कूल स्थित पड़ाव पर पहुँचा गया। स्कूल बड़ी खूबसूरती से सजाया गया था। स्कूल के प्रधान शिक्षक एक श्वेत मूँछ-दाढ़ीवाले सौम्यदर्शन व्यक्ति थे—विनय और नम्रता की मूर्ति। उनकी बातचीत और सौम्यदर्शन व्यक्तित्व ने सबको आकर्षित किया। वे बाबा के साथ उस समय उपस्थित थे। उनका नाम था मौलाना कमीरुद्दीन अहमद। इसके अलावा विशेष उल्लेखनीय है, दिनाजपुर शहर के एम० ए० की काजी अजीजुल इस्लाम साहब की बात। उन्हें हम आशीर्वाद से ही देख रहे थे। वे विनोबाजी और पदयात्री-दल के सदस्यों की हर प्रकार की सुख-सुविधा के लिए सदा तत्पर थे। वे हम लोगों के साथ इस तरह थे, जैसे पदयात्री दल के ही एक सदस्य हों।

हाईस्कूल के बड़े मैदान में ही एक हिस्से में मंच तैयार किया गया था। वहीं सबेरे ही लाख भर को लोग जमा हो गये थे। बाबा ने वहाँ पहुँचते ही जनता को सम्बोधित कर कहा :

अन्तिम दिन : परीक्षा का दिन

आज मेरी पाकिस्तान-यात्रा का अन्तिम दिन है। अन्तिम दिन सदा स्मरण रहता है। वह दिन मधुरतापूर्वक कटता है, क्योंकि अन्त में जो भाव रहता है, वही दृढ़ होकर बैठ जाता है। यह बात जीवन के भी सम्बन्ध में लागू होती है। जीवन का अन्तिम दिन यदि आनन्द से कटे, ईश्वर के स्मरण में कटे, जिनकी सेवा मिली है, उनका सम्पर्क यदि मधुर रहे, सबको प्रेम देकर और सबका प्रेम लेकर यदि वह दिन कटे, तो जीवन सार्थक हो जाय। इसीके लिए साधक जीवनभर तपस्या करके जनता की सेवा करते हैं, भगवान् का स्मरण करने के लिए, दुखियों का दुःख दूर करने के लिए, अपने को भूलकर कष्ट स्वीकार करते हैं, ताकि उनका अन्तिम दिन मंगलमय हो, स्नेहपूर्वक कटे। अन्तिम दिन हम लोगों की परीक्षा का दिन होता है। परीक्षा के दिन छात्रगण यदि अच्छी तरह उत्तर देते हैं, तो पास हो जाते हैं। इसी प्रकार, जीवन के अन्तिम दिन परीक्षा के दिन यदि हम अच्छा जवाब दे सकें, तो जीवन की परीक्षा में पास हो जाते हैं। किन्तु छात्र यदि पूरा साल लिखे-पढ़े नहीं, आलस्य में बिताये, तो कैसे पास होगा? मेरे पास अनेक छात्र आकर आशीर्वाद चाहते हैं ताकि वे पास हो सकें। हम भी जीवन में पुण्य कर्म सत्कर्म न करके, पाप करके स्वर्ग में प्रविष्ट होना चाहते हैं। कुरान में कहा गया है, जो लोग सारा जीवन पश्चात्ताप करेंगे, उन्हें अन्तिम दिन पश्चात्ताप नहीं करना होगा। पहले ही दिन मैंने भूदान माँगा था और पाया था। यह गाँव छोटा है। छोटे गाँव का हृदय बड़ा होता है। इस गाँव का नाम 'बिरल' है। बिरल का अर्थ है—अद्वितीय। इसलिए मैं आशा करता हूँ कि इस नाम को सार्थक करके आप आज मेरी यात्रा के सोलहवें दिन मुझे सोलह दान-पत्र देंगे। पहले दिन मुझे एक बड़ा पवित्र दान मिला था। उन सज्जन ने बड़े प्रेम के साथ दान दिया था। पहले दिन वह एक दान पाकर ही मैं प्रसन्न हुआ था। आज तो अन्तिम दिन है—सोलहवाँ दिन। बाबा की भिक्षा की

सेवी भर दें आप। जो लोग जमीन का दान करेंगे वही उसके प्राप्त कर्ताओं के नाम भी निश्चित कर देंगे। बाबा खाली हाथ ही आये थे और खाली हाथ ही लौट जायेंगे।

सबेरे के प्रस्थान आदि के बाद स्थानीय प्रमुख लोगों से मैंने थोड़ी बातचीत की—विशेषकर हेडमास्टर साहब से। विनोबाजी के आने से पहले इस स्थान को देखने के लिए जब मैंने विश्वम्भरजी को भेजा था, तभी उन्होंने हेडमास्टर साहब के सौजन्य और प्रशान्त हृदय का परिचय पा लिया था। मैंने उनसे कहा : "आज तो अन्तिम दिन है। गाँव के प्रमुख लोगों को लेकर विनोबाजी से कुछ देर बातचीत कीजिये। वे चाहते हैं कि आप लोगों के बीच में से ही कोई ग्राम-सेवा की बात ले करके उसका भार ले ले।" इस तरह की बातचीत प्रायः हर जगह थोड़ी-बहुत करता रहा था किन्तु आज अन्तिम दिन मानकर मैंने गम्भीर भाव से बातचीत करने की चेष्टा की।

विद्यालय का वातावरण बहुत अच्छा था। स्कूल के अहाते के अन्दर ही बच्चों के खेलने के लिए बड़ा मैदान था। विद्यालय के सामने ही हरियाली फैली थी जिसे देखकर आँखों को ठंडक पहुँचती थी। लोगों की भीड़ बराबर चल रही थी। बिरला की एक जावरा-मिल के अधिकारी ने सबकी आहार-व्यवस्था का भार लिया था। पदयात्री-दल के साथ जो सरकारी कर्मचारी थे, उन्होंने भी उन्हें खिलाने-पिलाने का भार लिया था। सबेरे दस बजे, अन्य दिनों की तरह बाबा कार्यकर्ताओं के साथ बैठे। उन्होंने कहा :

'हिन्दी और उर्दू में बहुत कम अन्तर है। यहाँ कार्यकर्ताओं को उर्दू सीखनी होगी। मेरी एक पुस्तक है 'मोहब्बत का पैगाम' —'प्रेम की वाणी'। इस पुस्तक को पढ़ने से उर्दू सीखना सहज होगा। कश्मीर में पदयात्रा के समय प्रार्थना-सभाओं में मैंने जो सब प्रवचन दिये थे, उन्हें एकत्र करके ही यह पुस्तक छापी गयी है। यहाँ के लोग उर्दू ही अधिक बोलते हैं; अतः हिन्दी भाषण में अरबी-फारसी शब्दों का अधिक मिश्रण

होने से ही उर्दू बन जाती है। यह पुस्तक देवनागरी और उर्दू दोनों ही लिपियों में छपी गयी है। दोनों को मिलाकर पढ़ने से उर्दू आसानी से सीखी जा सकती है।

"अकबर बादशाह के इस प्रश्न के उत्तर में कि 'सच-झूठ में दूरी कितनी है' बीरबल ने जवाब दिया था : 'चार अंगुल की। (विनोबाजी ने आँख और कान की दूरी हाथ से दिखाकर कहा) यही चार अंगुल। अर्थात् कान से सुने हुए और आँख से देखे हुए में अन्तर होता है। आँख से देखने पर जो सत्य मिलता है कान से सुनने पर अनेक बार उस सुनी हुई बात में झूठ आ जाता है। सुनी हुई बात हमेशा सच नहीं होती। आँखों और कानों के बीच चार अंगुल की दूरी है—बस इतना ही अन्तर। उपनिषद् में कहा गया है—'चक्षुर्वै सत्यम्'।

"निस्तरजन का प्रश्न है कि लोग यदि साथ न दें, तो कार्यकर्ता का क्या कर्तव्य है। प्रथमतः उसे अपनी तपस्या बढ़ानी होगी। दूसरी बात आवश्यक होने पर उसे स्थान-परिवर्तन करना होगा। मैं यदि भूदान-ग्रामदान के लिए आश्रम में ही रहकर प्रतीक्षा करता तो सम्भवतः वहाँ यह काम न होता और सारे भारत में यह काम न चल पाता। बापू यदि केवल सेवाग्राम में ही बैठे रहते तो उनका काम आगे न बढ़ता। सेवाग्राम में बापू का जो प्रभाव पड़ा उसके मुकाबले अन्यत्र शायद उनका अधिक प्रभाव पड़ा है।"

एक अन्य प्रश्न के उत्तर में विनोबाजी ने कहा 'कार्यकर्ताओं के बीच परस्पर विरोध दूर करने के अनेक उपाय हैं। प्रथम उपाय है पदयात्रा। इसका कारण यही है कि पद-यात्रा-काल में हम जब कहीं एक दिन रहेंगे तब यही कोशिश करेंगे कि एक दिन के लिए हमारे दोष प्रकाश में न आयें। इस तरह नित्यप्रति के अभ्यास से हमारे दोष कम हो जायेंगे हमारे गुणों का विकास होगा और परिणामतः परस्पर विरोध कम हो जायगा। दूसरा उपाय है पहले की बातों को भूल जाना पहले के विरोध-भाव की स्मृति से मुँह फेर लेना। तीसरा उपाय यह मानकर

बाद मे चित्तरंजन ने प्रश्न किया : "आप तो उसके बीच ज्योति-दर्शन की बात कह रहे हैं—यानी किसीके दोष न देखकर उसके गुण देखे जायँ। अब अनेक बार ऐसा हो सकता है कि सत्य के लिए किसीके दोष को प्रकट करना पड़े। ऐसा न करने से बहुत-सी गलतफहमियाँ पैदा हो सकती हैं—अनर्थ हो सकता है। ऐसे समय क्या करना चाहिए?"

विनोबाजी ने कहा : "मन को इतना अलग रखा जा सकता है कि दोष-दर्शन हो ही नहीं, केवल ज्योति-दर्शन ही हो। किन्तु व्यावहारिक जीवन में यदि दोष-दर्शन हो ही जाय, तो प्रेमपूर्वक उसके संशोधन के लिए जो कहना-करना होता है, वही कहना-करना होगा।

दैनिक कार्यक्रम चलता रहा। दोपहर की प्रार्थना हुई—विष्णु-सहस्रनाम के स्मरण के उपरान्त बाबा ने थोड़ा विश्राम किया। अपराह्न कालीन प्रार्थना सभा पाँच बजे करना निश्चित हुआ था, इसलिए बीच में थोड़ा समय उपलब्ध था।

एक बार विनोबाजी से बातचीत हुई। उन्होंने पूछा कि यहाँ भूदान का या सेवा का काम करने योग्य सेवक क्या नहीं मिलते? इस सम्बन्ध में बातचीत के क्रम में मैंने कहा, "यहाँ एक बड़ी गलती यह है कि नये त्यागी समाज-सेवक तैयार नहीं हुए हैं और अब भी नहीं हो रहे हैं। समाज-सेवक तैयार करने के लिए जिस बड़े आश्रमिक संगठन की आवश्यकता होती है, वह भी यहाँ नहीं है। नये आश्रम भी तैयार नहीं हो रहे हैं। हमारी जो दो-एक संस्थाएँ हैं, उनमें भी नये कार्यकर्ता पहुँच नहीं हो रहे हैं—यदि हों भी तो शिक्षा देने की जो व्यवस्था चाहिए, वह नहीं है। इसी कारण यहाँ वास्तविक समाज-सेवकों की कमी है। मैं निस्सन्देह इस सम्बन्ध में बड़ा आशावादी हूँ। यह दिख रहा है कि मुसलमान युवकों में से वास्तविक आश्रमिक आदर्शों के अनुरूप समाज-सेवक तैयार होंगे। लेकिन अभी इसमें कुछ देर है। भारत के विभिन्न स्थानों में अब भी जो आश्रम हैं, उनमें हमेशा कुछ-न-कुछ नवीन सेवक तैयार हो रहे हैं। यहाँ भी वैसा ही होगा।"

श्रीलंका के बन्धु श्री शिवगुरुनाथन् यह संवाद लेकर कि कब किस समय तक विनोबाजी सीमान्त पर पहुँचेंगे भारत के सीमान्त पर चले गये।

इस पदयात्रा में ऐसे लगभग पाँच व्यक्ति थे, जो वस्तुतः हमारे सर्वोदयी तो नहीं थे, किन्तु विनोबाजी के साथ कुछ दिन रहने के लिए आकर जिन्होंने सहायक कार्यकर्ता का स्थान सानन्द ग्रहण किया था। उनके साथ भी मैंने बातचीत की कि वे तो नये हैं; हम लोग पुराने हो गये हैं बूढ़े हो गये हैं हममें अब विशेष शक्ति नहीं रह गयी है। उन्होंने विनोबाजी को देखा उनकी बातें सुनीं। उन्होंने इस पदयात्रा से क्या ग्रहण किया विनोबाजी को वे क्या देंगे; भूदान सम्पत्तिदान श्रमदान विद्या-बुद्धिदान जीवनदान की कुछ दान वे कर सकें यह आज अन्तिम दिन विनोबाजी को बतायें। उन्होंने कहा कि उनने ही थोड़ा बहुत सेवा-कार्य किया है और आगे भी करेंगे।

इन साथियों में से एक ने (पूर्वोक्त ग्राम बाकिमार के निवासी थे) घर पर बात होने से पहले ही प्रातःकाल कुछ भूमि का दानपत्र लिख दिया था। दिनाजपुर जिले में प्रवेश करने के बाद केवल आलोकडिहि में एक दान प्राप्त हुआ था। दिनाजपुर जिले के शेष तीन कैम्पों में कोई दान नहीं मिला था।

अपराह्न तीन बजे के आसपास बाबा कालिन्दी बहन के साथ स्कूल के प्रांगण के बाहर गये। स्कूल के बाहर ही थाना का विश्राम है। वहाँ एक वृक्ष की छाया में बैठकर उन्होंने उनके साथ कुछ देर बातचीत की। विराम के चारों ओर लोगों की भीड़ लगी थी। करीब आध घंटा वहाँ बैठकर थोड़ा घूमकर वे वापस स्कूल में आ गये। अब गाँव के प्रमुख लोग उनके पास आ बैठे। उन्होंने उनसे कहा

वास्तविक समाज-सेवक चाहिए

इतने दिनों में ध्यान में यह बात आती है कि लोगों के हृदय

दीनाजपुर : प्रार्थना-सभा में बोलते हुए

विराट की प्रार्थना-सभा में बोलते हुए विनोबा

अलविदा पाकिस्तान !

पाक भारत सीमा पर पाकिस्तान से विदाई की बेला में

प्रेम का विकास विविधता के ही बीच होगा

"आज मेरी पाकिस्तान-यात्रा का अन्तिम दिन है। भगवान् की इच्छा से कल चला जाऊँगा। इन तेरह दिनों में मुझे आपके प्रेममय पुण्यस्थल के दर्शन मिले हैं। समस्त समाज में दो गुणों की आवश्यकता है। पहला गुण है, एक-दूसरे के प्रति प्रेम भाव। भगवान् ने जान-बूझकर ही अनेक जातियों, अनेक भाषाओं और अनेक धर्मों को जन्म देकर विविधता की सृष्टि की है। यदि वे चाहते, तो एक ही जाति एक ही भाषा और एक ही धर्म की सृष्टि कर सकते थे। इस सम्बन्ध में पुरानी बाइबिल में एक मजेदार कहानी है। यह उपाख्यान बेबिलोन का है। वहाँ के लोगों ने एक बड़ी ऊँची मीनार का निर्माण आरम्भ किया। ख्याल यह था कि भगवान् ऊपर स्वर्ग में हैं—इस मीनार पर चढ़कर उनके दर्शन किये जायेंगे। आजकल अमेरिका में पचास-साठ मंजिल ऊँचे मकान तैयार हुए हैं। इनके पीछे उद्देश्य निस्सन्देह दूसरा है—शहर में स्थान की कमी है और आजीविका के लिए सब लोग शहरों में आकर रहना चाहते हैं इसलिए मकानों का निर्माण ऊपर की ओर किया जाय। वैसे एक-एक मकान में बीस-पचीस हजार लोग रहते हैं। बेबिलोन के लोगों ने स्वर्गपुरी में जाने के लिए मीनार का निर्माण आरम्भ किया था। ईश्वर ने उनकी मूर्खता देखकर, उनका यह काम बन्द करने के लिए एक उपाय किया। उन्होंने एक दिन अचानक एक भाषा के स्थान पर कई भाषाओं को जन्म दे दिया। अब यदि कोई कहे कि 'ईंट लाओ' तो कोई चूना ले आये और चूना लाने के लिए कहने पर कोई दूसरी चीज ले आये। इस तरह भाषा की गड़बड़ी से मीनार निर्माण का काम रुक गया। इस कहानी का तात्पर्य यह है कि भगवान् ने जान-बूझकर ही कई भाषाओं को जन्म दिया। देश प्रेम और विविधता चाहे जितनी हो, अन्दर से तो हम एक हैं—यह बात हमें समझनी होगी। अनेक धर्म अनेक सम्प्रदाय अनेक भाषाएँ अनेक संस्कृतियाँ अनेक जातियाँ हैं तो रहें। भगवान् ने यह

मनुष्य एक हैं—सब परिवार मिलकर एक परिवार हैं—यह स्थिति हमें प्राप्त करनी होगी। और यह स्थिति प्राप्त होगी प्रेम से। ईश्वर ने हम सबको प्रेम-भाव दिया है और इसका विकास विविधता के ही बीच होगा।

प्रेम के विस्तार से ही निर्भयता आयेगी

समाज का दूसरा गुण है—निर्भयता। प्रेम का विस्तार होने पर भय रह ही नहीं पायेगा। दूसरे शब्दों में, जब तक भय है तब तक वास्तविक प्रेम नहीं है। भीति और प्रीति दोनों परस्पर विरोधी वस्तुएँ हैं। ये दोनों वस्तुएँ एक साथ नहीं रह सकतीं। अल्पसंख्यकों को भय है कि बहुसंख्यक उन्हें दबाये रखेंगे। जो लोग निर्भीक होंगे वे न तो किसीसे भय पायेंगे और न किसीको भयभीत करेंगे। जो लोग दूसरों को डरा कर दबाकर रखते हैं उनके सम्बन्ध में यह मानना होगा कि भय पर उनका विश्वास है और प्रबलतर शक्ति के सामने वे भी भयभीत होंगे। ऐसे लोगों को निर्भीक नहीं कहा जा सकता। बिल्ली चूहे के सामने खूब वीरता दिखाती है, खूब पराक्रम दिखाती है, क्रोध से उसकी पूँछ फूल उठती है, उसके रोंए खड़े हो जाते हैं। जरा उसके इस रूप की कल्पना कीजिये। अब उसी बिल्ली के सामने एक कुत्ता आ गया उस पर आक्रमण करने के लिए। जरा सोचिये अब उसका रूप क्या होगा। वह भय से सिकुड़ जायगी, काँपने लगेगी और भागेगी। अब बिल्ली को निर्भीक कौन कहेगा? जो भयभीत होता है वह निश्चय ही भीरु है। इसी प्रकार जो भय दिखाता है उसे भी भीरु ही कहना पड़ेगा। जो कुत्ता बिल्ली को डराता है वही बाघ के सामने काँपता है। एक आदमी बैलगाड़ी लेकर जंगल के बीच से जा रहा था। तभी हठात् एक बाघ उसके सामने आ गया। बाघ गरजकर उस पर हमला करने ही वाला था कि उसने टार्च की रोशनी उसकी आँखों पर फेंकी। इसके साथ ही बाघ डरकर भाग गया। जो बाघ कुत्ता और अन्य पशुओं को डराता है वही मनुष्य के टार्च और बन्दूक से डरकर भागता है। जो बच्चा हाथी देखने का अभ्यस्त

नहीं है, पर मेरी दाढ़ी देखकर डर जाता है। किन्तु जो बच्चा अपने दादा की दाढ़ी देखने का अभ्यस्त है वह अपने पिता की गोद में चढ़ कर दाढ़ी खींचता है। परिवार में जैसी प्रीति है वैसी ही इस बच्चे की निर्भयता है। समाज में भी इस प्रीति के साथ साथ सम्पूर्ण निर्भयता आनी चाहिये। तब सम्पूर्ण गाँव एक-मन एक-हृदय और एक-परिवार हो जायगा। समाज में विविधता चाहे जितनी हो—स्त्री पुरुष, शिशु-वृद्ध, ज्ञानी-अज्ञानी, दुर्बल सबल, हिन्दू मुसलमान—किन्तु विरोध नहीं होना चाहिए। मान लीजिये कि एक परिवार का बड़ा लड़का एक रुपये का रोजगार करता है दूसरा लड़का बारह आने का रोजगार करता है तीसरा आठ आने का चौथा चार आने का और बूढ़ा बाप काम नहीं कर पाता वह कोई रोजगार नहीं करता। अब उस परिवार का बड़ा लड़का क्या एक रुपये का खाना खायेगा दूसरा लड़का बारह आने का तीसरा लड़का आठ आने का और चौथा लड़का चार आने का? और बूढ़ा बाप कोई रोजगार नहीं करता इसलिए क्या रोजा रखेगा? परिवार में क्या ऐसा होता है? ऐसा नहीं होता। वे सब एक साथ खायेंगे अपनी जरूरत के मुताबिक खायेंगे। इस ही कहते हैं प्रेम का नियम—इसीसे परिवार में शान्ति रहती है। समाज में भी यही प्रेम-नीति चलानी होगी तभी समाज में शान्ति स्थापित होगी।

'विज्ञान के युग में परिवार बड़ा होना चाहिए। यह जो लाउडस्पीकर है इसके कारण इस सभा में उपस्थित लगभग पन्द्रह हजार लोग आराम से मेरी सब बातें सुन पा रहे हैं। पहले मुश्किल से एक हजार आदमी किसी सभा में बैठकर भाषण सुन सकते थे। इसलिए छोटी छोटी सभाएँ होती थीं। आज विज्ञान के युग में सभाएँ बड़ी होती हैं। इसी तरह विज्ञान के युग में आधुनिक परिवारों का भी बड़ा होना होगा। अब छोटा परिवार नहीं चल सकता। मान लीजिये कि बाढ़ आ गयी है—अब दो-चार लोग क्या कर पायेंगे? फिर तो पूरे गाँव को—या पाँच सात गाँवों को या क्षेत्र-विशेष के तीन-चार थानों को—

मिलकर बाढ़ से निबटने का उपाय करना होगा। प्रकृति तो राष्ट्र-भेद जानती नहीं। अतः उस पर काबू पाने के लिए हमें भी राष्ट्र-भेद भूलकर, दो-तीन राष्ट्रों को साथ मिलकर, काम करना होगा। विज्ञान के युग में छोटी-छोटी व्यवस्थाएँ नहीं चल सकतीं, छोटे-छोटे परिवार नहीं चल सकते। अब देखिये, यूरोप में Common market की व्यवस्था हो रही है। इससे हमें नुकसान पहुँचेगा इस कारण प्रतिकार चल रहा है। जब छोटे-छोटे राष्ट्र अकेले नहीं टिक पा रहे हैं, तब छोटे-छोटे परिवार कैसे टिकेंगे? आज कुछ युवक पूछ रहे थे—भूदान का उद्देश्य क्या है? बाबा को ऐसी क्या जरूरत आ पड़ी है कि सारे भारत वर्षों से जाड़ा गर्मी बरसात बाढ़ आदि में रोज-रोज गाँवों का चक्कर लगाता फिर रहे हैं? बाबा का एकमात्र उद्देश्य है हृदय से हृदय जोड़ना। कोई कहते हैं कि मैं भूदान मांगकर जमीन के छोटे-छोटे टुकड़ों को और भी छोटा कर रहा हूँ—इससे खेती-बारी में असुविधा होगी। किन्तु मैंने तो कहा नहीं कि जमीन के टुकड़े करने होंगे। मैं तो चाहता हूँ कि सब लोग एक साथ सबके सहयोग से खेती हो। मैं चाहता हूँ कि हृदय के टुकड़े जुड़ जायँ। कुरान की भाषा में मैं समझाने के लिए आया हूँ और वह मकसद है हृदय से हृदय जोड़ना। इस काम के हो जाने पर जमीन के टुकड़े भी जोड़े जा सकेंगे। जो लोग यह काम करते हैं, वे भगवान् के प्रिय हैं जनसाधारण के प्रिय हैं—ऐसा मेरा अनुभव है। यदि यह काम न करके मैं लोगों में झगड़ा फैलाता चलता तो क्या सरकार मुझे इस देश में आने देती या मैं ही क्या अनुमति माँगने का साहस करता? यहाँ पहले दिन ही मैंने एक पवित्र दान पाया था। भारत में यदि भूदान की नदी बह रही है तो पाकिस्तान में सिर्फ छोटी नदी में बहना आरम्भ किया है वह क्या सूख जायगी? यदि कोई हृदयवान् सज्जन इस काम को हाथ में ले तो यह चलता रहेगा। और यदि कोई कुछ न करे तो यह नदी समाप्त हो जायगी। जो हो बाबा के मन में इस बात का सन्तोष है कि इन कुछ दिनों में १५ बीघा से अधिक भूमि

रूप में मिली है और इससे १ [illegible] व्यक्तियों के भरण-पोषण की समस्या
हमेशा-हमेशा के लिए हल हो जायगी। बाबा का ख्याल है कि इतने से
ही उनका जीवन धन्य हो गया है।

शरीर के अंग-प्रत्यंग के समान ही समाज के विभाग

"इस देश में जमीन कम है। संसार के अनेक स्थानों में जमीन कम
है। इसके लिए विज्ञान की सहायता लेनी होगी, ताकि उत्पादन बढ़े।
केवल भूदान से ही सब काम नहीं हो जायगा। इसके साथ-साथ चरखा
आदि ग्रामोद्योग चलाने होंगे। गाँव का तेली तेल तैयार करता है, किन्तु
उस तेल का दाम थोड़ा अधिक होने के कारण गाँव का मोची उसे नहीं
खरीदता। वह बाजार की मिल का सस्ता तेल खरीदता है। उधर मोची
जो जूता तैयार करता है उसे तेली नहीं खरीदता—वह कम पैसे में बाटा
का बना जूता खरीदता है। इसका अर्थ यह है कि गाँव का तेली गाँव
के मोची को नहीं बचाना चाहता और गाँव का मोची गाँव के तेली को
नहीं बचाना चाहता। मान लीजिए कि आठ आना अधिक दाम देकर
गाँव के तेली ने गाँव के मोची का जूता खरीदा और गाँव के मोची ने
एक रुपया अधिक देकर गाँव के तेली का तेल खरीदा। इससे क्या
होगा? अन्ततः किसीका नुकसान नहीं होगा, बल्कि गाँव का काम
होगा—तेल का पैसा और जूते का पैसा गाँव में ही रहेगा, नहीं इधर
उधर फैल जायगा।

"[illegible] का [illegible] का [illegible] उपयोग करे। अगर [illegible]
[illegible] नहीं होगी, तब। [illegible] सिपाही [illegible] है [illegible]
[illegible] उसे अपने [illegible] नहीं [illegible] दूसरे सिपाही की ओर [illegible]
देता है। [illegible] एक हाथ से दूसरे हाथ में [illegible]
[illegible] का [illegible]। [illegible] और [illegible]
और [illegible] हाथ [illegible] में [illegible] उसे [illegible] नहीं
[illegible] और हाथ में [illegible]

पड़े सड़कर रसगुल्ला दुर्गन्ध देने लगेगा। मान लीजिये कि हाथ ने रसगुल्ले को मुँह में रख दिया लेकिन मुँह स्वार्थी है और वह उसे पेट में ही भेजता तब क्या होगा? मुँह फूला रहेगा और मुँह में सड़कर रसगुल्ला बीमारियाँ पैदा करेगा। फिर यदि मुँह ने रसगुल्ले को पेट में भेज दिया और पेट ने स्वार्थी की तरह उसे अपने पास ही रोक लिया तब क्या होगा? रसगुल्ला पेट में सड़कर बीमारी पैदा करेगा और अन्त में पेट का ऑपरेशन करना होगा। यदि पेट को बुद्धि हो तो वह रसगुल्ले को हजम करके उससे खून तैयार कर देगा और खून चारों ओर फैलकर शरीर को पुष्ट करेगा। समाज भी शरीर के ही समान है—एक से दूसरे का सम्बन्ध है। शरीर की भाँति सारा समाज जब एक तरह का हो जायगा तभी वह सौन्दर्य होगा। एक बच्चे को रोता देखकर मैंने पूछा 'तुम्हारी आँखों से पानी क्यों निकल रहा है?' उसने जवाब दिया 'कान में बड़ा दर्द हो रहा है।' तब मैंने उससे कहा: 'यह तो बड़े आश्चर्य की बात है। दुःख पा रहे हैं कान और रो रही हैं आँखें! ऐसा ऐसा क्यों?' यह बात सुनकर वह रोते-रोते हँस पड़ा। समाज के विभिन्न अंगों के बीच भी ऐसा ही होना चाहिए। मैं रोज सात-आठ मील चलता हूँ—वह भी कभी कभी कीचड़ से होकर और कभी लगातार

विविधता ईश्वर की सृष्टि है। प्रेम और निर्भयता में विरोध का अवसान। ग्रामोद्योगों का प्रचलन होगा। गाँव की सारी जमीन सबकी होगी। सब गाँव एक परिवार की तरह प्रेम में बँधकर आनन्द और सुखी होगा।"

इसके बाद मौन प्रार्थना। विनोबाजी के कहने पर सब लोग शान्तिपूर्वक बैठने जा रहे थे, तभी अचानक थोड़ी वर्षा हो गयी। जनता उठकर खड़ी हो गयी—किसी किसीने छाता खोल लिया। किन्तु वर्षा तभी रुक गयी। तब विनोबाजी ने कहा: 'आप लोग इस थोड़ी-सी वर्षा से परेशान हो उठे। प्रार्थना के लिए शान्त होकर बैठ नहीं सके। वर्षा तो भगवान् के आशीर्वाद की वृष्टि है। जो हो, अब वर्षा समाप्त हो गयी है। मैं फिर आपसे शान्त भाव से मौन बैठने के लिए कहूँगा। सब लोग बैठ जाइये। आज सिर्फ एक मिनट के लिए ही मौन प्रार्थना होगी।"

जनता शान्त होकर बैठ गयी। दो मिनट बाद विनोबाजी "सबको प्रणाम जय जगत्" बोलकर मंच से उतर कर मैं चले आये।

एस. डी. ओ. साहब जल्दी जल्दी विदा माँग रहे थे—उन्हें सीमान्त की ओर जाना था इसलिए। सरकारी संवाददाता और फोटोग्राफर भी एस. डी. ओ. साहब के साथ जाने के लिए जल्दीबाजी कर रहे थे। एस. डी. ओ. साहब और अन्य सरकारी कर्मचारी जा रहे थे सीमान्त की ओर—विदाई के अवसर पर बाबा के स्वागत की व्यवस्था करने के लिए। सरला और कल्पना ने कहा कि पदयात्री-दल के सभी सदस्यों के साथ बाबा की तस्वीर उतारी जानी चाहिए। बाबा सहमत हो गये। सरकारी फोटोग्राफर ने पदयात्री-दल एस. डी. ओ. साहब और उपस्थित संवाददाताओं के साथ बाबा की एक फोटो उतारी।

सायंकालीन प्रार्थना से पहले ही सरकारी सुरक्षा-कर्मचारियों में से कुछ एक विदा लेने आये। उनकी दृष्टि नम हो गयी थी—अब वे बाबा को नहीं देख पायेंगे। बाबा ने आशीर्वाद में हाथ हिलाकर उन्हें विदा दी।

सन्ध्याकालीन प्रार्थना से पहले अगले पड़ाव के विषय में बोलते हुए मैंने कहा : "अगला पड़ाव तो अब मेरे तत्त्वावधान में है नहीं। सीमान्त तक लगभग साढ़े छह मील का रास्ता है। आप लोगों को वहाँ पहुँचाकर हम लोग लौट आयेंगे। लेकिन कल यात्रा आरम्भ करने से पहले हम सब कुछ मिनट तक आपके पास बैठेंगे। सीमान्त पर, मोटे तौर पर, नौ बजे पहुँच जायें, इस हिसाब से माल-असबाब भेजकर हम लोग रवाना होंगे। सारा सामान बैलगाड़ी में जायगा, कुछ दूर लोगों के सिर पर भी जायगा, क्योंकि लगभग आधा मील रेल-लाइन पकड़कर चलना होगा।" बाबा ने कहा : 'फिर साढ़े तीन बजे ही रवाना होना पड़ेगा।' मैंने कहा : 'नहीं, ऐसा नहीं। कल अन्तिम दिन है। हाँ, हम कोशिश करेंगे उसी समय रवाना होने की, लेकिन उससे पहले हम सब कुछ देर बैठेंगे आपके पास।" बाबा ने हँसकर सम्मति दे दी। उसके बाद वे बाहर बरामदे में सो गये।

प्रेम की स्मृति सदा जीवित रहेगी

कालिन्दी बहन ने अपनी २ सितम्बर की डायरी में लिखा है : मैं मन ही मन सोचती हूँ, इस पाकिस्तान की भूमि से हमारा सम्बन्ध क्या कभी टूटनेवाला है? यह एक चिरस्मरणीय यात्रा थी। यहाँ का हर प्रसंग मन में ताजा रहेगा, क्योंकि इन सब प्रसंगों में एक ही भाव बिखरा पड़ा है—प्रेम का भाव। बाबा ने तो कई बार कहा है : 'मेरे बन्धुओं ने सुझाया था कि यहाँ यात्रा आरम्भ करने से पहले कुछ लोगों को अनुगामी दल के रूप में भेजा जाय, किन्तु मैंने यह बात नहीं मानी। कारण, मुझे विश्वास था कि यहाँ की जनता प्रेमपूर्वक ही मेरा स्वागत करेगी। और वह अनुभव मुझे यहाँ मिला है। जो प्रेम का भूखा बनकर आयगा, उसे प्रेम नहीं तो और क्या मिलेगा? पाकिस्तान सरकार जानती थी कि यह आदमी गड़बड़ करनेवाला नहीं है, इसी लिए उसने आने की अनुमति दी—मुझे भी अनुमति माँगने का कारण

हुआ। प्रथम दिन से ही मुझे प्रेम के दर्शन हुए हैं—भूदान मिला है। मैं यहाँ द्रव्य दान करने आया हूँ—प्रेम देने और लेने आया हूँ। उसकी सीमा कहाँ है? कहाँ है बन्धन? प्रेम की तरंग में स्थान और काल का बन्धन नहीं है। मैं पाकिस्तान का हो गया हूँ—पाकिस्तान मेरा हो गया है।"

उस रात भाषण आदि के बाद पदयात्री बन्धुओं और दर्शनार्थियों से मैंने कहा कि बाबा ने छोड़ दिया है जब यात्रा आरम्भ होने से पहले हम लोग थोड़ी देर उनके साथ बैठेंगे। रंजन एक गीत सुनायेगा और कल्पना अपनी लिखी हुई कोई चीज पढ़कर सुनायेगी।

उस दिन भरतपुर-काम कवि बन्धु शेमुल हक, श्री केशव पटेल और एक अन्य भाई आये थे। उनके आने का उद्देश्य यात्रा की अन्तिम सभा में शामिल होना था। रात में उन्होंने हम लोगों के साथ ही भोजन आदि किया। हिम्मतपुर में उनकी ट्रेन छूट गयी थी और वे पैदल ही थके मांदे यहाँ आये थे।

●

तो सुना कि बाबा ने नदी के छातीभर ऊँचे पानी को पैदल ही पार कर लिया। उनके साथ-साथ बाकी एक सरकारी रक्षक-दल के कर्मचारियों आदि ने भी पैदल ही चलकर या तैरकर नदी पार की। बाद में मालूम हुआ कि बाबा जब नदी किनारे आये तब नौका के मांझी को पुकारा जाने लगा; उधर बाबा ने पूछा कि नदी में पानी कितना है किसीने बताया कि पानी ज्यादा नहीं है बस, घुटने से ऊपर होगा। सुनकर बाबा ने चलना शुरू किया। उनकी छाती तक पानी लगा। परन्तु कुसुमा ने सिर पर बाल्टेन रखकर नदी पार की। इतना तो छोटे कद की थी—उसकी ठुड्डी तक पानी आया। जिसने कहा था कि पानी घुटने से ऊपर होगा उसने एक तरह से सच ही कहा था; कितना ऊपर होगा यह उसने कहाँ बताया था।

हाँ हमारी हालत ऐसी नहीं हुई। मांझी उस समय नौका लेकर घाट पर ही था। हम तो आराम से ही पार हुए। इधर विमलभाई बैलगाड़ी में सामान लेकर नदी किनारे आ पहुँचे थे। देखा गया कि सामान के साथ गाड़ी का नदी पार कर सकना सम्भव नहीं है सामान भीग जायगा। इसलिए विमलभाई की सहायता के लिए वीरेन और मन्टू को वहीं छोड़ आया। उस समय तक रास्ता उजाला हो गया था पर आकाश अब भी मेघाच्छादित था। कालिन्दी जल्दी-जल्दी आगे बढ़ने लगी बोली: "बाबा को जाकर पकड़ूँ। सम्भव है कोई महत्त्वपूर्ण बातचीत हो रही हो। फिर सुन नहीं पाऊँगी।" मैंने कहा: 'तब चलो मैं भी जल्दी-जल्दी चलता हूँ तुम्हारे साथ।" मैं भी तेजी से बढ़ने लगा। लगभग पचीस मिनट इस तरह चलने के बाद देखा कि दूर में एक स्थान पर बाबा दल-बल-सहित उपस्थित खड़े हैं। हमें देखकर वे हँसे बोले। "खड़ा-खड़ा राह देख रहा हूँ कि आपने नदी कैसे पार की?" मैंने हँसकर कहा: "नौका से, आपकी तरह तैरना नहीं पड़ा हमें।" बाबा जोरा हँसे। मैंने पूछा: 'कुम्भ-स्नान हो गया?" उत्तर मिला: "हाँ।" मैंने पूछा: 'यह कैसे? भीगा नहीं तब?" विमल

ने जवाब दिया "नहीं, बैठे में प्लास्टिक के कपड़े से सब ढँका है—कुछ भी नहीं भीगा।" मैं समझ गया—पूर्व अनुभव से यह सब व्यवस्था की गयी थी। कालिन्दी ने कहा "अक्सर मैं तो बाढ़ के समय काफी पानी से गुजरना पड़ा है। डूबने योग्य गहरे पानी में लोगों के हाथ पकड़कर चली हूँ।" तभी आशादेवी भी आ गयीं। फिर चलना शुरू हुआ। इस बार भीड़ खूब बढ़ने लगी। गाँवों के लोग कीचड़-पानी से होकर आ रहे थे। धूप भी उग आयी थी। मैं, कालिन्दी और तरना बाबा के कुछ आगे चलने लगे। चलते-चलते कालिन्दी से बात करता था, दूर से दिखाया: 'वह देखो, सीमान्त।" कुछ और आगे जाने पर रेल-लाइन के पास से होकर चलना पड़ा। अब हम लोग सीमान्त के काफी निकट आ गये थे—सीमान्त कोई एक फर्लांग रहा होगा। लोगों की भीड़ बेहद बढ़ गयी। उधर से बहुत-से लोग दौड़ते हुए आकर भीड़ बढ़ाने लगे। देशी-विदेशी फोटोग्राफरों के एक दल ने आकर हमला किया। रेलवे-लाइन की बगल से बड़ा सँकरा रास्ता था—सब व्यवस्था छिन्न-भिन्न हो गयी। पाक-सीमान्त पर जो तोरण तैयार किया गया था किसी तरह उसके पास पहुँचकर देखा कि दिनाजपुर के डिप्टी कमिश्नर, पुलिस-सुपरिटेण्डेण्ट तथा एस डी ओ साहब और भारत के पक्ष स्थित डिप्टी हाई कमिश्नर एवं उनके साथी, जिन्होंने कल दिनाजपुर आकर मुलाकात की थी मौजूद हैं। दिनाजपुर के डिप्टी कमिश्नर साहब ने बाबा से हाथ मिलाकर बिदाई-सम्बन्धी दो-चार शब्द कहे। मैं तो लोगों की भीड़ में धक्के खा के एकदम पिछड़ गया था भीड़ में दबने जैसी अवस्था हो गयी। कौन कहाँ है—यहाँ तक कि कालिन्दी कहाँ है—मैं यही नहीं देख पा रहा था। पूछने पर एक आदमी ने कहा: 'वह क्या है अब पर।" ख़याल आया कि यदि भीड़ को चीरकर आगे न बढ़ा तो बाबा से मुलाकात नहीं हो पायेगी। किसी तरह कोशिश करके, धक्का मुक्की करके आगे बढ़ा और उछलकर मंच पर चढ़ गया। फिर इधर उधर नजर दौड़ायी, कालिन्दी को देखा—उन्होंने भी मुझे देखा।

मंच मैं सबको पास ले आया। दिनाजपुर के डिप्टी कमिश्नर, पुलिस-सुपरिंटेण्डेण्ट आदि को भी बुलाकर मंच पर बिठाया—भारत के डिप्टी हाई कमिश्नर को भी बुला के लाकर बिठाया। वहाँ खड़े होकर नजर दौड़ाने पर पश्चिम बंगाल के अनेक परिचित चेहरे दिखाई पड़े। वहाँ यदि मैं अपने को इस तरह प्रकट करके खड़ा न होता, तो इस अन्तिम दृश्य के दर्शन और उपभोग से वंचित रह जाना पड़ता। वहाँ से देखा सुधीरदा (लाहिड़ी) को भरिनदा (भाद्दुत) को और भी कई बन्धुओं को—अपने भूतपूर्व साथी गुरु को जो नोआखाली में मेरे साथ था। मंच पर चारुदा (भण्डारी) और पश्चिम बंगाल के मुख्य मन्त्री प्रफुल्ल सेन तो खड़े थे ही। चारुदा और प्रफुल्ल सेन के भाषणों के बाद बाबा का भाषण हुआ। इसी बीच विश्वभाई उपस्थित हुए—उन्होंने बताया कि सामान आ गया है। चारुदा से मैंने सामान का भार लेनेवाले आदमी की व्यवस्था करने को कहा। विश्वभाई और चारुदा ने आवश्यक व्यवस्था की। भीड़ में सुव्यवस्था नहीं रह सकी थी इसलिए विश्व को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा।

भाषण के बाद बाबा चले। बाबा के चलने से कुछ देर पहले ही दिनाजपुर के डिप्टी कमिश्नर पुलिस-सुपरिंटेण्डेण्ट और भारत के डिप्टी हाई कमिश्नर विदा माँगकर चले गये थे। भरिनदा सुधीरदा चारुदा आदि के साथ हम गले मिले। बाबा से विदा ऐसे समय करना और कल्पना अपने आँसुओं को न रोक सकी हालाँकि उन्होंने कहा था कि आगे नहीं बढ़ाव है। कालिन्दी बहन ने आकर, प्रणाम करके विदा ली जब विजय मराठेजी सबने विदा ली। बाबा भी इस लोगों की ओर एक बार देखकर थोड़ा हँसकर मंच से उतर गये और चलने लगे। यद्यपि इस स्थान पर सबका एक स्तम्भ खड़ा करके पाक-भारत-सीमान्त का निर्देश किया गया था तथापि पाक सीमान्त और भारतीय सीमान्त की ओर ( ) तोरणों का निर्माण करके बीच में थोड़ा स्थान खाली रखा गया था—सार्वजनिक प्रचलन के अनुसार वह No man's land था

और वहाँ मंच तैयार करके सभा की व्यवस्था की गयी थी। पाकिस्तान के तोरण पर पाकिस्तानी हरा झंडा और भारत के तोरण पर भारतीय तिरंगा दोनों ध्वज हवा से अठखेलियाँ कर रहे थे। पाकिस्तानी तोरण पर लिखा था पाकिस्तान जिन्दाबाद आचार्य विनोबाजी : विदा, आप पैगंबरी हैं। भारत के तोरण पर लिखा था : जय जगत् आचार्य विनोबाजी : स्वागतम्।

पश्चिम बंगाल के मुख्य मन्त्री श्री प्रफुल्लचन्द्र सेन और सर्वोदय-नेता श्री चारुचन्द्र भण्डारी के स्वागत-भाषणों के उपरान्त विनोबाजी ने अपने भाषण में कहा था

धन्यवाद

"मैंने बहुत सोच-विचार करने के बाद ही पाकिस्तान-सरकार की अनुमति माँगी थी। मैं खुशी से कह सकता हूँ कि पाकिस्तान-सरकार ने प्रसन्नतापूर्वक ही मुझे अनुमति दी। सोलह दिन तक पूर्व पाकिस्तान में मेरी पदयात्रा चली। इस अवधि में यात्रा की सुविधा के लिए सरकार की ओर से बड़ी अच्छी व्यवस्था की गयी थी। मुझे किसी तरह का कष्ट या असुविधा नहीं हुई। इस सबके लिए मैं पाकिस्तान-सरकार और उसके कर्मचारियों को हृदय से धन्यवाद देता हूँ। सरकार ने हमारी देखभाल के लिए जिन सब कर्मचारियों को नियुक्त किया था उन्हें मैं हार्दिक धन्यवाद देता हूँ—उन्होंने बड़ा आदर करके हमारी सुख-सुविधा की देखभाल की है।

"इस पदयात्रा में मेरे साथ रहे कार्यकर्ताओं में उनकी बात भी मैं स्मरण कर रहा हूँ। महात्मा गांधी जब नोआखाली गये थे, तभी से ये लोग निष्ठापूर्वक पाकिस्तान की सेवा कर रहे हैं। जब उन्होंने मेरी पूर्व पाकिस्तान की पदयात्रा की बात सुनी तो दौड़ आये और १६ दिन तक मेरे साथ रहकर उन्होंने अत्यन्त प्रेम से सेवा कार्य किया। उन्हें पाकर मुझे बड़ा आनन्द हुआ। उनकी सेवा के लिए मैं उन्हें धन्यवाद नहीं

दूँगा—जिस निष्ठा के साथ वे पाकिस्तान की सेवा कर रहे हैं उसका स्पर्श सभी हृदयों को मिले बस, मैं इतनी ही आशा करूँगा।

त्रिवेणी के संगम पर लोक-हृदय में भेद नहीं रह सकता

"अन्त में पाकिस्तान की जनता को भी स्मरण किये बिना मैं नहीं रह सकता। मुझे पूरा विश्वास था कि उनका प्रेम मुझे मिलेगा। किन्तु यह विश्वास कुरान के अनुसार, 'इल्मुल यकीन' अर्थात् बौद्धिक विश्वास था। मैंने पाकिस्तान में प्रवेश करते ही देखा कि जनता का हृदय प्रेम और उत्साह की तरंगों से उद्वेलित हो रहा है।

"मेरा ख्याल है कि इन तेरह दिनों में कम-से-कम सवा लाख लोगों ने मेरा भाषण सुना है और प्रार्थना के समय मौन तथा शान्त रहे हैं। यह बड़ा ही अनूठा दृश्य था—मैं जीवनभर उस दृश्य को नहीं भूल सकूँगा। यह जो जनता के प्रेम से मेरा साक्षात्कार हुआ उसे कुरान की भाषा में 'ऐनुल यकीन' कहते हैं। जहाँ मैंने जनता को प्रेम के साथ देखा मुझे ऐसा अनुभव हो रहा था जैसे उसने मुझे बिलकुल अपना बना लिया हो। तेरह दिन में बड़े पैमाने पर भूदान-आन्दोलन चलाऊँगा, यह बात मेरे ख्याल में भी न आयी थी—मैंने केवल प्रेम-प्रकाश के सिलसिले में भूदान के सम्बन्ध में बातें की हैं। पहले दिन ही जमीन देने के लिए एक मुसलमान भाई आये। वे चार एकड़ जमीन के मालिक थे—उन्होंने एक एकड़ जमीन दान में दी जिसे जमीन मिली उसका नाम भी लिखा यानी जमीन मिलने के साथ साथ उसका वितरण भी हो गया। उन्होंने जमीन की रजिस्ट्री का खर्च देना भी स्वीकार किया। तब मैंने उनके कन्धे पर हाथ रखकर कहा "मैं आपके लिए भगवान् से आशीर्वाद माँगूँगा। उनकी आँखें भर आयीं। यह पहले दिन का अत्यन्त पवित्र दान था। बाद में प्रायः हर दिन कुछ-न-कुछ दान मिलता रहा था; कुल डेढ़ सौ बीघा से कुछ अधिक जमीन दान में मिली। इस तरह मैंने प्रेम का प्रत्यक्ष परिचय प्राप्त किया—खूब आनन्द मिला।

"कुछ संवाददाताओं ने पूछा था : 'आपका उद्देश्य क्या है ?'
मैंने कहा कि मेरा तो बहुत अच्छा उद्देश्य है—जहाँ गंगा, यमुना और पद्मा का संगम है—ब्रह्मपुत्र को यहाँ यमुना नाम दिया गया है—जहाँ इन तीन नदियों का संगम है—इस तरह की जो नदियाँ पात्र-भेद नहीं करतीं, वे जिस देश से होकर बहती हैं, वहाँ लोगों के हृदय में भी भेद नहीं रह सकता।

बंगाल का स्मरण हृदय में अंकित है

"सम्पूर्ण भारत-भूमि देखने के बाद अन्त में मैं बंगाल देश में आया हूँ। बचपन से ही मैंने बंगाल से प्रेरणा पायी है—बंगाल के महापुरुषों से मैंने बहुत गुण-ग्रहण किया है। वह महान् ऋण मेरे हृदय में अंकित है। इस ऋण से मैं मुक्त नहीं हो सकूँगा। (इतना बोलकर विनोबाजी प्रायः दो मिनिट शान्त खड़े रहे—उनकी आँखों से अश्रुधारा बहती रही।) इस बंगाल के महापुरुषों से मैंने बहुत प्रेरणा पायी है। बंगाल की इस भूमि के प्रति मेरे मन में आदर भाव है। संसार में ऐसा कोई प्रदेश नहीं है, जहाँ महापुरुषों का जन्म न हुआ हो। महाराष्ट्र में भी अनेक महापुरुष पैदा हुए हैं। बचपन से ही उनका प्रभाव पड़ने के साथ-साथ बंगाल के महापुरुषों का भी प्रभाव मुझ पर पड़ा है। ऐसे प्रदेश की यदि मैं कुछ सेवा कर सकूँ, तो मुझे बहुत ही आनन्द प्राप्त होगा—मैं कृतार्थ अनुभव करूँगा।"

बाबा चले गये। पश्चिम दिनाजपुर में उनका पड़ाव राधिकापुर की ओर था। सुना पाक-भारत-सीमान्त से उस स्थान की दूरी मात्र डेढ़ मील है। हम लोगों ने यहीं खड़े-खड़े देखा कि राधिकापुर के रेलवे स्टेशन को पार कर वे मैदान से होकर जा रहे हैं—उनके पीछे-पीछे एक भारी भीड़ चल रही है। इसी बीच राधिकापुर स्टेशन से एक ट्रेन आयी और पाकिस्तान की सीमा में घुसकर, हम लोग जहाँ खड़े थे, वहाँ रुकी। पहले से ही यह व्यवस्था की गयी थी कि यह ट्रेन पाक-

सीमान्त पर रुकेगी और वहाँ से हमें लेकर बिरल स्टेशन पर आयेगी। अखबारों के समाचारदाता सरकारी कर्मचारी और हमारा पदयात्री-दल, कुछ कोई सौ व्यक्ति वहाँ प्रतीक्षा कर रहे थे—एस. डी. ओ. साहब भी थे। *विसमाई स्वागत के लिए आगे बढ़ आये थे।* वे ट्रेन न पकड़ सके और बाद में पैदल चलकर बिरल पहुँचे। ट्रेन आते ही हम लोग उसमें सवार हो गये और बिरल आये। वहाँ एक मारवाड़ी बन्धु के घर जलपान करके अगली ट्रेन से हम दिनाजपुर आये। इन मारवाड़ी बन्धुओं ने ही पिछले दिन बिरल के पड़ाव पर आहार आदि की व्यवस्था का भार ग्रहण किया था।

तय हुआ कि हम लोग दिनाजपुर स्टेशन पर ही प्रतीक्षा करके अगली ट्रेन से रवाना होंगे और पदयात्री-दल के सब व्यक्ति विभाजित होकर अपने-अपने कर्मक्षेत्र की ओर चले जायेंगे। पूर्णेन्दुबाबू सुहासिनीदी, भागवतबाबू योगेशभाई और अजित कुमिल्ला की ओर तथा मन्मथदा साधु वीरेन और मन्टू नोआखाली की ओर चले गये। केवल हम पाँच जन—*विश्वरंजन, रंजन, करुणा, कल्पना और मैं—पूर्व-निश्चय* के अनुसार रंगपुर जाकर दो दिन ठहरेंगे यह तय हुआ। निरुपमादी के दोनों सज्जन और आश्रम परिवार के साथी अपनी दिशा में गये। नार्थ बंगाल मेल आते ही हम सब उसमें बैठ गये—देखा कि एस. डी. ओ. साहब हमें विदा करने के लिए पुनः आये हैं। उनकी भावुकता का प्रमाण यह बिरल से दिनाजपुर आते समय ही हमने उनसे विदा माँग ली थी। फिर भी उन्होंने कहा था कि दिनाजपुर से ट्रेन छूटने से पहले मैं पुनः आने का प्रयत्न करूँगा। हमारे मना करने पर भी वे पुनः आये। उनकी मुग्धता की कोई सीमा नहीं है—अभी युवा हैं और इतनी नम्रता व सौजन्य से सदा प्रसन्नमुख रहे तथा लोगों को अपनी ओर आकर्षित किया।

बाबा ने इस यात्रा के अन्तिम दिन (२१.९.५५) की डायरी मुझे माँग भेज दी थी। उनकी डायरी में कुछ अंश आवश्यकता

सुन्दर संबोधन-सहित यहाँ प्रस्तुत करके मैं इस प्रेम-यात्रा की समाप्ति-रेखा खींच रहा हूँ :

बिदाई का दृश्य

"सूरज की रोशनी फैल रही थी और हमारे मस्तक पर के गीले कपड़े सूख रहे थे। सरला बहन मेरे कान में फुसफुसा रही थी : 'दीदी, अब सिर्फ बीस मिनट रहे। भारत की सीमा दक्षिण में आ गयी थी। बाप्पा मुझसे कहने लगी : 'यह रहा तुम्हारा भारत। यहाँ तुम्हें भारत का बाप्पा (चारुचन्द्र भण्डारी) मिलेगा। मैं उन पर बहुत नाराज हो गयी, बोली : आपका कहना ठीक नहीं चलेगा। हम भारत और पाकिस्तान ऐसा फरक नहीं करते। बाबा ने क्या कहा—सब पृथ्वी हमारी है और हम पृथ्वी के सेवक हैं। अब आपकी सेवा-भूमि पाकिस्तान और हमारी भारत है यह बात अलग है। बाप्पा हँसकर कहने लगे : 'गुस्सा मत करो। ये सामने के बाबू देखो कैसे हँस रहे हैं।

"सीमा पर दो कमान दिख रही थीं। एक पर लहरा था, खोंचे की तरह देनेवाला हरा झंडा और दूसरी पर तिरंगा अपनी विशेषता से चमक रहा था। दोनों हँस रहे थे। एक शान्त था गम्भीर था, क्योंकि अहिंसा के मार्ग की गम्भीर वाणी वह अभी-अभी सुन चुका था और बिदाई दे रहा था। दूसरा हँसमुख था उत्साही था क्योंकि अहिंसा के मार्ग का वह स्वागत कर रहा था। इन दो झंडों की छाया के बीच था एक छोटा-सा मंच। बाबा उस मंच पर चढ़े और दोनों राष्ट्रों की जनता एक-दूसरे से मिल गयी।

"भाषण समाप्त करके बाबा मंच के नीचे उतरने लगे तो चारुदाई (बिहार) बोले : 'ज़रा ठहरिये। देखिये सब एक-दूसरे से कैसे मिल रहे हैं। मंच पर खड़े खड़े हम देख रहे थे। वह एक अद्भुत दृश्य था—सिनेमा का नहीं भारत का नहीं नक्शा। बायीं ओर खड़े थे पूरब बंगाल के भाइयों और दाहिनी ओर थे पश्चिम बंगाल के

धीरेनदा। एक समय के बापू के अनुयायी आज चौदह साल के बाद पहली बार मिल रहे थे। दोनों ने एक-दूसरे को पुकारा—'चारुदा' 'धीरेनदा', और दोनों प्रेमालिंगन में आबद्ध हो गये। पश्चिम बंगाल के मुख्य मन्त्री पूर्व बंगाल के प्रमुख कार्यकर्ता पूर्णेन्दुदा से ऐसे ही मिले। वे भी चौदह साल के बाद आज पहली बार मिल रहे थे। पश्चिम बंगाल के सर्वोदय-कार्यकर्ता चरूदा के पिताजी पूर्व बंगाल में बाबदा के साथ काम कर रहे हैं। इन पिता पुत्र की भी मुलाकात इस अद्‌भुत स्थान पर हुई। एक प्रान्त की यह परिस्थिति, तो बर्लिन शहर के क्या हाल हुए होंगे? गत ५ सितम्बर को सीमा पर जो बाँध थे, वे २१ सितम्बर को लापता हो गये थे।

'पश्चिम बंगाल के मुख्य मन्त्री श्री प्रफुल्लचन्द्र सेन ने कलकत्ता की समस्याएँ हल करने के लिए बाबा को कलकत्ता आने का न्योता दिया।

"बाबा ने उस स्थान से चलने से पहले पाकिस्तानी जनता के भाव भरे चेहरों की ओर कुछ देर सस्मित देखा फिर सिर झुकाकर प्रणाम किया और तब वे मन्द-मन्द पग से राधिकापुर की ओर चलने लगे।"

भूदान, सम्पत्तिदान और साहित्य-बिक्री

भूदान

विनोबाजी ने पूर्व पाकिस्तान में प्रतीक-स्वरूप भूदान-ग्रहण किया। जितनी भूमि का दान और वितरण हुआ, उसका यथाशक्य सम्पूर्ण विवरण यहाँ दिया जा रहा है :

विनोबाजी का पड़ाव और तारीख	दाता का नाम और निवास-स्थान	भूमि का परिमाण	प्राप्तकर्ता का नाम और निवास-स्थान
भुरंगामारी ५.१.'६२	१ अब्दुल खालिक मुंशी, कमलंगरिया	१ बीघा	१ मु० मनो शेख, भरभुरंगामारी
रायगंज ६.१.'६२	१ मु० महबूदीन मण्डल, चेयरमैन, रामसाना यूनियन कौंसिल	५ बीघा	२ मु० श्रीफल शेख, अस्करनगर
	३ श्री भैरव व्यापारी, रामसाना	१ बीघा	१ श्री पद्मनाथ बर्मन रामसाना
	४ श्री अनन्तमोहन सेन, रायगंज	१ बीघा	४ मु० नजु फकीर दोरकार, रंगामीर बस
	५ श्री सदानन्द मोदन्त, रायगंज	१ बीघा	५ श्री ज्ञानचन्द मोदन्त, रायगंज

विनोबाजी का पड़ाव और तारीख	दाता का नाम और निवास-स्थान	भूमि का परिमाण	प्राप्तकर्ता का नाम और निवास-स्थान
	२ श्री नरेन्द्र राय चौधरी हातिबामरेत	१ बीघा	२१ मु छगारी शेख हातिबामरेत
		आधा बीघा	२२ मु भंजन अली फकीर, हातिबामरेत
	१ मु फकीरुद्दीन अहमद कुरीग्राम	१ बीघा	२३ मु मुबारक अली, भेरावाड़ी
	१४ श्री शिवसागर तिवारी, कुरीग्राम	८॥ बीघा	२४ मु पानाम्बी शेख, कुरीग्राम
			२५ मु पंकसद मियाँ परमेश्वरपुर
रंग १०- '५२	१५ श्री कुसुमचन्द्र राय काजी गाबतारा	२ बीघा	२६ श्री नरेन्द्रचन्द्र राय बर्मन गाबापाड़ा
	१६. श्री रायचन्द्र बर्मन हाजरा	५ बीघा	२७. श्री मुनीन्द्रनाथ राय बर्मन हाजरा
शिला ११ '५२	१७ श्री पूनमचन्द मुखेरिया, हाजरा	१० बीघा	२८ मु जमीमुद्दीन ठिकमुआर

विनोबाजी का पड़ाव और तारीख	दाता का नाम और निवास-स्थान	भूमि का परिमाण	प्राप्तकर्ता का नाम और निवास-स्थान
रंगपुर ११ १	२१ मु मसीहुर रहमान नगापचीस्थारी	१ बीघा	१७. मु० कैसर मुहम्मद १८ मु बैय मुहम्मद, नगापचीस्थारी
पाथरापार १४ १ ६२	२४ श्री कमलाकान्त राय गोकुलपुर	पौन बीघा	१६. श्री गंगाराम मोहन्त गोकुलपुर
	२५. श्री सुरेन्द्रनाथ राय गोकुलपुर	पौन बीघा	४ श्री नित्यानन्द बैरागी गोकुलपुर
	१ मु मकबुल रहमान चौधरी, बेलमारी	पौन बीघा	४१ मु पेपू मुहम्मद, बेलमारी
	२७ श्री नगेश्वर मोहन्त, भवानीपुर	पौन बीघा	४२. श्री महीमचन्द्र बर्मन, भवानीपुर
	२८ मु मफ़ुल रहमान, रसेया	१ बीघा	—
आयबेड़ १५ १ ६२	२९. श्री मोहननाथ राय कुरमा	पौन बीघा	४३ श्री परमानु बर्मन, कुरमा
	१ श्री भैरवलाल पटेल, रंगपुर	पौन बीघा	४४ हिदायतुल्ला फकीर, मुबारक हाजीपुर

१७ दाताओं ने १७५।।। बीघा जमीन का दान किया और वह जमीन जिन ९९ व्यक्तियों में बाँटी गयी उनमें से ४८ के नाम ऊपर दिये गये हैं—बाकी नाम दानपत्र के साथ नहीं मिले, इसलिए उन्हें यहाँ नहीं दिया जा सका।

सम्पत्तिदान

कुड़ीग्राम ११'६२	श्री यतीन्द्रचन्द्र मण्डल, चनापूर-निकेता कुड़ीग्राम	मासिक ५ रुपये के हिसाब से

साहित्य-बिक्री

'गीता-प्रवचन', 'विनोबाजी की बानी—धम्मपद, आसाम और पदयात्रा में', 'गांधीजी की आत्म-कथा' एवं अन्य सर्वोदय तथा भूदान-साहित्य लगभग तीन हजार रुपये का बिका। भीड़-भाड़ और अत्यधिक व्यस्तता के कारण ठीक-ठीक हिसाब रखना सम्भव न हो सका।